



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

प्रवृत्ति को छोड़ना
कठिन है, परंतु प्रवृत्ति में होने
वाली आसक्ति को छोड़ा जा
सकता है। फिर प्रवृत्ति तुम्हारी
आत्मा को मलिन बनाने वाली
नहीं बनेगी।
- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली

वर्ष 25 • अंक 51 • 23 सितम्बर-29 सितम्बर, 2024



प्रत्येक सोमवार

प्रकाशन तिथि : 21-09-2024 • पेज 20

₹ 10 रुपये

इन्द्र की तरह शोभायमान होते हैं आचार्य : आचार्यश्री महाश्रमण महामना भिक्षु के 222वें चरमोत्सव पर पूज्य प्रवर ने किया आचार्य भिक्षु की विशेषताओं का बखान

सूत्र।

16 सितम्बर, 2024

भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी, तेरापंथ धर्मसंघ के आद्यप्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु का 222वां चरमोत्सव दिवस। वर्तमान भिक्षु आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि जैन शासन में तीर्थंकर का अध्यात्म प्रवर्तन के संदर्भ में उत्कृष्ट स्थान होता है।

नमस्कार महामंत्र के पांच पदों में पहले पद पर अर्हत विराजमान होते हैं। वे चार घाती कर्मों का क्षय कर चुके होते हैं। सिद्ध आठों कर्मों का क्षय कर चुके होते हैं, फिर भी पांच पदों में पहले अर्हतों को नमस्कार किया गया है।

सिद्ध अशरीरी होते हैं पर अर्हत, आचार्य, उपाध्याय और साधु सशरीर होते हैं, मनुष्य रूप में होते हैं। चारों ही अमुक्त होते हैं, सकर्मा होते हैं। इस तरह सिद्ध और चार पदों में भिन्नता होती है। अर्हत भी मनुष्य हैं, हम भी मनुष्य हैं, पर मनुष्य-मनुष्य में अन्तर होता है। तीसरे पद में आचार्य को नमस्कार किया गया है। आज भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी - एक आचार्य का चरम दिवस है। तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य आचार्य श्री भिक्षु का आज से 221 वर्ष पूर्व सिरियारी में महाप्रयाण हुआ था। जैसे प्रभात काल में सूर्य भरत क्षेत्र को प्रकाशित



करता है, उसी प्रकार आचार्य भी प्रकाश देने वाले हो सकते हैं। वे उसी प्रकार शोभायमान होते हैं, जैसे देवों के मध्य में इन्द्र शोभायमान होता है। आचार्य भी चतुर्विध धर्मसंघ में विराजमान होते हैं। आचार्य संघ के सर्वोच्च होते हैं। तीर्थंकर के बाद

दूसरा स्थान आचार्य का होता है। आचार्य तीर्थंकर के प्रतिनिधि कहलाते हैं। जैन शासन में आचार्य का अपना एक स्थान भी है। तेरापंथ धर्मसंघ में तो सर्वोच्च स्थान आचार्य का होता है। इस कारण आचार्य इन्द्र की तरह शोभायमान होते हैं। आचार्य

वन्दन-वन्दन-अभिवन्दन

गुरुवर भीखण-जीवन से सद्गुण शिक्षण ग्रहण करें।
श्रद्धा साहस वाक्पाटव साम्ययोग का वरण करें।।

मर्यादा-अनुशासन का गण को वर अवदान दिया।
तात्त्विक बोध प्रबोधन से आत्मोदय-उत्थान किया।।

स्वामीजी का चरमोत्सव, भाद्रव शुक्ला तेरस दिन।
तप जप गुण-कीर्तन द्वारा विमल बनाएं तन वच मन।।

सिरियारी में अनशन कर कालधर्म सम्प्राप्त हुए।
विभुवर के उपदेशों से कितने सत्यथ प्राप्त हुए।।

'महाश्रमण' सूत्र पावस धर्माधन टाट लगा।
श्रावक समुदय में मानों आध्यात्मिक उत्साह जगा।।

लय - कुंवर सुभानु सुजायो

ज्ञान हो, परम्परा का ज्ञान हो, और भी परिपाश्वर्य में ज्ञान हो तो बढ़िया बात होती है। अध्ययनशीलता, स्वाध्यायशीलता यथासंभव हो। ज्ञान का पुनरावर्तन होता रहता है तो ज्ञान में नवीनता भी आ सकती है। व्याख्यान देना भी स्वाध्याय होता है।

आचार्य भिक्षु के पास श्रुत संपदा भी थी, आगमिक ज्ञान उनका अच्छा था। वे स्वयं ज्ञानी पुरुष थे, शिष्यों को पढ़ाने का भी काम करते थे, लोगों को भी समझाते थे। (शेष पेज 17 पर)

विसर्जन का प्रतीक है विकास महोत्सव : आचार्यश्री महाश्रमण

दो मुमुक्षुओं ने ग्रहण की दीक्षा, तो तीन ने किया संस्था प्रवेश

सूत्र।

12 सितम्बर, 2024

भाद्रव शुक्ला नवमी। आज ही के दिन पूज्य गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी पूज्य कालूगणी के अनन्तर पट्टासीन हुए थे, पट्टासीन हुए थे। इस दिन को हमारे धर्म संघ के दशम गुरु आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने विकास महोत्सव के रूप में मनाने का निर्णय किया था। 31वें विकास महोत्सव के अवसर पर परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में होने जैन भागवती दीक्षा होने जा रही है।

वीतराग कल्प विकास पुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 31वें विकास महोत्सव के अवसर पर पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि सन्यास का मानो एक उद्घोष है कि

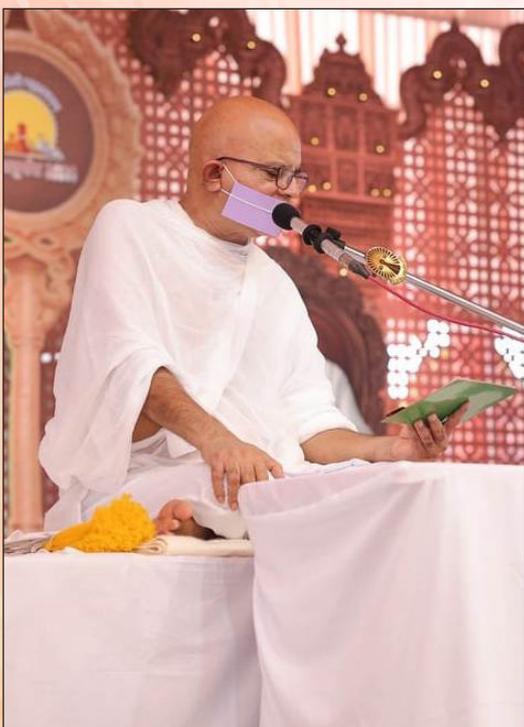
मैंने अतीत में जो प्रमाद किया है, वह मैं अब नहीं करूंगा। आज साधु दीक्षा का प्रसंग है। आज्ञा पत्र प्राप्त हो चुके हैं फिर भी मैं मौखिक आज्ञा और लेना चाहता हूं। पूज्यप्रवर ने पारिवारिक जनों की आज्ञा ली, दीक्षार्थी बहनों की भी स्वीकृति ली।

श्रमण भगवान महावीर, आचार्य श्री भिक्षु एवं उत्तरवर्ती आचार्य परम्परा, गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को स्मरण कर नमस्कार महामंत्र के मंगल समुच्चारण के साथ पूज्य प्रवर ने दीक्षार्थी ऋजुल मेहता एवं दीक्षार्थी दीप्ति वेदमुथा को तीन करण तीन योग से यावज्जीवन के लिए सर्व सावद्य योग का त्याग करवाया और पावन आर्षवाणी से अतीत की आलोचना करवायी।

पूज्य प्रवर के निर्देशानुसार साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने दोनों नवदीक्षित साध्वियों का

केशलोच संस्कार किया। पूज्य प्रवर ने रजोहरण प्रदान कराने से पहले आर्षवाणी का उच्चारण कर ज्ञान, दर्शन, चरित्र, क्षांति, मुक्ति में वर्धमान रहने का आशीष दिलाया। साध्वीप्रमुखाश्री ने दोनों साध्वियों को रजोहरण प्रदान किया। नामकरण संस्कार के साथ दीक्षार्थी ऋजुल मेहता को साध्वी धन्यप्रभा एवं दीक्षार्थी दीप्ति वेदमुथा को साध्वी देवार्थप्रभा का नूतन नाम प्रदान किया गया। विकास पुरुष ने फरमाया कि भाद्रव शुक्ला नवमी का दिन।

यह दिन वर्षों तक आचार्यश्री तुलसी के पाट महोत्सव दिवस रूप में मनाया जाता रहा है। सुजानगढ़ में 1994 में गणाधिपति ने महाप्रज्ञजी को आचार्य पद पर पदासीन कराया था। दिल्ली चतुर्मास में घोषणा करवायी कि अब मेरा पट्टोत्सव नहीं मनाया जाए। (शेष पेज 2 पर)





कुशलता के लिए प्रमाद से बचने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

15 सितम्बर, 2024

सत्य सागर में अवगाह कराने वाले आचार्य श्री महाश्रमणजी ने आगमवाणी का रसास्वाद कराते हुए फरमाया कि आचार्य आगम में कहा गया है- जो कुशल होता है, उसका प्रमाद से क्या मतलब? कुशल आदमी को प्रमाद नहीं करना चाहिए। बारहवें गुणस्थान के साधु में प्रमाद नहीं होता।

वीतराग के दो प्रकार हैं- छद्मस्थ और केवली वीतराग। तेरहवें गुणस्थान में सयोगी प्रवृत्ति है। केवली के भी द्रव्य रूप में मन होता है। अनुत्तर विमान के देव के कोई प्रश्न होता है, उसका उत्तर वीतराग दे देते हैं पर वे देव वहीं बैठे अवधिज्ञान से उत्तर जान लेते हैं। ग्यारहवें, बारहवें गुणस्थान के वीतराग छद्मस्थ वीतराग होते हैं। चौबीसी के गीत में कहा गया है-

**सुर अनुत्तर विमान ना सेवै रे,
प्रश्न पूछ्या उत्तर जिन देवै रे।
अवधिज्ञान करी जाण लेवै, प्रभु
नमिनाथ जी मुझ प्यारा रे।।**

चौबीसी में स्तुति के साथ तत्व ज्ञान की बातें भी जयाचार्य ने निहित की है। ग्यारहवें गुणस्थान वाला उपशान्त वीतराग थोड़े समय के लिए बनता है। वह अस्थायी वीतराग है। ग्यारहवां गुणस्थान बन्द गली में घुसे व्यक्ति के समान है, जो वापस मुड़ेगा। क्षपक श्रेणी वाला वीतराग 8वें से 9वें, फिर दसवें फिर सीधा बारहवें से जायेगा। कषाय का क्षय करता हुआ आगे बढ़ेगा। नीचे



गिरेगा नहीं। तेरहवें फिर चौदहवें में जाकर मोक्ष को प्राप्त करेगा। कुशल वीतराग या वीतराग में प्रवृत्त व्यक्ति होता है। उनको उपदेश देने की अपेक्षा नहीं है। जो वीतरागता की साधना में लगे हुए है, उन्हें उपदेश देने की अपेक्षा है कि वे प्रमाद न करें। साधु का समय प्रमाद में न बीते। चार विकथाओं से व महाविगय से बचें। गलत चीज की गिरफ्त में जाएं ही नहीं, सावधान रहें। साधु-साध्वी, समणी या श्रावक-श्राविका सभी वीतरागता की साधना करने वाले होते हैं।

गलत चीज का नशा न हो। उससे छुटकारा पाने का प्रयास करें। चार कषायों में प्रवृत्त रहना भी प्रमाद है। हमारे कषाय प्रतनू बनें। किसी को धोखा देने का प्रयास न करें। बुद्धिमता होने पर उसका उपयोग अच्छे कार्य में होना चाहिये। बुद्धि एक उपलब्धि है। वह बुद्धि सराहने

लायक है जो जिन धर्म का सेवन कराती है। कार्य में कुशलता रहे, व्यवस्था पक्ष में भी कुशलता रहे तो कम समय में कार्य अच्छी तरह सम्पन्न हो सकता है।

भाषण के दो तरीके होते हैं- बाह्य और आन्तरिक। बाह्य यानि कैसे खड़ा है, भाषा कैसी है। आभ्यन्तर हिस्सा है ज्ञान। दोनों तरीके ठीक हैं तो भाषण में कुशलता रहती है। भाषण देने से पहले विषय का चयन करें फिर उस पर कुछ तैयारी हो। हर चीज में कुशलता हो। लेखन में भी उपयुक्त सामग्री हो। सेवा में भी कुशलता हो। लेने वाले और देने वाले दोनों में कुशलता हो। कार्य में जितना कौशल्य होता है, तो कार्य सुसम्पन्न हो सकता है। अपने धर्म व व्रतों में भी कुशलता हो। सामायिक में भी पूरी सावधानी रहे। स्वयं अपना सुधार करें, दूसरों से भी सुधार का ज्ञान लिया जा सकता है।

दूसरों को देखकर गुणों को ग्रहण किया जा सकता है। संस्थाओं की कार्य पद्धति में भी कुशलता रहे। अशुद्ध अर्थ न आये। सब में नैतिकता का भाव रहे। संस्थाओं में मैन पावर, मनीपावर, मैनेजमेंट पावर और मोरेलिटी पावर भी रहे। हमें कुशल रहना है तो प्रमाद से बचने की अपेक्षा रह सकती है। कार्य का भार भले ज्यादा हो पर दिमाग में ज्यादा भार न हो। शांति से काम करें, आवश्यक को प्राथमिकता दें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने TPF सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि अधिवेशन का उद्देश्य होता है कि वे अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में चिन्तन करें। TPF में शिक्षित लोग हैं और उनमें श्रद्धा भी है। श्रद्धा और तर्क की युक्ति व्यक्ति को विकास की ओर अग्रसर करती है। TPF आचार्यश्री

महाप्रज्ञजी के दिमाग की उपज है। यह संस्था निरन्तर विकास कर रही है। धर्मसंघ के अनेक धार्मिक-आध्यात्मिक व सामाजिक कार्य कर रही है। महाप्रज्ञ नोलेज सेन्टर की योजना से समाज के लड़कों को लाभ मिल सकता है। हमें भीतरी जगत में प्रवेश कर भीतरी शक्तियों का जागरण करना है।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि चतुर्विंशति स्तव की अंतिम गाथा विशिष्ट गाथा है। इस गाथा में तीन बातें, सिद्ध स्वरूप की, प्रकृति से भगवान की तुलना और भगवान से सिद्धि की प्रार्थना की गई है। सूर्य से भी अधिक प्रकाश करने वाले, चन्द्रमाओं से निर्मलतम और सागर से भी गंभीर तीर्थंकर भगवान होते हैं। व्यक्तित्व निर्माण की भी ये तीन बातें महत्वपूर्ण हैं। हमें नकारात्मक भावों को दूर कर निर्मलता को बढ़ाना है।

भगवान महावीर मेमोरियल समिति के अध्यक्ष के एल जैन आदि ने पूज्यवर को समग्र जैन समाज चतुर्मास सूची पुस्तक समर्पित की। बाबूलाल जैन ने इस पुस्तक के सन्दर्भ में जानकारी दी। विजयकृष्ण नाहर ने दो पुस्तकें 'आचार्य संत भीखणजी पाली में' तथा 'आचार्य भीखण के मार्ग के आधार पुरुष हेमराजजी' पूज्यवर को समर्पित की। पूज्य प्रवर की मंगल सन्निधि में TPF के नव निर्वाचित अध्यक्ष हिम्मत् मांडोट एवं नवीन टीम के शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन हुआ। पूज्यवर ने नई टीम को आशीर्वचन प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

विसर्जन का प्रतीक है...

आचार्यश्री तुलसी के पट्टोत्सव के दिन को आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने इस दिन को विकास महोत्सव के रूप में स्थापित किया। विकास महोत्सव विसर्जन का प्रतीक है, अनुशासन में विकास होता रहे। आचार्यों के आचार्यकाल का एक दशक पूर्ण हुआ। एकादशम् शासनकाल गतिमान है। जीवन में विकास अनिवार्य है। पुराने-नये में विवेक अपेक्षित है। पुरानी बात अच्छी है। उसके साथ नये विरास को भी जोड़ें। विकास में परिष्कार की अपेक्षा है। पूज्य प्रवर ने आगे फरमाया कि विकास महोत्सव संघ विकास के लिए आधार रहेगा।

आज तेरापंथ विकास परिषद् के सदस्य उपस्थित हैं। ये अनुभवी हैं, समाज को धार्मिक-आध्यात्मिक निर्देश देते रहें। विकास महोत्सव के अवसर पर पूज्य प्रवर ने तीन बाईयों को मुमुक्षु श्रेणी में प्रवेश की आज्ञा प्रदान की। विकास महोत्सव पर सुमधुर गीत 'धर्म प्रभावित जिन्दगी हो' का सुमधुर संगान

करवाया। इस अवसर पर आचार्य प्रवर ने साधु-साध्वियों एवं समणियों को चातुर्मास के पश्चात विहार के निर्देश भी प्रदान किए।

साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक विकासशील धर्म संघ है। निरन्तर प्रगति के पथ पर आरोहण कर रहा है।

आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ के विकास का बीजारोपण किया था। जयाचार्य विकास पुरोधा थे। गुरुदेव तुलसी विकास के श्लाका पुरुष थे। उन्होंने नैतिक मूल्यों को प्रतिष्ठित करने के लिए अणुव्रत आन्दोलन शुरू किया था। तनावग्रस्त मानव को तनाव से मुक्त करने के लिए प्रेक्षा ध्यान दिया। जीवन का रुपान्तरण कर रहे शिक्षा जगत की समस्याओं को समाहित करने के लिए जीवन विज्ञान का उपक्रम दिया। तेरापंथ धर्मसंघ में विकास का माध्यम है दीक्षा। तेजस्वी साधु-साध्वियों हमारे धर्मसंघ में दीक्षित हुए हैं।

साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने कहा कि आचार्य श्री

तुलसी परानुकंपी थे। उन्हें सृजनशीलता में विश्वास था। सृजनता की श्रृंखला में अनेक अवदान धर्मसंघ को दिये। वे सर्वांगीण विकास के मंत्र दाता थे। उनका जीवन जैन शासन के विकास के लिए समर्पित था। उन्होंने तेरापंथ समाज का भी बहुत कल्याण किया। आचार्य श्री महाश्रमण जी भी विकास के लिए यात्राएं करवा रहे हैं, क्षेत्रों की संभाल कर रहे हैं।

साध्वी वृंद ने 'है विकास का उत्सव गण को महाप्रज्ञ उपहार' का सुमधुर सामूहिक संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल सूरत ने विकास महोत्सव के उपलक्ष में गीत का संगान किया। विकास परिषद् के संयोजक अजातशत्रु मांगीलाल सेठिया ने विकास महोत्सव के इतिहास एवं अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि विकास का मुख्य आधार सक्षम आचार्यों का नेतृत्व है। हमारे धर्म की अनेक संस्थाएं धर्मसंघ के विकास व श्रीवृद्धि करने में निरन्तर गतिशील हैं। विकास परिषद् के सदस्य पदमचंद पटावरी ने कहा कि विकास यात्रा को तेजस्वी बनाने में पूज्य प्रवर का योगदान रहा है।

आपने जो किया, वो कीर्तिमान हो गया। तेरापंथ के विकास में श्रावक समाज के योगदान का उल्लेख करते हुए उन्होंने आचार्य प्रवर से निवेदन किया कि आषाढ शुक्ला त्रयोदशी को श्रावक समाज के शौर्य का दिन घोषित कराने की कृपा करावें। बनेचन्द मालू ने कहा कि विकास में हमें सर्वांगीण दृष्टिकोण रखना होगा, साहित्य पठन से हमारा दृष्टिकोण खुलेगा। देश में बढ़ रहे जल संकट, पर्यावरण संकट के समाधान हेतु भी हमें चिंतन करना होगा।

दीक्षा समारोह से पूर्व मुमुक्षु अंजली सिंघवी ने दीक्षार्थी बहनों का परिचय दिया। पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अध्यक्ष बजरंग जैन ने आज्ञा-पत्र का वाचन किया। दीक्षार्थी ऋजुल मेहता व दीप्ति वेदमुथा ने अपनी भावना श्री चरणों में अभिव्यक्त की। बाव के राणा गजेन्द्र सिंह ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। संघगान के साथ विकास महोत्सव का आयोजन संपन्न हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन कराते मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।



अणुव्रत प्रकाश स्तम्भ की तरह मानव मात्र की सुरक्षा करता है

नई दिल्ली।

डा. दुर्गाबाई देशमुख मेमोरियल सीनियर सेकेण्डरी स्कूल के सैकंडो बच्चों के बीच साध्वी डॉ. कुन्दन रेखा जी के सान्निध्य में व्यक्तित्व एवं राष्ट्रीय निर्माण में अणुव्रत की भूमिका विषय पर एक वृहद् संगोष्ठी व्याख्यानमाला अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली द्वारा अणुव्रत भवन में आयोजित की गई। समिति के कोषाध्यक्ष विनोद चोरडिया, संगठन मंत्री राजीव महनोत, मनीष महनोत, मंजू बाँठिया ने अणुव्रत गीत का संगान करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन के साथ पूरे सदन से उच्चारित भी

करवाया। दिल्ली समिति अध्यक्ष मनोज बरमेचा ने सबका स्वागत किया। रमेश कांडपाल द्वारा कराये गये जीवन विज्ञान के प्रयोग प्रभावकारी रहे। साध्वी डॉ. कुन्दन रेखा जी ने कहा अणुव्रत एक ऐसा प्रकाश है, जो जन्म जन्मान्तर से जमे अंधकार को दूर करता है।

अणुव्रत जाति, लिंग, भेद, रंग से उपरत रहकर मानव को मानव बनाता है। छोटे-छोटे नियमों से सजा ये आन्दोलन मानवीय मूल्यों को स्थायित्व देता है।

वर्तमान युग हिंसा, आंतक, भ्रष्टाचार का युग है। ऐसे माहौल में प्रकाश स्तम्भ की तरह अणुव्रत मानव मात्र की सुरक्षा करता है। फिसलन भरे रास्तों को सही कर चलना सिखाता है। अणुव्रत अनुशास्ता गुरुदेव तुलसी का

ये अवदान दुनिया के हर इंसान के लिए वरदान बन रहा है। आचार्य महाश्रमण के पावन निर्देशन से अणुव्रत समितियाँ इस मिशन को आगे बढ़ा रही हैं। एसीसी कांटेस्ट की सम्पूर्ण जानकारी केन्द्रीय संयोजक चन्द्र कांत कोठारी ने शिक्षकगण एवं विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत की।

'शासनश्री' साध्वी रतनश्री जी की आत्मा की आध्यात्मिक मंगल कामना हेतु बच्चों सहित 2 मिनट का ध्यान कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर साध्वी कल्याणयशा जी ने स्वरचित गीत का संगान किया।

मंच संचालन समिति के मंत्री राजेश बैंगानी ने किया। शिक्षिका अनिका ने 'चैत्य पुरुष जग जाये' गीत का मधुर संगान किया।

'कर लो दर्शन, भजन भिक्षु के' प्रतियोगिता का आयोजन

गुवाहाटी।

मुनि प्रशांतकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में 'कर लो दर्शन भिक्षु के, कर लो भजन भिक्षु के' प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा- स्वाध्याय करते रहना चाहिए। स्वाध्याय ज्ञान विकास का बहुत बड़ा माध्यम है, इससे इतिहास की जानकारी बढ़ती है। तेरापंथ का इतिहास बहुत सुंदर एवं रोचक पुस्तक है।

आचार्यों एवं श्रावकों का जीवन दर्शन बहुत प्रेरणा देता है। कार्यक्रम हमारे विकास का माध्यम बनता है। व्यक्ति के जीवन में ज्ञान को विकसित करने के लिए ज्ञान प्राप्ति का लक्ष्य होना जरूरी है। श्रावक समाज में ज्ञान का मनोभाव विकसित होता रहे। चातुर्मास

स्वाध्याय ज्ञान विकास का बहुत बड़ा माध्यम है, इससे इतिहास की जानकारी बढ़ती है।

में कार्यक्रम, प्रतियोगिता होती रहती है। कार्यक्रम के संयोजक महक दुगड़ ने बताया- मुनि कुमुदकुमार जी एवं संयम छाजेड़ ने कार्यक्रम को संचालित करते हुए दो राउंड में कार्यक्रम को पूर्ण किया। जैन इतिहास, तेरापंथ इतिहास, तत्त्वज्ञान, सामान्य ज्ञान के प्रश्न परिषद् से रोचक तरीके से पूछे गए। तेरापंथ युवक परिषद् के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। तैयुप मंत्री पंकज सेठिया ने कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत की। संगठन मंत्री अंकुश महनोत ने आभार व्यक्त किया। समय पालक की भूमिका अनन्त छाजेड़ ने पूर्ण की।

अनशन के पथ पर आगे बढ़ना सच्ची वीरता का परिचय है

रायपुर।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि सुधाकर जी ने 86 वर्षीय शांति देवी बैद को संधारा प्रत्याखान करवाया। विशाल जनमेदनी के मध्य परिवारजनों की अनुमति व संघीय संस्थाओं के उपस्थित पदाधिकारियों

की साक्षी से मुनि सुधाकर जी द्वारा गमोत्थुण एवं मंत्रोच्चार के साथ शांति देवी बैद को पचखान कराया गया। मुनिश्री ने कहा अनशन व्रत के पथ पर आगे बढ़ना सचमुच सच्ची वीरता का परिचय है।

एक आत्मयोद्धा ही इस पथ पर आगे बढ़ सकता है। 31 वर्षों से निरंतर

वर्षीतप करना अपने आपमें अमित आत्मबल का परिचय है।

गुरुदेव की अनुकम्पा से वें अपना इच्छित लक्ष्य प्राप्त करें ऐसी कामना करता हूं।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रायपुर अध्यक्ष गौतम गोलछा ने आचार्य प्रवर के संदेश का वाचन किया।

जीवन शैली के विकास क्रम में शिक्षा बहुत बड़ा माध्यम है

चिकमंगलूरु।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, चिकमंगलूरु द्वारा मुनि मोहजीतकुमार जी के सान्निध्य में मेधावी छात्र सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर मुनि श्री ने कहा वर्तमान जीवन शैली के विकास क्रम में शिक्षा बहुत बड़ा माध्यम है।

नवपीढ़ी का रुझान भी इसी के साथ अधिक है। ऐसे में संस्कृति और संस्कारों से स्वयं को जोड़ना जरूरी है। जीवन मूल्यों को सुरक्षित रखने के लिए अध्यात्म के प्रति लगाव जागृत होना चाहिए। मुनि जयेश कुमार जी ने मेधावी छात्रों को संबोधित करते हुए कहा- आज की शिक्षा प्रणाली में मार्क्स का बहुत महत्व है। पर रिजल्ट

के पीछे भागते-भागते आप प्रोसेस का आनंद लेना ना भूलें। क्योंकि जीवन के ये कीमती पल वापस नहीं आते। कार्यक्रम के विषय - Acceptance: A Key to Success पर बात करते हुए मुनि श्री कहा- कोई साथी हमसे पढाई या बिजनेस आदि में आगे निकल जाता है। यदि हम उसकी सफलता को स्वीकार नहीं कर पाते तो वहां हमारे भीतर इर्ष्या का भाव आ जाता है और यदि हम स्वीकार कर लें तो हम भी इंसपायर हो कुछ नया करने का भाव जगाते हैं। मंगलाचरण TPF फेमिना विंग की बहनों द्वारा किया गया।

अध्यक्ष हर्षित डोसी ने स्वागत भाषण में सभी विद्यार्थी, अभिभावकों और पदाधिकारियों का स्वागत किया और TPF के बारे में संक्षिप्त विवरण

दिया। सूरत में आयोजित मेधावी सम्मान समारोह की संक्षिप्त रिपोर्ट TPF सदस्या निकिता सियाल ने पढ़ा। कार्यक्रम में 10वीं एवं 12वीं परीक्षा के मेधावी छात्रों को परिवार के साथ, मेडल, प्रमाण पत्र एवं पुस्तक द्वारा सम्मानित किया गया।

समारोह का संचालन TPF सहमंत्री अभिषेक आच्छा ने किया। कोषाध्यक्ष नमन आच्छा ने सभी का आभार व्यक्त किया। TPF मंत्री निखिल गादिया, उपाध्यक्ष शिल्पा गादिया एवं तमन्ना बडोला का इस कार्यक्रम में विशेष योगदान रहा। तेरापंथ सभा अध्यक्ष, ट्रस्ट अध्यक्ष, महिला मंडल अध्यक्ष, युवक परिषद अध्यक्ष, अणुव्रत समिति अध्यक्षा एवं सभी सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित थे।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के नव मनोनीत अध्यक्ष एवं मुख्य न्यासी का परिचय

हिम्मत मांडोत

बैंगलोर के प्रतिष्ठित व्यवसायी और समाजसेवी हैं, जो स्वर्गीय हीरालालजी मांडोत और सुशीला मांडोत के पुत्र हैं। उन्होंने PGDBA (MBA) की शिक्षा प्राप्त की और जैन विद्या में जैन विज्ञ उपाधि धारक हैं। वे AS-IT-IS Nutrition के Cofounder और Director हैं। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम में उन्होंने ब्रांच सचिव, जोन सचिव, ब्रांच अध्यक्ष, राष्ट्रीय सहमंत्री, राष्ट्रीय महामंत्री और राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में 12 वर्षों तक सेवा दी। जीतो संस्थान में भी वे कार्य समिति सदस्य, जीतो अपैक्स डायरेक्टर और जीतो सेंटर फॉर एक्सीलेंस के प्रोजेक्ट चेयरमैन रहे हैं। उनके भाई अरविंद मांडोत और पवन मांडोत भी प्रमुख सामाजिक सेवाओं में सक्रिय हैं। हिम्मत मांडोत ब्रांडिंग, नेगोशिएशन स्किल्स और ईकॉमर्स पर विशेषज्ञता रखते हैं।



एस. के. सिंधी

कोलकाता निवासी एस. के. सिंधी स्व. धर्म चंद सिंधी एवं स्व. मूली देवी सिंधी के सुपुत्र हैं। एक अनुभवी कानूनी पेशेवर और एस. के. सिंधी एंड पार्टनर्स एलएलपी के संस्थापक और प्रबंध भागीदार हैं। उन्होंने सेंट जेवियर्स कॉलेज से स्नातक, कंपनी सचिव और एलएलबी की डिग्री प्राप्त की। 1994 में एक प्रमुख कॉर्पोरेट हाउस से अपने करियर की शुरुआत की और 2009 में अपनी स्वतंत्र लॉ फर्म स्थापित की। उनके पास 25 से अधिक वर्षों का कानूनी और कॉर्पोरेट अनुभव है और वे प्रमुख कॉर्पोरेट घरानों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के सलाहकार हैं। IPR और अन्य कानूनी क्षेत्रों में उनका गहन अनुभव है और उन्हें कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।





आचार्य भिक्षु के 222वें चरमोत्सव पर विशेष

चांदी जैसा उजला जीवन

● 'शासनश्री' साध्वी मंजुप्रभा ●

चांदी जैसा उजला जीवन, अम्बर सा सुविशाल।
करती हूँ चरणों में वंदन दीपा मां के लाल।।

फौलादी शक्ति सागर का सावन घन उमड़ाया।
मन वीणा के झंकार तारों ने स्वर गान सजाया।
बहा सुधा का स्रोत, कि आगम अनुशीलन से पाया।
नये तराशे हीरे पाकर तेरापंथ निहाल।।

अलबेले योगी ने मरघट में भी ज्योत जलाई।
रूका नहीं वो झुका नहीं, कंटीली राहें आईं।
सिरियारी बगड़ी कंटालिया, दे रहा आज दुहाई।
बोधि स्थल अंधेरी ओरी के सहन किये भूचाल।।

विश्वासों की जली मशालें, अनुपम प्रज्ञा जागी।
बनी दीवानी दुनिया तेरे पंथ से बन अनुरागी।
नये कुशल अन्वेषक पाकर, जन-जन बने सौभाग्यी।
मतभेदों की दूर हटाई जो थी दूर्ग दिवाल।।

नई उमंगें नई दिशाएं, फली कामना सारी।
अमृत वाणी आस्वादन से विकसित जन-जन क्यारी।
पुष्पित फलित बनी है देखो गण नंदन फुलवारी।
महातपस्वी महाश्रमण साथे में चार तीरथ खुशहाल।।

लय - चांदी जैसा रूप

एक नया इतिहास रचाया

● साध्वी सुव्रतयशा ●

क्रांति का जो दीप जलाया, सत्य का सूरज उगाया।
अंधेरी ओरी में तुमने एक नया इतिहास रचाया।।

कांटों का था पंथ तुम्हारा, निकल पड़े थे तुम अकेले,
चरण बढ़े थे जिधर तुम्हारे, पथ में आये नये झमेले।
कष्टों की जब सुनी कहानी, जग भी चरणों में झुक आया।।

घी चौपड़ की बात कहां थी, रहने को आवास नहीं,
चर्चा करने आता जब भी, मुक्कों की मार सही।
तप्त रेत पर करी साधना, जन-जन का मानस चकराया।।

मां दीपा की हूँ आभारी, भिक्षु जैसा रत्न दिया था,
सिरियारी की पुण्य भूमि पर, अंतिम जो विश्राम लिया था।
नन्दन वन सा शासन पाकर मिलती सबको शीतल छाया।।

❖ सरल व्यक्ति के जीवन में धर्म संस्थित होता है।
माया अविश्वास का घर है। जहां सरलता है, वहां
आत्मशुद्धि है, विश्वास भी है।

❖ श्रावक बारहव्रतों को स्वीकार करें तो कुछ अंशों
में संयम जीवन में आ जाएगा।

- आचार्य श्री महाश्रमण

जयाचार्य में उद्यम, बल, बुद्धि, विद्या और पराक्रम एक साथ थे समाविष्ट

पश्चिम, अहमदाबाद। 'तेरापंथ धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य श्रीमद् जयाचार्य का गुणानुवाद करना हिमालय पर बर्फ बेचने के समान है। वे ऐसे प्रज्ञा पुरुष थे जिनमें उद्यम, बल, बुद्धि, विद्या और पराक्रम एक साथ समाविष्ट थे।' उक्त उद्गार साध्वी मधुस्मिता जी ने व्यक्त किये। साध्वीश्री ने आगे बताया कि तेरापंथ के आद्य प्रणेता आचार्य भिक्षु ने भगवान महावीर के सिद्धांतों पर चलते हुए धर्मसंघ की सुदृढ़ नींव रखी।

श्रीमद् जयाचार्य ने आचार्य भिक्षु द्वारा निर्मित संघ सदन को सुव्यवस्थित करने और सही रूप से संघ को सफलतापूर्वक संचालित करने में अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया। वे अत्यन्त दूरदर्शी, अनुशासन प्रिय, स्थिर योगी, मूर्द्धन्य साहित्यकार और विरल विनम्रता के लिए सदियों तक स्मरणीय रहेंगे।

उन्होंने मात्र दस वर्ष की आयु में साहित्य सृजन प्रारंभ कर दिया था और कालान्तर में जैन धर्म के अतिविशिष्ट आगम भगवती के साठ हजार पद्यों का 500 अलग-अलग राग रागिनियों में राजस्थानी भाषा में पद्यानुवाद किया जो अपने आप में बहुत बड़ा कीर्तिमान है। साध्वी सहजयशा जी ने आश्चर्यकारी और प्रेरक घटनाओं के माध्यम से श्रीमद्जयाचार्य के जीवन पर विशद प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के प्रारंभ में महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगल संगान प्रस्तुत किया गया। सभाध्यक्ष सुरेश दक ने जयाचार्य की विभिन्न विशेषताओं का उल्लेख करते हुए उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित किया। वरिष्ठ श्राविका पुष्पा सेठिया ने संक्षेप में अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम संचालन राजेन्द्र बोथरा ने किया।

संक्षिप्त खबर

सप्तम रक्तदान शिविर का आयोजन

सूरत। तेरापंथ युवक परिषद सूरत द्वारा सातवां रक्तदान शिविर, तेयूप लॉन्ज, संयम विहार, वेसु-सूरत में आयोजित किया गया। इस रक्तदान शिविर में अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा और पदाधिकारीगण की विशेष उपस्थिति रही। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अभिनंदन गादिया, मंत्री सौरभ पटावरी और पदाधिकारीगण उपस्थित रहे। किरण हॉस्पिटल ब्लड बैंक की सहभागिता रही। कुल 40 रक्त यूनिट एकत्रित हुए।

जो तत्क्षण पवित्र बना दे वही तप है

ईरोड। मुनि रश्मि कुमारजी के सान्निध्य में तप अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनिश्री तप शब्द का विवेचन करते हुए कहा- त-तत्क्षण, प-यानी पवित्र होने की साधना। जो तत्क्षण पवित्र बना दे वही तप है। तप संयम का मूल है, धर्मरूपी पद्म सरोवर की पाल है, गुण रूपी महारथ की धुरा है। तप का मूल अर्थ है तपन, अर्थात् गर्मी। शरीर के भीतर इतनी गर्मी पैदा करनी है कि उससे एक जैविक अग्नि पैदा हो। कमल बोथरा ने मासखमण तप करके अपने जीवन को धन्य किया है। मुनि प्रियांशु कुमार जी ने अपने विचार रखते हुए कहा तप में यदि कोरा शरीर तपता है तो वह अहंकार की अभिवृद्धि करने वाला बन जाता है, तप के द्वारा व्यक्ति अपने अन्तर्मन की कालिमा को धो कर साफ कर सकता है।

रक्तदान शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता। तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा BNI वॉरियर्स एवं लायंस क्लब ऑफ कोलकाता, पार्क एवेन्यू के सहयोग से ARC फार्मा एंड क्लीनिक, साल्टलेक में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में कुल 32 यूनिट रक्त संग्रहित हुए। शिविर में परिषद के उपाध्यक्ष द्वितीय एवं MBDD के पर्यवेक्षक नीरज बेंगानी एवं MBDD के सहप्रभारी और कर्मठ कार्यसमिति सदस्य योगेश पुगलिया ने अपनी सेवाएं दी।

144वां श्रीमद् जयाचार्य निर्वाण दिवस समारोह

जयपुर।

तेरापंथ युवक परिषद जयपुर द्वारा साधना का प्रज्ञापीठ, रामनिवास बाग जयपुर में श्रीमद् जयाचार्य का 144 वां निर्वाण समारोह मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' के सान्निध्य में आयोजित किया गया। मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि समाज में व्याप्त असमानता और असहिष्णुता की समस्या का समाधान श्रीमद् जयाचार्य जी की शिक्षाओं में निहित है, आवश्यकता है उन्हें व्यवहार में लाने की। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि वासुदेव देवनानी (विधानसभा अध्यक्ष, राजस्थान) ने कहा कि देश और समाज के नव

निर्माण में जैन समाज की महत्वपूर्ण भूमिका है। विशिष्ट अतिथि अजीत माँड़ण (प्रदेश मंत्री, भाजपा) ने कहा कि श्रीमद् जयाचार्य के संदेश बहुत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक हैं। इस अवसर पर उन्होंने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा व उपमुख्यमंत्री दीयाकुमारी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन कर भावांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा जयपुर के अध्यक्ष शांतिलाल गोलछा, तेरापंथ युवक परिषद जयपुर के अध्यक्ष गौतम बरडिया, तेरापंथ महिला मण्डल सी स्कीम की अध्यक्षा प्रज्ञा सुराणा, तेरापंथ महिला मण्डल शहर, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष पवन जैन, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष विमल गोलछा,

कार्यक्रम प्रायोजक ओमप्रकाश जैन, वर्षपर्यन्त रखरखाव व सौन्दर्यकरण में सहयोगी राजेश छाजेड़ इत्यादि जनों ने अपने वक्तव्य और गीत के माध्यम से श्रीमद् जयाचार्य जी के प्रति अभिवन्दना व्यक्त की। अतिथिगण व प्रायोजक परिवारों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर श्रीमद् जयाचार्य के जीवन पर 'कौन बनेगा ज्ञानवान' प्रश्नोत्तरी से श्रावक-श्राविकाओं ने ज्ञानार्जन किया।

कार्यक्रम की संयोजना में संयोजक श्रेयांशु बैगानी, सुरेन्द्र नाहटा, करण नाहटा सहित तेयुप व किशोर मण्डल के सदस्यों का श्रम भी उल्लेखनीय रहा। संचालन सौरभ जैन ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री अभिषेक भंसाली ने किया।

विकास महोत्सव का भव्य आयोजन

सुजानगढ़। तेरापंथ सभा भवन में 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभाजी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। साध्वी श्री ने आचार्यश्री तुलसी के पद विसर्जन के बारे में बताते हुए सुजानगढ़ की धरा को पावन धरा बताया

और कहा कि पद का विसर्जन करना कोई आसान बात नहीं है। महिला मंडल अध्यक्ष राजकुमारी भुतोड़िया ने तुलसी अष्टकम द्वारा मंगलाचरण किया। साध्वी मनीषाश्री जी ने आचार्यश्री तुलसी के जीवन वृत्त का उल्लेख किया। साध्वी वृंद द्वारा गीतिका का संगान किया गया। साध्वी पल्लवप्रभाजी ने उदाहरण के

माध्यम से गुरुदेव तुलसी द्वारा कृत नारी सशक्तिकरण के कार्यों का उल्लेख किया। महिला मंडल की बहनों द्वारा सामूहिक गीत का संगान किया गया। केसरीचंद मालू, शोभा देवी सेठिया और सरोज देवी बैद ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संयोजन मंत्री डॉ. पूजा फुलफगर ने किया।



संक्षिप्त खबर

कंठीतप और धर्मचक्र तप साधिका बहनों का सम्मान समारोह

कादिवली (मुंबई)। तेरापंथ भवन कादिवली में साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तप अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ। तप के क्रम में गोरेगांव प्रवासी मंजुला हिरण, नीलम कोठारी, ममता चिम्पड़, बोरिवली प्रवासी उषा सिंघवी, सुनीता हिंण्ड, मंजु बोहरा का कंठीतप सम्पन्न हुआ। कांता सिंघवी और हेमलता बडोला ने धर्मचक्र तप की आराधना की। कादिवली प्रवासी कैलाश धोका ने भी कंठीतप की साधना की। सभी तपस्विनी बहनों की वर्धापना हेतु तप अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर साध्वी डॉ.मंगलप्रज्ञा जी ने कहा तपस्या का अच्छा क्रम चल रहा है। आज विशेष तप की आराधना सम्पन्न हो रही है। तपस्विनी बहनों ने अपने आत्मबल से अपना लक्ष्य पूरा किया है। तपस्या आत्मशांति और आनन्द का मार्ग तो है ही, स्वास्थ्य प्रदायक भी है। शरीर, मन और भावनात्मक रोगों को तप से दूर किया जा सकता है। जब मन का संकल्प मजबूत होता है, तब ही तप किया जा सकता है। चातुर्मास का समय तप की साधना के लिए उत्तम है। तप से आत्मा पवित्रता बढ़ती है। तप की परम्परा निरन्तर चलती रहे। साध्वी सुदर्शन प्रभाजी, साध्वी अतुल यशाजी, साध्वी राजुल प्रभाजी, साध्वी चेतन्य प्रभा जी ने नौ रागों में अनुमोदन गीत की सामूहिक प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा, महिला मण्डल, युवक परिषद मलाड, कादिवली द्वारा अभिनन्दन पत्र एवं जैन पट्ट से तपस्विनी बहनों का सम्मान किया।

ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता का आयोजन

गुवाहाटी। मुनि प्रशांतकुमार जी के सान्निध्य में तेयुप गुवाहाटी द्वारा रोचक एवं ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता संपन्न कराई गई। प्रतियोगिता में लगभग 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। मुनि कुमुदकुमार जी ने व्यवस्थित ढंग से प्रतियोगिता का संचालन किया। पुरस्कार प्रायोजक रतनलाल लोढ़ा परिवार थे। कार्यक्रम संयोजक संयम छाजेड़ एवं महक दुगड़ थे। रवि कुंडलिया, अनन्त छाजेड़, जयंत सुराना आदि युवा साथियों का सक्रिय सहयोग रहा। तेयुप सचिव पंकज सेठिया ने विचार व्यक्त किये। धन्यवाद अंकुश महनोत ने व्यक्त किया। मुनि प्रशांतकुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रतियोगिता ज्ञानार्जन का माध्यम है, इतिहास तत्त्व आदि का स्वाध्याय हो जाता है।

सिद्धपुरुष के सिद्धमंत्रों का महानुष्ठान

चेन्नई। साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में 'सिद्धपुरुष के सिद्धमंत्रों का' महानुष्ठान हुआ। साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी ने कहा- जैन धर्म में अनेक आचार्य सिद्धपुरुष के रूप में हुए हैं। उन्हीं में से तेरापंथ धर्मसंघ के एक सिद्धसाधक, सिद्धयोगी और सिद्धपुरुष आचार्य थे- आचार्य जीतमल जी। जो मंत्र विद्या के विशेषज्ञ, प्रयोग धर्मा, तेरापंथ इतिहास के पुरोधा, सबको साथ लेकर चलने वाले नीति विशारद नेता, गंभीर निर्णायक और भविष्य के दिशा बोधक थे। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा- जयाचार्य ने अपने जीवन के साधनाकाल में अनेक मंत्रों की साधना एवं रचना की। आज भी तेरापंथ धर्मसंघ में उन मंत्रों का प्रभाव देखने को मिलता है। साध्वी दक्षप्रभाजी के मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

साध्वी मेरुप्रभाजी ने तपस्वी की अनुमोदना में सुमधुर गीत प्रस्तुत। कार्यक्रम में विशेष सिद्धमंत्रों का जप करवाकर उनका प्रभाव बताया गया। विमला सिंघवी ने साध्वीश्री के सान्निध्य में मासखमण तप का एवं शांतिबाई ओस्तवाल ने अठाई तप का प्रत्याख्यान किया। ट्रस्ट की ओर से मंत्री पुखराज चोरडिया, अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा, तेयुप अध्यक्ष संदीप मुथा, माणकचंद रांका ने तपस्वी बहन का सम्मान किया। संचालन सुरेश रांका एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रवीण सुराणा ने दिया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

- **पूर्वांचल कोलकाता।** उदासर निवासी पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी विजय-शर्मिला महनोत के पुत्र जयराज महनोत एवं पुत्रवधू ज्योति महनोत के पुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से हुआ। जैन संस्कारक विजयकुमार बरमेचा ने नामकरण का कार्यक्रम संचालित किया।
- **गुवाहाटी।** श्रीडूंगरगढ़ निवासी विनोद कुमार-सुमन बोथरा के सुपौत्री एवं सुजित-लक्ष्मी बोथरा के सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से हुआ। संस्कारक आनंद सुराणा, विनीत लुनिया एवं छतरसिंह चोरडिया ने मंगलभावना यंत्र की विधिवत स्थापना कराई एवं पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया।
- **राजाजीनगर।** मैसूर निवासी स्व. राजमल-कांता बाई नंगावत के सुपौत्र एवं राहुल-सुमन नंगावत के पुत्र रत्न का नामकरण जैन संस्कार विधि से महालक्ष्मी लेआउट स्थित निवास स्थान पर सम्पन्न किया गया। संस्कारक राजेश देरासरिया, सतीश पोरवाड़ ने नामकरण पत्रक का वाचन करते पारिवारिक सदस्यों की अनुमति से नवजात शिशु का नाम 'प्रनीत' रखा।

नूतन गृह प्रवेश

- **हैदराबाद।** गंगाशाहर निवासी हैदराबाद प्रवासी विनीत मीनाक्षी सुराणा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित किया गया। संस्कारक ललित लुनिया, राहुल गोलछा, जिनेंद्र बैद ने मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को कुशलतापूर्वक पूर्ण किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

- **कोलकाता।** तेरापंथ युवक परिषद, कोलकाता मैनेज के अंतर्गत संस्कारक मनोज सुराणा एवं बिरेंद्र बोहरा ने समवेत मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ अरिहंत इलेक्ट्रिकल्स के भादरा निवासी कोलकाता प्रवासी मोतीलाल नाहटा से मंगलभावना पत्र स्थापित करवा कर प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से सानन्द संपादित किया।
- **गंगाशाहर।** जतनलाल-ममोल देवी फलोदिया के नूतन प्रतिष्ठान बाबा रामदेव स्टोर का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। कार्यक्रम में जैन संस्कारक विनीत बोथरा, देवेन्द्र डागा, भरत गोलछा एवं रोहित बैद और सहयोगी के रूप में तेयुप अध्यक्ष महावीर फलोदिया, कार्यकारिणी सदस्य भरत सोनी एवं संदीप रांका ने विधि विधान पूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार सहित जैन संस्कार विधि से प्रतिष्ठान का शुभारंभ करवाया।

साध्वी वृंद का स्वागत समारोह का आयोजन

दादर (मुंबई)।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी शिष्या शासनश्री साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' ठाणा 5 का दादर तेरापंथ भवन में मंगल प्रवेश हुआ। प्रवेश के उपलक्ष्य में स्वागत समारोह आयोजित किया गया। साध्वी श्री द्वारा नमस्कार महामंत्र का उच्चारण करने के पश्चात तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलाचरण एवं स्वागत गीत का संगान किया। दादर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अर्जुनलाल धाकड़ ने स्वागत भाषण दिया। साध्वी प्रेरणाश्री जी एवं साध्वी मृदुयशाजी ने प्रेरणा देते हुए मधुर गीत का संगान किया। अणुव्रत विश्व भारती के 56 विविध प्रकल्पों

की बुकलेट अणुविभा उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, अणुव्रत समिति मुंबई अध्यक्ष रोशनलाल मेहता, आदि पदाधिकारियों ने 'शासनश्री' साध्वी विद्यावती जी को भेंट करते हुए इन प्रकल्पों के बारे में चातुर्मास काल व शेषकाल में जन-जन को प्रेरणा देने हेतु निवेदन किया।

साध्वी प्रियंवदाजी ने कहा- हमें आज प्रसन्नता इस बात की है कि श्रद्धेय गुरुदेव द्वारा घोषित हमारा चतुर्मासिक क्षेत्र दादर में आज आना हो गया। हालांकि बीच-बीच में स्वास्थ्य संबंधित प्रतिकूलताएं भी काफी रही, अब चतुर्मास का जो समय अवशेष है उसे अध्यात्म के रंगों से प्रभावशाली बनाना है। साध्वी श्री जी ने तेले आदि तपस्याओं के लिए भी प्रेरित

किया। साध्वी विद्यावतीजी ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा- हम अपने चतुर्मासिक क्षेत्र में देर से आये पर संतोष इस बात का है कि देर से आये पर आ गये। दादर वासी भी हमारा इंतजार कर रहे थे। आज उनकी मनोभावना भी पूरी हो गई। साध्वीश्री ने चतुर्मास को सफलतम बनाने का आह्वान किया। इस अवसर पर बडाला, वरली, घाटकोपर, वाशी, धारावी, माटुंगा, एलफिस्टन दक्षिण मुंबई, भायखला आदि क्षेत्रों से भी श्रावकों की उपस्थिति रही। प्रतिमा धारी डालचंद कोठारी, अभातेयुप सदस्य आदि उपस्थित थे। आभार ज्ञापन स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष नीतेश भंसाली ने किया। संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री पंकज चौपडा ने किया।

जयाचार्य पर लिखित प्रतियोगिता का आयोजन

रायपुर। तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य श्री जयाचार्य जी के 144 वें निर्वाण दिवस पर तेरापंथ युवक परिषद, रायपुर द्वारा मुनि सुधाकर जी व मुनि नरेशकुमार जी के सान्निध्य में जयाचार्य से संबंधित प्रश्न-उत्तर

लिखित प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। परिणाम तुरंत देकर प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। आयोजन के पश्चात् विगत दिनों आयोजित 'गमोत्थुणं पाठ'

लिखित प्रतियोगिता का परिणाम घोषित कर प्रतिभागियों को मुनिश्री के सान्निध्य में पुरस्कृत किया गया। आयोजन में तेयुप, रायपुर के अभय गोलछा, पंकज बैद, गौरव दुगड़ व वीरेंद्र डागा का सहयोग प्राप्त हुआ।



साध्वीश्री रतनश्री जी जी की स्मृति में चारित्रात्माओं के उद्धार

संधारे री महिमा अपरंपार

● साध्वी रामकुमारी ●

बढ़ता चढ़ता भावां स्यूं, सतिवर पचख्यो है संधारो।
राजधानी में संधारे री महिमा अपरंपार।।
दिल्ली में संधारे री महिमा अपार।।
समता झुले झुल रहा शिव रमणी लागी प्रीत,
उजले भावां री श्रेणी बढ़ती जावै दिन रात।।
संधारे री सौरभ फैली देश विदेशां आज,
जुडग्यो मुक्ति स्यूं तार थारो देखो सतिराज।।
निर्मल तन निर्मल मन थारो भावां भावना राज,
राग द्वेष ने जीत्यां मिलसी मुक्ति रो ओ ताज।।
राम कुमारी करें कामना सुखे-सुखे भव पार,
गुरुवर महाश्रमण शासन अनशन री जयकार।।

तर्ज - म्हारी घूमर है नखराली

बड़भागण लिन्हो जश अणपार

● समणी सन्मतिप्रज्ञा ●

ऊंचे भावां आदर्यो थे संधारो सुखकार, भिक्षु संघ में...
जीवन थारो उजलो-२, ज्यूं समदर रा मोती,
गुरु किरपा स्यूं निशदिन जलती, श्रद्धा री आ ज्योति,
भिक्षु-२ नाम स्यूं, होसी निश्चित निस्तार, भिक्षु संघ में...
ॐ अर्हम् ॐ अर्हम् ॐ ॐ सुदृढ कवच बनावो,
आत्मा भिन्न शरीर भिन्न रो, निज में अनुभव पावो,
नहीं सहारो दूसरो, ओ ले जासी भवपार, भिक्षु संघ में...
अरिहन्तां री शरण सदा है, सिद्ध लक्ष्य आत्मा रा,
गुरु आपारी आत्मप्रेरणा, भव स्यूं तारणहारा,
सजगता थारी भली, जुडसी अन्तर स्यूं तार, भिक्षु संघ में...
मन में समता तन में समता, समता में रम ज्यावै,
मंजिल उणरै पगां खड़ी है, आत्मशक्ति जद आवै,
बड़भागण लिन्हो जश अणपार।।

तर्ज - चिरमी

दिल्ली में गूंज रह्यो थारो जयकारो

● साध्वी संपूर्णयशा आदि साध्वी वृंद ●

चढ़ते भावां स्यूं सतिवर, धार लियो थे संधारो।
दिल्ली में गूंज रह्यो थारो जयकारो।।
गुरु तुलसी स्यूं दीक्षा, शिक्षा प्रगति पथ पर सदा बढ़या,
महाप्रज रे शीतल अनुशासन में हरदम हर्या भर्या।
भागां स्यूं पायो, महाश्रमण बरतारो।।
उजली संयम साधना, देख्यो थारो उजलो जीवन,
आपरी सन्निधि में जद आता खिल जातो चित्त मधुवन।
संयम रा साथी भगिनी परिकर थारो।।
यावज्जीवन खूब तप्या, अब अंतिम बाजी जीवन री,
लक्षित मंजिल पाओ सतिवर तोड़ श्रृंखला कर्मन री।
दीपेला नाम आपरो ज्यू ध्रुव तारो।।
साध्वी सुव्रतां जी सुमन प्रभा जी रो सहकार है,
कार्तिक, चिंतन सेवाभावी पाया शुभ संस्कार है।
संपूर्ण परिकर रो वंदन स्वीकारो।।

तर्ज - घणा सुहावो

धन-धन जीवन थारो

● साध्वी शशिरेखा ●

जबरो दीपे संधारो।
पल-पल शरणों गुरुवां रो, धन-धन जीवन थारो।।
म्हारे संधारो करणो आ सदा भावना भाता,
धार्यो बो कर दिखलायो जद तन में हुई असाता,
गुरुवर म्हारी नैया ने, अब भव स्यूं थे तारो।।
ज्यूं-ज्यूं बीते समय वेदना तन में घणी सतावे,
आत्म भिन्न शरीर भिन्न ओ चिंतन स्वस्थ बणावे,
ओम् भिक्षु जय भिक्षु जाप स्यूं होसी निस्तारो।।
जीणे री अभिलाषा छोडी, मरणे रो भय भाग्यो,
अंतर रा पट खुलज्या जद भीतर से पौरुष जाग्यो,
महाश्रमण री शक्ति स्यूं, फलसी कारज थारों।।
हुई असाध्य बीमारी फिर भी मन मजबूती थारी,
आत्मसमर में जूझ रहा आ रण रजपूती भारी,
अनशन री सौरभ फैली, कण कण पुलकित थारो।।

तर्ज - धर्म की लौ जगाएँ हम

उद्यान खिल्यो मन भायो

● साध्वी कमलप्रभा (बोरज) ●

उद्यान खिल्यो मन भायो।
डाल डाल और पात-पात पर रंग अनूठो छायो।।
गुरु तुलसी स्यूं दीक्षित शिक्षित विचरतां देश प्रदेशां,
गुरु इंगित आज्ञा रो सतिवर राख्यो ध्यान हमेशा।
स्वाध्याय जाप रा फूल खिलाकर जीवन ने महकायो।।
जागी चेतना पौरुष जाग्यो भवसागर स्यूं तरणो,
हर पल हर क्षण शुभ भावां रो रह्यो प्रवाहित झरणो।
उर्ध्वारोहण री यात्रा में अद्भुत शौर्य दिखायो।।
कर्म शत्रु स्यूं लोहो लेवन सामी छाती मंडग्या,
शूरवीरता रो ओ परिचय आत्म समर में डटग्या।
माटी रे काया पर पावन स्वर्णिम कलश चढ़ायो।।
अंत समय तक भैक्षव गण में बणया रह्या उपयोगी,
सुव्रत, कार्तिक, चिंतन, सुमन रह्या सदा सहयोगी।
शासनश्री श्री रतन श्री जी गण में नाम कमायो।
महाश्रमण रे बरतारे में अनुपम दीप जलायो।।

तर्ज - जहां डाल डाल पर

अंतर ज्योति प्रगटाई

● साध्वी मुक्तिश्री ●

शासन श्री साध्वी रतन श्री जी ने हृद हिम्मत दिखलाई।
अनशन की कर शुभ आराधन अंतर ज्योति प्रगटाई।।
चौरडिया कुल में जन्म लिया, गुरु तुलसी से पाई दीक्षा,
गुरु दृष्टि पा आगम मंथन कर अनुपम पाई तुमने शिक्षा,
भगिनी त्रय भतीजी ने भी संयमधन पाया पुण्याई।।
सहज सरलता कष्ट में समता अपनी धुन में रमण किया,
दृढ संकल्पी मन मजबूती से भगिनी द्वय का साथ किया,
लंबी-लंबी यात्राएं कर गण की गरिमा खूब बढ़ाई।।
सहना सब कुछ गण में रहना गण ही मेरा प्राण है,
संघ निष्ठा मर्यादा निष्ठा गुरु निष्ठा ही त्राण है,
लक्ष्य बनाओ निज्जरट्टिए का अनुपम शिक्षा फरमाई।।
अनुगामी बन एकदशक तक, साथ रहने का योग मिला,
पावन प्रेरणा पाकर तुमसे, मन उपवन में कमल खिला,
सौभाग्य गुरु महाश्रमण पा लक्षित मंजिल पाई।।
ऐसा आशीर्वर बरसाना मिले मोक्ष शीघ्र सुखदाई।।
करती हूं मैं मंगल कामना उत्तरोत्तर विकास करें,
महानिर्जरा करते-करते मोक्ष गति को शीघ्र वरें।
दीर्घ तुम्हारी संयम यात्रा गुरु शक्ति ने पार लगाई।।

संधारा साधिका साध्वीश्री रतनश्रीजी की गुणानुवाद सभा का आयोजन

दिल्ली।

'शासनश्री' साध्वीश्री रतनश्रीजी की गुणानुवाद सभा का आयोजन महाप्रज्ञ भवन महरौली में 'शासनश्री' साध्वी सुव्रताजी के सान्निध्य में समायोजित किया गया। साध्वीश्री ने कहा - मुझे दीक्षित हुए 68 वर्ष होने वाले हैं, मैं 18 वर्ष तक 'शासनश्री' साध्वीश्री विनयश्रीजी 'बड़े' के गुण में रही, 50 वर्ष आपके गुण में रही।

मैंने अनुभव किया वे स्वयं आचारनिष्ठ तो थी पर हम साध्वियों को समय-समय पर संयम साधना में जागरूक रहने की प्रेरणा देती

रहती थी। बात-बात में गुरुनिष्ठा, संघनिष्ठा अभिव्यक्त करती रहती थी। लगभग प्रवचन आगमाधारित एवं आचार्यों के जीवनाधारित -जैसे डालिम चारित्र, माणक महिमा, कालूयशोविलास आदि से सम्बंधित होता था। आपका जीवन अनेकानेक विशेषताओ का संग्रहालय था। मुझे कहते हुए गौरव की अनुभूति होती है कि मुझे तेरापंथ धर्म संघ जैसा प्राणवान धर्म संघ मिला। आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं आचार्य श्री महाश्रमण जैसे गुरुओं की छत्रछाया में रहने का सौभाग्य मिला। इसके साथ-साथ मेरी ज्येष्ठा भगिनी साध्वी रतनश्रीजी की पुनीत सन्निधि में यत्किंचित

उनकी सेवा करने का सुअवसर मिला। 'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभा जी, साध्वी कार्तिकप्रभाजी, साध्वी चिन्तनप्रभाजी ने साध्वीश्री के प्रति अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किये। दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया, दक्षिण दिल्ली सभा अध्यक्ष सुशील पटावरी, महिला मंडल से वर्षा बैंगानी, अणुव्रत न्यास से के.सी. जैन, महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़, अणुविभा से तेजकरण सुराणा, विकास परिषद से मांगीलाल सेठिया, संपतमल नाहटा, तेयुप दिल्ली से मुदित लोढ़ा आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन दिल्ली सभा महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।



साध्वीश्री धैर्यप्रभा जी की स्मृति में चारित्रात्माओं के उद्गार

साध्वी धैर्यप्रभाजी की गुणानुवाद सभा

माधावरम्। साध्वी धैर्यप्रभाजी की स्मृति सभा को संबोधित करते हुए डॉ. साध्वी गवेषणाश्रीजी ने कहा कि साध्वी धैर्यप्रभाजी सहज, सरल साध्वी थी। आपका बचपन चैन्नई महानगर के छल्लाणी परिकर में बीता और यौवन की दहलीज पर कदम रखते ही बोहरा परिवार की पुत्रवधू बन गयी। संसार में रहते हुए भी आप कमल की तरह निर्लिप्त रही।

इसी का परिणाम था कि आप संसार का विराट वैभव छोड़कर पूरे परिवार सहित संयम की राह पर चल पड़ी। आपकी वैराग्य भावना प्रबल थी, साधना निर्मल थी, आपके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता थी- आपने चैन्नई में ही जन्म, शिक्षा, शादी और दीक्षा ग्रहण की। जिनके करकमलों से दीक्षा ली, उन्हीं के चरणों में 46 दिन की तपस्या में डायमंड सिटी सूरत में महाप्रयाण को प्राप्त हो गये। सिंहवृत्ति से संयम धारण किया और सिंहवृत्ति से ही उसका पालन किया। आप समता की प्रतिमूर्ति थी।

गुणानुवाद सभा के अन्तर्गत सभी साध्वियों ने सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की। छल्लाणी परिवार की बहु एवं बेटियां, चांदनी छल्लाणी, अनुकृति छल्लाणी ने भी विचार रखे। संपूर्ण तेरापंथ समाज व संस्थाओं की ओर से प्रतिनिधित्व करते हुए माधावरम ट्रस्ट के अध्यक्ष घीसूलाल बोहरा ने विचार रखे।

महासभा आंचलिक संयोजक ज्ञानचंद आंचलिया ने साध्वीश्री के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। छल्लाणी और बोहरा परिवार ने भावांजलि अर्पित की।

एक बेटी को नहीं

● साध्वी सुमतिप्रभा ●

साध्वी धैर्यप्रभाजी के जीवन में अनेक विशेषताएं थी। वे बहुत सहनशील थी। वे दृढ़ सकल्प और मजबूत मनोबली थी। शरीरबल भले ही उनका कमजोर हो गया, किन्तु मनोबल कभी कमजोर नहीं हुआ। मैं उनकी समझदारी का एक प्रसंग बता रही हूँ। उनकी दीक्षा परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के चेन्नै पावस प्रवास के दौरान सन् 2018 में हुई। लगभग एक वर्ष से कुछ अधिक समय तक उनको गुरुकुलवास में रहने का अवसर मिला। सन् 2019 के बंगलूरु चतुर्मास के बाद आचार्यप्रवर ने उनको बहिर्विहार में जाने का निर्देश प्रदान किया। इस सन्दर्भ में एक दिन साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने साध्वी धैर्यप्रभाजी से कहा- अब तुम न्यारा में जाने वाली हो। तुम्हारी दो-दो बेटियां धर्मसंघ में साधनारत हैं। तुम चाहो तो आचार्यप्रवर को निवेदन कर एक बेटी को तुम्हारे साथ भेज दें।

उन्होंने बहुत ही समझदारी के साथ निवेदन किया- साध्वी प्रमुखाश्रीजी ! अभी तो मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ, पूर्ण सक्षम हूँ। इसलिए आप जहां और जिनके साथ भिजवाएंगे मैं अकेली चली जाऊंगी। मेरी दोनों बेटियों को आप अपनी सन्निधि में रखने की कृपा करें, किन्तु जब कभी मैं अक्षम हो जाऊं और आपश्री को निवेदन कराऊं, तब आप मेरी एक बेटी को नहीं, दोनो बेटियों को भिजवाने की कृपा कराना। साध्वी धैर्यप्रभाजी इस मायने में बड़ी भाग्यशाली साध्वी थी कि वे कभी अक्षम बनी ही नहीं। मात्र अन्तिम 8-10 दिनों को छोड़कर वे प्रायः सक्षम अवस्था में ही प्रयाण को प्राप्त हो गईं। उनकी आत्मा के प्रति आध्यात्मिक विकास की मंगल कामना।

निर्जरार्थी, दृढसंकल्पी व अल्पभाषी साध्वी

● साध्वी काव्यलता ●

जाए सहाए निक्खंतो,परियायगणमुत्तमं।
तमेव अणुपालेज्जा, गुणे आयरियसम्मए॥

इस आगम उक्ति का साध्वी धैर्यप्रभाजी ने शतशः पालन किया। वे सौभाग्यशालिनी थी जिन्हें गुरुचरणों में अन्तिम श्वास लेने का अवसर प्राप्त हुआ। अपनी संयमयात्रा को समाधिपूर्वक पूर्ण कर अपना काम सिद्ध किया।

नन्दनवन का चातुर्मास आज स्मृतिपटल पर तरोजा हो रहा है। श्रद्धेया साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने अल्प समय के लिए साध्वी धैर्यप्रभा जी को मेरे साथ रखा। उस समय मुझे निकटता से देखने का मौका मिला। वे धुन की बहुत पक्की थी। जो संकल्प कर लिया उसे पूरा करती। जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आए, पर उन्होंने हर स्थिति समता पूर्वक हंसते-2 झेली।

उन्होंने उपवास के पारण में आर्यबिल तप स्वीकार किया। उसको याद करते ही हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। हमने आंखों देखा- लूखे सूखे निरस आहार को भी बहुत ही प्रसन्नतापूर्वक करती। उनकी समता गजब की थी। वे विनम्र, सेवाभावी, स्वावलम्बी, जागरूक और श्रमशील साध्वी थी।

पूरे परिवार के साथ दीक्षा लेकर अपना नाम तेरापंथ के इतिहास में स्वर्णाक्षरों लिखा दिया। साध्वी सिद्धार्थ प्रभा जी तुम भाग्यशालिनी हो जो मां की सेवा का दुर्लभ अवसर प्राप्त हो गया। मां के ऋण से उन्नत होने का यत्किंचित अवसर मिल गया। साध्वी धैर्यप्रभाजी की आत्मा शीघ्र मोक्षश्री का वरण करे।

जीवन धन्य बनायो, धैर्यप्रभा नाम कमायो

● डॉ. साध्वी गवेषणाश्री ●

जीवन धन्य बनायो, धैर्यप्रभा नाम कमायो।
अजब वीरता, गजब धीरता, जबरो काम करायो॥

सम्पतराजजी कांताबाई री, थी सुपुत्री लाडली,
पुष्पलता छल्लाणी परिकर में, अति निराली।
बोहरा कुल री पुत्रवधू बन, गजब इतिहास रचायो॥

दृढ मनोबली साहस हिम्मत की उत्तम सहनाणी,
समता मृदुता आत्मशक्ति की, थी अजय कहाणी।
तप जप की आराधिका बन, फैलायो नव उजियारो॥

महाश्रमण रे करकमलां स्यूं, संयम धन थे पायो,
सौभागी बन बां चरणां में ही, बेड़ो पार लगायो।
संयम जीवन पर स्वर्णिम, सुन्दर कलश चढ़ायो॥

लय - संयममय जीवन हो

अल्प संयम पर्याय- बहुनिर्जरा

● साध्वी विशालयशा ●

जीना एक बात है। साध्वी धैर्यप्रभा जी ने एक सफल गृहिणी का जीवन जिया तो हम यह भी कह सकते हैं कि उन्होंने अपने संयम जीवन को भी सफल बनाने का भरपूर प्रयास किया। साध्वी धैर्यप्रभाजी के छह साल के संयमी जीवन में उन्हें लगभग 3 साल गुरुकुलवास में रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उनकी तीन विशेषताओं ने मुझे प्रभावित किया।

1. अल्पोपधि-

उनके पास अत्यन्त अल्प उपकरण थे। भौतिक वस्तुओं के प्रति उनका आकर्षण न के बराबर था। दीक्षा के बाद चाहे गर्मी हो या सर्दी उन्होंने गत्ते का उपयोग नहीं किया। चाहे मच्छरों की बारिश ही हो रही हो किंतु कभी मच्छरदानी का उपयोग नहीं किया। सर्दी के दिनों में ओढ़ने व बिछाने के लिए ऊनी वस्त्रों का उपयोग नहीं किया। उन्होंने उपाधि को ही अल्प नहीं किया बल्कि शरीर को भी अल्प बना लिया।

2. अल्पभाषी-

बहुभाषी से अल्पभाषी बनना एक बहुत बड़ी साधना है। साध्वी धैर्यप्रभा जी ने इस साधना को जीया है। उन्होंने अपने ढंग से तप के विभिन्न प्रयोग किए। जिस दिन किसी भी प्रकार की तपस्या होती उस दिन प्रायः मौन रहने का प्रयास करती। अंतिम समय में भी 4-6 दिन का तप किया। इस दौरान भी प्रायः मौन रही। केवल साध्वी प्रमुखा श्री व आचार्य श्री का ही आगार रखा था।

3. अल्पाहारी-

जो महिला गृहस्थावस्था में खाना खाने, बनाने व खिलाने की इतनी शौकीन थी। दीक्षा लेने के बाद हमने देखा उन्होंने अपनी रुचि, विचार, भावधारा सबकुछ बदल दिया। आहार में उनके लिए पसंद-नापसंद कुछ भी नहीं रहा। दीक्षा के कुछ समय बाद ही उन्होंने बियासणा के क्रम को अपना लिया। धीरे-धीरे तप के क्षेत्र में कदम बढ़ते गए।

एक समय ऐसा भी आया जब नीरस आहार को ही अपना लक्ष्य बना लिया। संयम पर्याय के इतने छोटे से काल में रसनेन्द्रिय पर इतना जबर्दस्त संयम अपने आप में एक विलक्षण बात लगती है। साध्वी धैर्यप्रभाजी ने अल्प संयम पर्याय में बहुनिर्जरा के लक्ष्य को अपनाने का प्रयास किया।

तेरापंथ धर्मसंघ में जिन माता-पिता ने अपने तीन संतानों का दान दिया है उन्हें आचार्य प्रवर द्वारा महादानी का अलंकरण दिया जाता है। इस मायने में साध्वी धैर्यप्रभाजी व मुनिश्री अनिकेत कुमार जी भी इसी कोटी में आ सकते हैं। ऐसी महादानी मां साध्वी धैर्यप्रभा जी की स्मृति में यह मंगलकामना करते हैं आप जैसी संयम चेतना हम सबके भीतर भी अवतरित हो।

❖ सरल व्यक्ति के जीवन में धर्म संस्थित होता है। माया अविश्वास का घर है। जहां सरलता है, वहां आत्मशुद्ध है, विश्वास भी है।

- आचार्य श्री महाश्रमण



संयम से आत्मा को भावित करने का पर्व है पर्युषण

पीतमपुरा

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में खिलौनी देवी धर्मशाला में पीतमपुरा सभा के तत्वावधान में पर्युषण महापर्व का नवाह्निक कार्यक्रम विशाल उपस्थिति में उत्साह एवं उमंग के साथ मनाया गया।

खाद्य संयम दिवस के अवसर पर साध्वी अणिमाश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा- पर्युषण महापर्व आत्मावलोकन का महापर्व है। आत्म-चेतना को इंकृत कर ऊर्ध्वगामी बनाने का स्वर्णिम समय है। संयम के प्रकारों में एक प्रकार है- खाद्य-संयम। हजार रोगों की एक दवा है खाद्य संयम। साध्वी कर्णिका श्री जी ने कहा- पर्युषण के ये आठ दिन आठ कर्मों को क्षय कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त बनने की प्रेरणा देते हैं। डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा- आत्मशुद्धि का उत्प्रेरक महापर्व है- पर्युषण। पीतमपुरा की बहनों ने मंगल संगान किया।

स्वाध्याय दिवस पर सभा को सम्बोधित करते हुए साध्वीश्री ने कहा- मन की शांति, चित्त की शुद्धि एवं निर्विकल्प समाधि का सशक्त आलम्बन स्वाध्याय है। जैसे अरणि में स्थित आग घर्षण के बिना प्रकट नहीं होती वैसे ही आत्मस्थ ज्ञान-दीप स्वाध्याय के बिना प्रज्वलित नहीं होता। जैन शास्त्रों में स्वाध्याय को अंतरंग तप और दुःख मुक्ति का श्रेष्ठतम उपाय माना है। मंगल संगान त्रिनगर सभा के भाई-बहनों ने किया।

सामायिक-दिवस पर साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा- भगवान महावीर का जीवन समता की साधना का उत्कृष्ट उदाहरण है। सामायिक की साधना का फलित है- समता। अध्यात्म की साधना का प्रथम सोपान है- सामायिक। प्रतिदिन सामायिक की साधना से जुड़कर समता की जीवन में प्राण प्रतिष्ठा करें। साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा जिसकी चेतना आत्मा में रमण करती है, वह आत्माराम है, जो सिर्फ पदार्थ जगत में ही उलझा रहता है, वह पदार्थाराम है। पर्युषण का यह समय पदार्थाराम से ऊपर उठकर आत्माराम बनने का समय है। मंगल संगान शालीमार बाग सभा ने प्रस्तुत किया।

वाणी संयम-दिवस - साध्वी अणिमाश्री जी ने भगवान महावीर के भवों का रोचक चित्रण करते हुए वाणी-संयम की महत्ता को व्याख्यायित किया। उन्होंने कहा- हम अपने जीवन को बांस नहीं बांसुरी बनाएं। जीवन को आनन्द का उत्सव बनाने का महत्वपूर्ण उपाय है- वाणी संयम। हम इष्ट, मिष्ट एवं शिष्ट भाषा का उपयोग करें। डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा जो व्यक्ति ज्यादा बोलता है, उसका मस्तिष्क निष्क्रिय होने लगता है एवं जो मौन करता है या कम बोलता है उसका मस्तिष्क सक्रिय रहता है। जब भी जिन्दगी में महत्वपूर्ण डिसीजन लेना हो तो कम से कम मौन अवश्य करें, आपका डिसीजन आपके अनुकूल

ही होगा। कार्यक्रम में मंगल संगान उत्तर-मध्य सभा के भाई-बहनों ने किया।

अणुव्रत चेतना दिवस पर साध्वी अणिमाश्री ने कहा- भगवान महावीर ने दो प्रकार के धर्म की प्ररूपणा की- महाव्रत धर्म एवं अणुव्रत धर्म। अणुव्रत के संयम तत्त्व को ग्रहण कर आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। अणुव्रत चरित्र निर्माण के दायित्व का संवाहक एक नैतिक आन्दोलन है। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने कहा- अणुव्रत नैतिक अभियान है, नैतिक ज्योति है, नैतिक प्रेरणा है। साध्वी श्री ने अणुव्रत के एक-एक नियम की विस्तार से व्याख्या करते हुए परिषद को अणुव्रती बनने का आह्वान किया। साध्वी सुधाप्रभा जी के आह्वान पर पूरी परिषद ने एक साथ खड़े होकर साध्वीश्री से संकल्प स्वीकार किए। मंगल संगान कीर्तनगर की बहनों ने किया। साध्वीश्री ने जप-दिवस पर मंत्र विज्ञान की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए कहा- अध्यात्म साधना का पवित्र उद्देश्य है- चित्त की शुद्धि। चित्त की शुद्धि और सिद्धि के महत्वपूर्ण साधनों में एक साधन है-मंत्र-शक्ति। मंत्र वह होता है, जो मन को शान्त करे। प्रायः प्रत्येक मंत्र की आदि में ऊँ तथा अन्त में नमः का प्रयोग होता है। ऊँ को मंत्र का सेतु माना गया है। नमः को मंत्र-पल्लव की संज्ञा दी गई है। ऊँ हीं को मंत्रशास्त्र का सुमेरु माना गया है।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा- हमारी जीवन रुपी रेल में कब से मान, माया, लोभ रुपी लुटेरे बैठे हुए हैं, जो जिन्दगी की ट्रेन को पटरी से नीचे उतारने की कोशिश कर रहे हैं। पर्युषण का यह समय ट्रेन को मंजिल तक ले जाने का समय है। मानसरोवर गार्डन सभा ने मंगल संगान किया।

ध्यान दिवस पर साध्वीश्री ने भगवान महावीर के अंतिम भवों का सरस चित्रण करते हुए कहा- भगवान महावीर की साधना हमारी साधना का आधार स्तंभ है। महावीर ने घंटों- घंटों खड़े रहकर ध्यान की साधना कर अपनी आत्मा को साधा। ध्यान से शरीर के अवयवों, स्नायुओं और रक्तकणों में भारी परिवर्तन आता है। ध्यान एक प्रकार का आहार है, जो अन्तर को पुष्ट करता है। एक साथ सतरह तपस्वियों ने साध्वीश्री से बड़ी तपस्या का प्रत्याख्यान किया। साध्वीवृन्द ने तपस्वियों की तप अनुमोदना में विभिन्न रागिनियों में गुम्फित गीत का संगान किया। मंगलसंगान उत्तर-पश्चिम दिल्ली की महिला मंडल ने किया।

सम्बत्सरी महापर्व के पवित्र अवसर पर साध्वी अणिमाश्री जी ने अपने उद्बोधन में सम्बत्सरी की महत्ता बताते हुए कहा- सम्बत्सरी महापर्व कषायों की आग को अध्यात्म, मैत्री व क्षमा के शीतल जल से शांत करने का समय है। आत्मजगत में नई क्रांति उत्पन्न करने एवं इन्द्रिय भोगों पर त्याग का अंकुश लगाने का

महापर्व है। साध्वीश्री ने चंदनबाला के रोचक इतिवृत्त की मार्मिक प्रस्तुति दी।

साध्वी अणिमाश्री जी ने तेरापंथ के आचार्यों के जीवनवृत्त को सरस शैली में प्रतिपादित किया। साध्वी कर्णिकाश्री जी ने तीर्थंकर चरित्र का सांगोपांग विवेचन किया। डॉ.साध्वी सुधाप्रभाजी ने जैन धर्म के प्रभावक आचार्यों के चरित्र का चित्रण प्रभावक शैली में किया। साध्वी समत्वयशाजी ने आगम-वाणी का विस्तृत विवेचन किया। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने भगवान महावीर के साधना काल का रोचक चित्रण किया। प्रायः प्रतिदिन साध्वी समत्वयशाजी ने आगमवाणी का रसपान कराते हुए दिवस अनुरूप प्रेरक गीत का संगान किया तथा मंच संचालन साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने किया।

खमतखामना के पावन पर्व पर साध्वीश्री ने सच्ची व प्रेरक घटना के माध्यम से जीवन में लगी राग-द्वेष की गांठों को खोलने की प्रेरणा दी। साध्वीश्री ने गुरुदेवश्री, साध्वीप्रमुखाश्रीजी, मुख्यमुनिप्रवर, साध्वीवर्याजी एवं सभी चारित्रात्माओं से तथा दिल्ली में विराजित सभी साधु-साध्वी वृन्द से खमतखामना किया। अपनी सहवर्तिनी साध्वियों एवं सम्पूर्ण श्रावक समाज एवं उपस्थित सभी सभा-संस्थाओं के पदाधिकारियों का नामोल्लेख करते हुए उनके कार्यों को याद करते हुए खमतखामना किया।

जलगांव

जैन धर्म में अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाने वाले पर्युषण पर्व की आराधना आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी प्रबल्यशाजी ठाणा-3 के सान्निध्य में अणुव्रत भवन प्रांगण में संपन्न हुई। साध्वी प्रबल्यशाजी, साध्वी सौरभप्रभाजी, साध्वी सुयशप्रभाजी ने पर्युषण पर्व की धर्मारधना में भगवान महावीर की जीवन गाथा का विवेचन कर आठ दिवसीय कार्यक्रम में खाद्य संयम दिवस पर खाने-पीने का संयम कर कर्म निर्जरा का मर्म समझाया।

स्वाध्याय दिवस पर ज्ञान की ज्योति को समय नियोजन करके वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा व धर्मचर्चा कर निरंतर प्रज्वलित रखने की प्रेरणा दी। सामायिक दिवस पर सामायिक का अर्थ सहित व्याख्या देकर संवर-निर्जरा के लाभ के साथ-साथ मनुष्य को हर परिस्थिति में सम रहकर समता की साधना के विकास की प्रेरणा दी।

वाणी संयम दिवस पर वाणी के विवेक का मूल्य समझाया। अणुव्रत चेतना दिवस पर अणुव्रत आचार संहिता के नियमों का वाचन किया। गणाधिपति पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी द्वारा दिये गये अणुव्रत अवदान का जीवन जीने की शैली में उपयोगिता को और साथ ही श्रावक के बारह व्रतों को सरलता से समझाकर बारह व्रती श्रावक बनने के लिए सभी

को प्रोत्साहित किया। जप दिवस पर व्याख्या दी कि प्रत्येक अक्षर में मंत्र बनने की क्षमता है और अक्षरों का सम्यक संयोजन ही मंत्र है, और साथ ही विशेष मंत्र जप होने से होने वाले आध्यात्मिक लाभ के बारे में समझाया।

ध्यान दिवस पर साध्वी श्री ने कहा कि विकेंद्रित विचारों को केंद्रित कर निर्विचार अंतर्गता ही ध्यान है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ द्वारा दिये गये अवदान प्रेक्षा-ध्यान का निरंतर प्रयोग करके मनुष्य अपने जीवन में शांति का विकास कर सकता है।

रात्रिकालीन प्रवचन में साध्वी सुयशप्रभाजी ने तीर्थंकरों की आध्यात्मिक ऐरोप्लेन व साध्वी प्रबल्यशाजी ने 11 आचार्यों की भविष्यवाणी का विशद विवेचन किया। अंतिम दिवस संवत्सरी महापर्व पर सभी को चौविहार उपवास सहित अष्टप्रहरी पौषध करने के लिए जागरूक किया। संवत्सरी महापर्व पर साध्वी श्री ने माता त्रिशला के 14 सपनों का वर्णन किया और बताया कि आत्मा ही शत्रु व मित्र है, हम अनादिकाल से कालचक्र में घूम रहे हैं।

आज का दिन तप का पर्व है, अपने भीतर का ईर्ष्या भाव खत्म कर प्रमोद भावना का जागरण करें, सेवा भावना का विकास करें। आगम का ज्ञान करना जरूरी है, अव्रत, कषायों व मिथ्या भाव व किसी के प्रति छलकपट किया हो तो उसका प्रतिक्रमण करें।

क्षमायाचना दिवस पर विगत वर्ष में मन वचन काया द्वारा, जाने-अनजाने में हुई भूलों की शुद्ध अंतःकरण से प्राणी मात्र से क्षमायाचना का मूल्य समझा कर साध्वी प्रबल्यशाजी ने आत्मशुद्धि के महत्व को बताते हुए कहा कि मैत्री दिवस स्नेह, प्रकाश व संयम आराधना का पर्व है। क्षमा, आनंद व शांति का सदन है जो सामने वाले को शीतलता प्रदान करता है। किसी भी प्रकार की कटुता मन में हो तो उसे मिटाने का यह विशुद्ध आध्यात्मिक त्योहार है। साध्वी सौरभप्रभाजी, साध्वी सुयशप्रभाजी ने मैत्री गीत की प्रस्तुति दी। नन्हें बालकों ने भी उपवास व प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। सात दिन अखंड नवकार महामंत्र का जप भी उल्लेखनीय रहा।

क्षमायाचना दिवस पर परमश्रद्धेय गुरुदेव एवं समस्त चारित्र आत्माओं से क्षमा याचना कर सभी श्रावक-श्राविका समाज ने एक दूसरे से भी खमत खामना किया। क्षमापना गीत का संगान सुनील बैद व नोरतमल चौरड़िया ने किया।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष पवन सामसुखा, तेयुप अध्यक्ष पंकज सुराणा, महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला छाजेड़, टी.पी.एफ. अध्यक्ष संजय चौरड़िया, ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका रितु छाजेड़, खानदेश तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष राजकुमार सेठिया, कन्या मंडल प्रभारी मंजूषा डोसी ने अपने भाव व्यक्त किए। संचालन नोरतमल चौरड़िया ने किया।



संयम से आत्मा को भावित करने का पर्व है पर्युषण

फलसूण्ड

तेरापंथ सभा भवन में विराजित युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिक्षा 'शासनश्री' साध्वी सत्यवतीजी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में पर्युषण पर्व नवाह्निक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पर्युषण पर्व का पहला दिन खाद्य संयम दिवस के रूप में मनाया गया। जिसके अन्तर्गत 'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी ने पर्युषण पर्व की महत्ता को समझाते हुए अपनी रसना पर विजय पाने की प्रेरणा दी। साध्वी शशिप्रज्ञाजी ने खाद्य-अखाद्य और विरोधी व अविरोधी पदार्थ की जानकारी प्रदान करते हुए इनके संयम की साधना में सहयोग को उल्लेखित किया।

दूसरे दिन स्वाध्याय दिवस के उपलक्ष में साध्वीश्री ने भगवान महावीर के भवों का वर्णन करते हुए कहा- स्वाध्याय भावों कि पवित्रता को बढ़ाने का अच्छा माध्यम है। साध्वी पुण्यदर्शना जी ने कहा कि स्वाध्याय विवेक जागृति, व्यवहार परिवर्तन का आधार है।

पर्युषण पर्व का तीसरा दिन सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वीश्री ने भगवान महावीर के भवों का वर्णन करते हुए कहा कि विषमता से समता की ओर जाने का नाम सामायिक है। साध्वी शशिप्रज्ञाजी ने गीत का संगान करते हुए कहा सब जीवों को आत्मतुल्य मानने का नाम सामायिक है। चतुर्थ दिन वाणी संयम दिवस के अन्तर्गत साध्वी सत्यवती जी ने कहा- शब्दों का तोल-तोल कर उपयोग करना चाहिए जिससे हम मृदुभाषी बन सकें। साध्वी पुण्यदर्शना जी ने कहा कि हमारी बोली बाँसुरी की तरह मीठी व सीधी होनी चाहिए।

पर्व का पाँचवा दिन व्रत चेतना दिवस के रूप में मनाया गया। शासनश्री ने कहा कि त्याग व व्रत

से हम हमारी चेतना को निर्मलता की ओर अग्रसर कर सकते हैं। साध्वी रोशनीप्रभा जी ने कहा व्रत से दिनचर्या के उत्थान के साथ-साथ हमारे चरित्र का भी उत्थान हो सकता है। भावों की निर्मलता को बढ़ाने वाला छठा दिन जप दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वीश्री ने भगवान महावीर के भवों का वर्णन करते हुए कहा कि जप अर्हत् के समान बनने का सरस माध्यम है। साध्वी पुण्यदर्शना जी व साध्वी शशिप्रज्ञाजी ने गीतिका के द्वारा भावों को व्यक्त करते हुए कहा कि अजपाजप से हम अपने भावों को पवित्र व सकारात्मक बनाये रख सकते हैं। महापर्व का सातवां दिन ध्यान दिवस के रूप में मनाया गया। शासनश्री ने कहा कि ध्यान भावों की उज्वलता का नाम है। साध्वी शशिप्रज्ञा जी ने ध्यान के हेतु जैसे वैराग्य, अनासक्ति के बारे में बताते हुए कहा कि चेतन मन को सुलाने व अवचेतन मन को जगाने का नाम ध्यान है। पर्युषण पर्व का आठवां दिन संवत्सरी महापर्व के रूप में मनाया गया। 'शासनश्री' साध्वीश्री सत्यवतीजी ने तीर्थंकर व केवली की जानकारी प्रदान करवाई एवं साध्वी पुण्यदर्शना जी, साध्वी शशिप्रज्ञाजी व साध्वी रोशनीप्रभा जी ने अलग-अलग विषयों के माध्यम से दृढ़ श्रद्धा, भक्ति, कर्म उदय व साध्वियों के प्रेरक प्रसंग से सबको भावित किया।

महापर्व का अंतिम दिन क्षमायाचना के रूप में मनाया गया। सम्पूर्ण श्रावक समाज ने गुरुदेव के प्रति अनंत कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए क्षमायाचना की। सभा अध्यक्ष अशोक तातेड़, स्वरुप तातेड़, फलसूण्ड ज्ञानशाला व कन्या मण्डल ने अपने भाव व्यक्त किए। फलसूण्ड समाज ने अपने आप को निर्जरा से भावित करने के लिए अखण्ड जाप व अच्छी संख्या में पौषध व उपवास कर अपने आप को लाभान्वित किया।

नई दिल्ली

पर्युषण महापर्व अष्टान्हिक कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रथम दिवस खाद्य संयम के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी कुन्दनरेखा जी ने कहा संयम आत्मशुद्धि का महान उपक्रम है। उसमें भी खाद्य संयम अर्थात् रसनेन्द्रिय को वश में करना दुष्कर कार्य है। पाँचों इन्द्रियों में रसनेन्द्रिय को जीतने का अर्थ है सभी इन्द्रियों को जीत लेना। आगमों में कहा है कि शरीर टिकाए रखने के लिए भोजन की आवश्यकता है, फिर भी क्रोधादि कषायों से युक्त होकर भोजन न करें।

स्वाध्याय दिवस अवसर पर साध्वी कुन्दनरेखाजी ने कहा- स्वाध्याय स्वयं को जानने, पहचानने, मानने और समझने का सर्वोत्तम उपक्रम है। स्वाध्याय का असली अर्थ यही है कि आत्मा से जुड़ने का अभियान प्रारंभ हो जाये। साध्वी कल्याणयशजी ने कहा- स्वाध्याय ज्ञान की गंगोत्री है, जन-जन के पापों का प्रक्षालन करता है स्वाध्याय। यह एक ऐसी तपस्या है जिसके जरिये भव-भ्रमण मिटाया जा सकता है। नोएडा महिला मण्डल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया।

सामायिक दिवस पर साध्वी श्री ने कहा- सामायिक समता का महानतम व्यापार है, जो कर्मों की निर्जरा के द्वारा आत्मा का शोधन करता है और संवर के द्वारा आने वाले कर्मों को रोकता है। संवर और शोधन के द्वारा आत्मा के निज गुण ज्ञान, दर्शन, चरित्र एवं तप के मार्ग प्रशस्त होने लगते हैं।

वाणी संयम दिवस पर साध्वी श्री ने कहा कि संयम ऐसा भाव है, जिसमें सभी समस्याओं का समाधान निहित है। तीन प्रकार के योगों में वाणी का अपना प्रभाव है, यह चाहे तो दुश्मन

को मित्र और मित्र को दुश्मन बना सकती है। साध्वी कल्याणयशजी ने कहा - मधुर वाणी से सभी आकर्षित होते हैं और अपनत्व भी बढ़ता है।

व्रत चेतना दिवस पर साध्वी श्री ने कहा कि युगीन परिस्थितियों में समाधान है अणुव्रत। छोटे छोटे व्रतों द्वारा आत्मा के उत्थान का ज्ञान है अणुव्रत। इस अवसर पर साध्वी सौभाग्ययशजी ने कहा- अणुव्रत जीवन का दर्शन है। जहाँ मूल्य स्थिर रहते हैं, समन्वय एवं सामंजस्य की चेतना व्याप्त रहती है वहाँ अन्य दूषित प्रवृत्तियों को बढ़ने का मौका नहीं मिल पाने से सोच सकारात्मक बन जाती है।

जप दिवस पर साध्वी श्री ने कहा आत्म शोधन का सरलतम उपाय है जाप। जप करने से जागरूकता तो बढ़ती ही है, एकाग्रता के साथ मानसिक वृत्तियों का शोधन भी होता है।

ध्यान दिवस पर साध्वी श्री ने कहा कि स्वयं के द्वारा स्वयं तक पहुँचने की प्रक्रिया है प्रेक्षाध्यान। कायोत्सर्ग से प्रारंभ होने वाला यह ध्यान श्वासप्रेक्षा, चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा, लेश्या ध्यान, अनुप्रेक्षा आदि से गुजरता हुआ आत्मा तक ले जाता है। साध्वी सौभाग्ययशजी ने कहा कि ध्यान के द्वारा योगों की चंचलता पर विराम लगाया जा सकता है।

पर्युषण महापर्व के आठ दिनों में साध्वी कुन्दनरेखाजी ने कल्पसूत्र एवं आचारांग सूत्र के आधार पर भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा की विस्तार से चर्चा की। संवत्सरी महापर्व गणधरवाद एवं भगवान महावीर के साधनाकाल, उसमें आने वाले कष्टों तथा महासती चन्दनबाला आख्यान की रोचक प्रस्तुति की। साध्वी सौभाग्ययशजी ने भगवान ऋषभ के जीवन दर्शन, उनके पूर्व भव आदि की व्याख्या की।

आचार्य भिक्षु के भाष्यकार और साम्यवाद के सूत्रधार थे जयाचार्य

साउथ हावड़ा

मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में जयाचार्य का 144वां निर्वाण दिवस प्रेक्षा विहार में साउथ हावड़ा भी जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा मनाया गया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- संयम और तप में पराक्रम करने वाला साधक साधना को उज्वल बनाता है। जयाचार्य ने अपनी तपस्या व संयम के द्वारा जीवन को साधना के शिखर तक पहुँचाया। वे आचार्य भिक्षु के भाष्यकार व साम्यवाद के सूत्रधार थे। वे धर्म संघ के कल्पवृक्ष थे। वे साहित्यकार प्रवचनकार, कुशल प्रशासक थे। उन्होंने अपने जीवन काल में साढ़े तीन लाख पद्यों की संरचना कर

राजस्थानी साहित्य भंडार को समृद्ध किया। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। इस अवसर पर महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने चतुर्थ आचार्य जयाचार्य को भावांजलि अर्पित करते हुए कहा - जयाचार्य ने तत्कालीन अनेक स्थितियों का परिवर्तन किया। हमारा श्रद्धामय उपहार तभी होगा जब हम मर्यादाओं का पालन करेंगे। श्रावक निष्ठा पत्र हमारा मर्यादा पत्र है। महासभा के महामंत्री विनोद बैद, इचलकरंजी से समागत जवाहरलाल भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किये। स्वागत भाषण साउथ हावड़ा सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफणा ने दिया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री बसंत पटावरी ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

तप अनुमोदना कार्यक्रम का आयोजन

चेंबूर। साध्वी राकेशकुमारी जी आदि ठाणा ४ के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन के विशाल प्रांगण में पर्युषण महापर्व का तीसरा दिवस सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया। अनिक आच्छा ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साध्वी राकेशकुमारीजी ने कहा- "सामायिक की साधना कषाय मुक्ति की सर्वोच्च साधना है। आत्मविकास की पृष्ठभूमि एवं सुख-शांति की चाबी प्राप्त करने का राज है सामायिक। अध्यात्म में प्रवेश पाने व मोक्ष पथ का पहला पगतिता है सामायिक। साध्वी मलयविभाजी ने समता-विषमता पर प्रकाश डालते हुए कहा- जो द्वंद्वों में समताभाव से रहता है उसके सामायिक फलीभूत होती है। साध्वी विपुलयशजी ने गणवेश में बैठे श्रावक-श्राविकाओं को 'अभिनव सामायिक' का प्रयोग कराया।

चातुर्मास का समय होता है तप आराधना का

कांदिवली, मुंबई।

तेरापंथ भवन कांदिवली में साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तप-अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। तप के क्रम में गोरेगांव प्रवासी मंजुला हिरण, नीलम कोठारी, ममना चिप्पड़, बोरीवली प्रवासी उषा सिंघवी, सुनीता हिंगड, मंजु बोथरा का कंठीतप संपन्न हुआ।

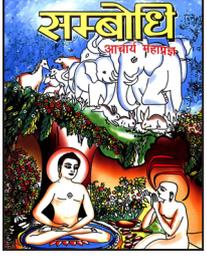
कांता सिंघवी और हेमलता बडोला ने धर्म चक्र तप की आराधना की। कांदिवली प्रवासी कैलाश धोका ने भी कंठी तप की साधना की। सभी तपस्विनी बहनों की वर्धापना हेतु आयोजित तप अभिनन्दन कार्यक्रम में साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी ने कहा - तपस्या का अच्छा

क्रम चल रहा है। आज विशेष तप की आराधना सम्पन्न हो रही है। तपस्विनी बहनों ने अपने आत्मबल से अपना लक्ष्य पूरा किया है। तपस्या आत्मशांति और आनन्द का मार्ग तो है ही, स्वास्थ्य प्रदायक भी है। अनेक शरीर-मन और भावनात्मक रोगों को तप से दूर किया जा सकता है। चातुर्मास का समय तप की साधना के लिए उत्तम है। तप से आत्म पवित्रता बढ़ती है। तप की परम्परा निरन्तर चलती रहे।

साध्वी वृन्द ने नौ रागों में अनुमोदन गीत की सामूहिक प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा, महिला मंडल, युवक परिषद, मलाड एवं कांदिवली द्वारा अभिनंदन पत्र एवं जैन पट्ट से तपस्विनी बहनों का सम्मान किया गया।



संबोधि

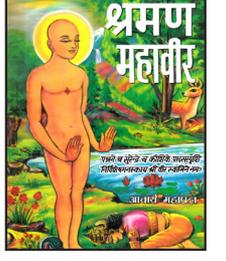


गृहस्थ-धर्म प्रबोधन



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

श्रमण महावीर



बिम्ब और प्रतिबिम्ब

कृतव्रतकर्म :

यह दूसरी प्रतिमा है। इसका कालमान दो महीनों का है। इसमें पूर्वोक्त उपलब्धि के अतिरिक्त प्रतिमाधारी उपासक अनेक शीलव्रत, गुणव्रत, विरमण, प्रत्याख्यान, पौषधोपवास आदि का सम्यक् प्रतिष्ठापन करता है, किन्तु वह सामायिक और देशावकाशिक का अनुपालन नहीं करता।

कृतसामायिक :

यह तीसरी प्रतिमा है। इसका कालमान तीन महीनों का है। इसमें पूर्वोक्त उपलब्धियों के अतिरिक्त प्रतिमाधारी उपासक प्रातः और सायंकाल सामायिक और देशावकाशिक का पालन करता है, परंतु पर्व-दिनों में प्रतिपूर्ण पौषधोपवास नहीं करता।

पौषधोपवासनिरत :

यह चौथी प्रतिमा है। इसका कालमान चार महीनों का है। इसमें पूर्वोक्त उपलब्धियों के अतिरिक्त प्रतिमाधारी उपासक चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या और पूर्णमासी आदि पर्व दिनों में प्रतिपूर्ण पौषध करता है परन्तु 'एकरात्रिक उपासक प्रतिमा' का अनुगमन नहीं करता।

दिन में ब्रह्मचारी (कायोत्सर्ग प्रतिमा)

यह पांचवी प्रतिमा है। इसका कालमान पांच महीनों का है। इसमें पूर्वोक्त उपलब्धियों के अतिरिक्त प्रतिमाधारी उपासक 'एकरात्रिकी उपासक प्रतिमा' का सम्यक् अनुपालन करता है तथा स्नान नहीं करता, दिवाभोजी होता है, धोती के दोनों अंचलों को कटिभाग में टांक लेता है-नीचे से नहीं बांधता, दिवा ब्रह्मचारी और रात्रि में अब्रह्मचर्य का परिमाण करता है।

दिन और रात में ब्रह्मचारी :

यह छठी प्रतिमा है। इसका कालमान छह महीनों का है। इसमें पूर्वोक्त उपलब्धियों के अतिरिक्त प्रतिमाधारी उपासक दिन और रात में ब्रह्मचारी रहता है। किन्तु सचित का परित्याग नहीं करता।

सचित-परित्यागी :

यह सातवी प्रतिमा है। इसका कालमान सात महीनों का है। इसमें पूर्वोक्त उपलब्धियों के अतिरिक्त प्रतिमाधारी उपासक सम्पूर्ण सचित का परित्याग करता है, किन्तु आरंभ का परित्याग नहीं करता।

आरंभ-परित्यागी :

यह आठवी प्रतिमा है। इसका कालमान आठ महीनों का है। इसमें पूर्वोक्त उपलब्धियों के अतिरिक्त प्रतिमाधारी उपासक आरंभ-हिंसा का परित्याग करता है, किन्तु प्रेष्यारंभ का परित्याग नहीं करता।

प्रेष्य-परित्यागी :

यह नौवी प्रतिमा है। इसका कालमान नौ महीनों का है। इसमें पूर्वोक्त उपलब्धियों के अतिरिक्त प्रतिमाधारी उपासक प्रेष्य आदि हिंसा का परित्याग करता है, किन्तु उद्दिष्टभक्त का परित्याग नहीं करता।

उद्दिष्टभक्त-परित्यागी :

यह दसवी प्रतिमा है। इसका कालमान दस महीनों का है। इसमें पूर्वोक्त उपलब्धियों के अतिरिक्त प्रतिमाधारी उपासक उद्दिष्ट भोजन का परित्याग करता है। वह सिर को क्षुर से मुंडवा लेता है या चोटी रख लेता है। घर के किसी विषय में पूछे जाने पर जानता हो तो कहता है- 'मैं जानता हूँ' और न जानता हो तो कहता है- 'मैं नहीं जानता।' (क्रमशः)

वहां का सामूहिक वातावरण देख लुहार मौन हो गया। वह कुछ आगे बढ़ा। भगवान् के जैसे-जैसे निकट गया, वैसे-वैसे उसका मानस आंदोलित हुआ और वह सदा के लिए शांत हो गया।

भगवान् ने अपने तीर्थकर-काल में अन्धविश्वास के उन्मूलन का तीव्र प्रयत्न किया। क्या वह इन्हीं अन्धविश्वासपूर्ण घटनाओं की प्रतिक्रिया नहीं है?

३. भगवान् वैशाली से विहार कर वाणिज्यग्राम जा रहे थे। बीच में गंडकी नदी बह रही थी। भगवान् तट पर आकर खड़े हो गए। एक नौका आई। किनारे पर लग गई। यात्री चढ़ने लगे। भगवान् भी उसमें चढ़ गए। नौका चली। वह नदी पार कर तट पर पहुंच गई। यात्री उतरने लगे। भगवान् भी उतरे। नाविक सब लोगों से उतराई लेने लगे। एक नाविक भगवान् के पास आया और उसने उतराई मांगी। भगवान् के पास कुछ नहीं था, वे क्या देते? उसने भगवान् को रोक लिया। यात्री अपनी-अपनी दिशा में चले गए। भगवान् वहीं खड़े रहे।

कुछ समय बीता। नदी में हलचल-सी हो गई। देखते-देखते नौकाओं का काफिला आ पहुंचा। सैनिक उतरे। उनके मुखिया ने भगवान् को देखा। वह तुरन्त दौड़ा।

भगवान् के पास आ, नमस्कार कर बोला, 'भन्ते! मैं शंखराज का भानजा हूँ। मेरा नाम चित्त है। मैं शंखराज के साथ आपके दर्शन कर चुका हूँ। अभी मैं नौसैनिकों को साथ ले दैत्य कार्य के लिए जा रहा हूँ। भन्ते! आप धूप में क्यों खड़े हैं?'

'भूल का प्रायश्चित्त कर रहा हूँ।'

'भूल कैसी?'

'मैंने गंडकी नदी नौका से पार की। नौका पर चढ़ते समय मुझे नाविकों की अनुमति लेनी चाहिए थी, वह नहीं ली।'

'इसमें भूल क्या है, सब लोग चढ़ते ही हैं।'

'वे लोग चढ़ते हैं, जो उतराई दे पाते हैं। मेरे पास देने को कुछ भी नहीं है और ये उतराई मांग रहे हैं। इसीलिए मुझे अनुमति लिये बिना नहीं चढ़ना चाहिए था।'

चित्त ने सैनिक-भावमुद्रा में नाविकों की ओर देखा। वे कांप उठे। भगवान् ने करुणा प्रवाहित करते हुए कहा, 'चित्त! इन्हें भयभीत मत करो। इनका कोई दोष नहीं है। यह मेरा ही प्रमाद है।'

भगवान् की बात सुन चित्त शांत हो गया। उसने नाविकों को सन्तुष्ट कर दिया। भगवान् का परिचय मिलने पर उन्हें गहरा अनुताप हुआ। भगवान् की करुणा देख वे हर्षित हो उठे। भगवान्, चित्त और नाविक सब अपनी-अपनी दिशा में चले गए।

इस घटना ने भगवान् के सामने एक सूत्र प्रस्तुत कर दिया-अपरिग्रही व्यक्ति दूसरे की वस्तु का उपयोग उसकी अनुमति लिये बिना न करे।

प्रगति के संकेत

भगवान् महावीर अभी अकेले ही विहार कर रहे थे। उनका न कोई सहायक है और न कोई शिष्य। उन जैसे समर्थ व्यक्ति को शिष्य का उपलब्ध होना कोई बड़ी बात नहीं थी। पर वे स्वतंत्रता की अनुभूति किए बिना उसका बन्धन अपने पर डालना नहीं चाहते थे।

१. भगवान् पार्श्व की शिष्य-परम्परा अभी चल रही है। उसमें कुछ साधु बहुत योग्य हैं, कुछ साधना में शिथिल हो चुके हैं और कुछ साधुत्व की दीक्षा छोड़ परिव्राजक या गृहवासी बन चुके हैं।

उत्पल पार्श्व की परम्परा में दीक्षित हुआ। उसने दीक्षाकाल में अनेक विद्याएं अर्जित कीं। वह दीक्षा को छोड़ परिव्राजक हो गया। वह अस्थिक-ग्राम में रह रहा है। अष्टांग निमित्त विद्या पर उसका पूर्ण अधिकार है। (क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

-आचार्यश्री महाश्रमण समाधि-वृद्धि का प्रयोग



कायोत्सर्ग, अन्तर्यत्रा, दीर्घश्वास प्रेक्षा, चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा आदि रक्षा ध्यान पद्धति के काल-प्रतिबद्ध प्रयोग हैं। एक निश्चित समय तक इनका अभ्यास किया जा सकता है, निरंतर नहीं किया जा सकता। समता, जागरूकता, निवृत्तियुक्त प्रवृत्ति ये प्रेक्षाध्यान के काल अप्रतिबद्ध प्रयोग हैं। इनका प्रयोग निरंतर किया जा सकता है।

समता का अर्थ है-राग द्वेषमुक्त क्षण में जीना। यही धर्म है, यही अहिंसा है और यही ध्यान है। प्रेक्षा के साधक की गमन, शयन, भोजन बातचीत आदि सभी क्रियाएं राग-द्वेष के विकल्पों से मुक्त और प्रेक्षा का साधक मृत क्रिया नहीं, सजीव क्रिया करता है। हर क्रिया के साथ उसकी चेतना जुड़ी हुई रहती है। वह चलते समय केवल चलने, बोलते समय केवल बोलने और खाते समय केवल खाने का अभ्यास करता है। यह भाव-क्रिया या जागरूकता का प्रयोग है।

प्रेक्षा का साधक निवृत्तिप्रधान प्रवृत्ति का अभ्यास करता है। उसकी हर प्रवृत्ति पर निवृत्ति का अंकुश रहता है। अनावश्यक न सोचना, अनावश्यक न बोलना, अनावश्यक शारीरिक चेष्टा न करना, निवृत्ति- प्रधान प्रवृत्ति का लक्षण है। कुछ साधक दिन में 1-2 घंटे मौन का अभ्यास करते हैं। यह मौन का एक प्रकार है। मौन का दूसरा प्रकार है अनावश्यक न बोलना बिना जरूरत एक शब्द का भी प्रयोग न करना। आवश्यकतावश बोलते समय भी अनावश्यक जोर से न बोलना, धीरे बोलना।

काल-अप्रतिबद्ध प्रेक्षाध्यान के प्रयोग को अपनाकर हम दैनिक जीवन में प्रेक्षाध्यान को प्रतिष्ठित कर सकते हैं।

बन्धन-मुक्ति का प्रयोग

संसार-परिश्रमण का कारण है आश्रव। उससे कर्म का संचय होता है। उसका विपरीत तत्त्व है निर्जरा। उससे कर्म-संचय रिक्त होता है। इन दोनों के मध्य एक तत्त्व और है, वह है संवर। उसका अर्थ है कर्म-संचय को रोकना। संसार-परिश्रमण से मुक्ति पाने के लिए संवर और निर्जरा इन दोनों की आराधना आवश्यक है। संवरविहीन निर्जरा का बहुत मूल्य नहीं होता। उस निर्जरा की शक्ति प्रबल होती है। जिसकी आधारशिला संवर होता है।

आगम-साहित्य में निर्जरा के बारह भेद बतलाये गए हैं। उनमें बारहवां भेद है-व्युत्सर्ग। व्युत्सर्ग छोड़ने का प्रयोग है, त्याग का प्रयोग है, बन्धन-मुक्ति का प्रयोग है। आत्मा के अतिरिक्त जो कुछ भी तत्त्व है उसको छोड़ना व्युत्सर्ग है अथवा यह भी कहा जा सकता है कि व्युत्सर्ग अकेला बनने का प्रयोग है। वह परावलम्बन से मुक्त होकर स्वावलम्बन को स्वीकारने का प्रयोग है।

व्युत्सर्ग के मुख्य भेद दो हैं द्रव्य-व्युत्सर्ग और भाव-व्युत्सर्ग। द्रव्य व्युत्सर्ग का सम्बन्ध मुख्यतः स्थूल अथवा बाह्य जगत् से है। भाव व्युत्सर्ग का सम्बन्ध मुख्यतः सूक्ष्म अथवा आन्तरिक जगत् से प्रतीत होता है। द्रव्य व्युत्सर्ग के चार प्रकार हैं-गण-व्युत्सर्ग, शरीर-व्युत्सर्ग, उपधि-व्युत्सर्ग और भक्तपान-व्युत्सर्ग। जैन परम्परा में दो प्रकार को साधना मान्य रही है वैयक्तिक साधना और संघबद्ध साधना। संघीय साधना को बहुत मूल्यवत्ता है। संघ के सहारे साधक बहुत आगे बढ़ सकता है। संघ में सारणा-वारणा हो सकती है। शारीरिक अस्वास्थ्य और मानसिक अस्वास्थ्य की स्थितियों में संघ का आश्रय, सहारा और विश्वास प्राप्त होता है। यदि ऐसा न हो तो फिर संघीय साधना की मूल्यवत्ता पर प्रश्नचिह्न लग जाता है। साधना-जीवन में जहां संघ का महत्त्व है वहीं एक भूमिका में संघ को छोड़ने का भी महत्त्व है। एकाकी साधना का भी बड़ा मूल्य है। संघीय साधना के लिए जहां सामान्य योग्यता सम्पन्न व्यक्ति भी योग्य होता है, वहीं वैयक्तिक/एकाकी साधना के लिए विशिष्ट योग्यता अपेक्षित रहती है। उस योग्यता से सम्पन्न साधक गण-व्युत्सर्ग कर एकोऽहमस्मि- 'मैं अकेला हूँ' की विशिष्ट अनुभूति कर सकता है। रागमुक्तता व अप्रतिबद्धता की दिशा में सही ढंग से आगे बढ़ सकता है।

शरीर साधना का साधन है। उसके लिए शरीर का भरण-पोषण भी अपेक्षित है किन्तु शरीर के प्रति भी ममत्व नहीं होना वांछनीय है। उसकी साज-सज्जा व विभूषा का भाव त्याज्य है। एक भूमिका में साधना शरीर- निरपेक्ष बन जाती है। अहमन्यः पुद्गलश्चान्यः 'मैं अलग हूँ, शरीर अलग है' का भाव पुष्ट हो जाता है। शरीर की सार संभाल छोड़ देना ही वहां साधना बन जाती है। भगवान ऋषभ की स्तुति में चौबीसी में कहा गया है- 'इम तन सार तजी करी प्रभु केवल पाया'- इस प्रकार शरीर की सार-संभाल छोड़ कर प्रभु ने केवलज्ञान प्राप्त किया। शरीर की पकड़ को छोड़ ममत्व-मुक्त बनने को साधना, शरीर का शिथिलीकरण व स्थिरीकरण कायोत्सर्ग है। इस प्रकार की साधना शरीर के रहते हुए भी उसके व्युत्सर्ग की साधना है। वस्त्र आदि उपकरण साधना में सहायक बनते हैं। विशेष साधना में उनका विसर्जन भी किया जाता है। उपधि का सर्वथा उत्सर्जन साधना का विशेष प्रयोग है।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनिश्री बींजराजजी (बाजोली) दीक्षा क्रमांक : 135

मुनिश्री बड़े त्यागी, विरागी, विनयी, चिन्तनशील और गण-गणी के प्रति पूर्ण आस्थावान थे, साथ ही तपस्वी भी थे। आपने उपवास से लेकर पन्द्रह दिन तक लड़ीबद्ध तप किया। आपकी तप तालिका इस प्रकार है- उपवास/1250, 2/42, 3/58, 4/20, 5/21, 6/4, 7/5, 8/14, 9/3, 10/3, 11/1, 12/3, 13/1, 14/1, 15/1। आपने 16 वर्ष उष्णकाल में आतापना ली।

- साभार: शासन समुद्र -

अक्टूबर 2024

सप्ताह के विशेष दिन

02 अक्टूबर
पक्खी

05 अक्टूबर
आचार्यश्री
कालूराम जी दीक्षा
दिवस

संघीय समाचारों का मुखपत्र



तेरापंथ टाइम्स की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
<https://abtyp.org/prakashan>

समाचार प्रकाशन हेतु ई-मेल करें
abtyp@gmail.com

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्



संघ विकास में जयाचार्य का चिंतन था महत्वपूर्ण

अमराईवाड़ी, ओढव।

साध्वी काव्यलताजी के सान्निध्य में सिंघवी भवन, अमराईवाड़ी में जयाचार्य निर्वाण दिवस के कार्यक्रम का आयोजन साध्वी ज्योतिषशा जी द्वारा मधुर स्वर लहरी से प्रारंभ हुआ। साध्वी सुरभिप्रभा जी एवं साध्वी राहतप्रभा जी ने 'थे लाल लाडला तेरापंथ रा कोहिनूर' गीत के द्वारा अपनी श्रद्धा अर्पित की। साध्वी काव्यलता जी ने अपने उद्बोधन में कहा- जयाचार्य को हम दूसरे भिक्षु के रूप में देख सकते हैं। हमारा संघ विकास के

एक क्षितिज पर पहुंचा है, उसमें जयाचार्य का चिंतन प्रथम स्थान पर था। जयाचार्य उस प्रतिभा का नाम है जिसने शास्त्र सागर का पूर्ण जागरूकता एवं एकाग्रता से आह्वान किया। भगवती जैसे महान आगम का राजस्थानी भाषा में अनुवाद कर धर्म संघ की साहित्य संपदा को वृद्धिगत किया। जयाचार्य एक विलक्षण शास्ता थे जिन्होंने अपने हाथों सुंदर व्यवस्था का सूत्रपात किया। कार्यक्रम में नीतू चोरडिया ने 8 की तपस्या का प्रत्याखान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी ज्योतिषशा जी ने किया।

संक्षिप्त खबर

सोशल मीडिया के सही उपयोग पर कार्यशाला

टिटलागढ़। अभातेममं के निर्देशानुसार समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत महिला मंडल स्थानीय शासकीय उच्च बालिका विद्यालय पहुंची। सर्व प्रथम बच्चों को महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया गया। 'सोशल मीडिया का सही उपयोग' विषय पर पायल जैन अपने विचार रखते हुए कहा कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। जहां सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग हमारे मानसिक एवं व्यावहारिक दोनों के लिए हानिकारक हो सकता है और हम सावधानीपूर्वक सोशल मीडिया का उपयोग नहीं करते हैं तो कई समस्या भी खड़ी हो सकती है, वहीं सोशल मीडिया हमारी प्रतिभा को सामने लाने का भी एक माध्यम बन सकता है। कोषाध्यक्ष पूजा जैन ने बच्चों से योग मुद्रा करवाई। अध्यक्ष बाँबी जैन ने बच्चों से मंगल भावना का प्रयोग करवाया। कार्यक्रम में लगभग 140 बच्चे शामिल हुए।

रक्तदान शिविर का आयोजन

साउथ हावड़ा। तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा स्वेच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन राघव रेसीडेंसी में किया गया। परिषद् अध्यक्ष गगनदीप बैद ने उपस्थित सभी का स्वागत अभिनन्दन किया। शिविर में राघव रेसीडेंसी के अध्यक्ष आशु महाराज ने अपने भाव रखे। शिविर में सम्पूर्ण प्रबंध समिति, कार्यसमिति, विशिष्ट आमंत्रित सदस्य, किशोर मंडल, साधारण सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही। कुल 70 यूनिट का संग्रह किया गया।

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव का आयोजन

उधना। अभातेयुप के अंतर्गत तेयुप उधना द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव का आयोजन भेस्तान क्षेत्र में किया गया। इस शिविर में कुल 45 ब्लड यूनिट एकत्रित किए गए। इस आयोजन में उधना परिषद् की ओर से उधना परिषद् के पदाधिकारी विक्रम पितलिया एवं उनके साथ साथ प्रभारी राकेश डांगी और सह-प्रभारी मनोज डागा, अंकित पितलिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में विशेष छूट

रायपुर। तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा संचालित मानव सेवा हेतु संकल्पित महनीय उपक्रम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, रायपुर द्वारा श्रीमद् जयाचार्य के 144 वें निर्वाण दिवस के अवसर पर दो दिवस हेतु तीन टेस्ट निर्धारित लैब मूल्य से छूट पर प्रदान किये गए। इसके अंतर्गत थायराॅइड, एचबीएनसी, लिपिड प्रोफाइल का कुल 39 जनों द्वारा लाभ लिया गया।

तप से निखरता बाह्य व आन्तरिक सौंदर्य

माड़्या।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी संयमलताजी ठाणा 4 के सान्निध्य में 'महका तप उपवन-मासखमण से' कार्यक्रम में सकल जैन समाज ने तपस्वियों की अनुमोदना की। साध्वी संयमलताजी ने कहा कि हरा आम डाल पर लटक रहा है उसमें न सुगन्ध है, न रस फिर भी उसे तोड़ पलाश के पत्तों के बीच रखा जाता है, उसके ताप से कोमलता, सुगन्ध व रस भी आ जाता है, आम मीठा व सरस हो जाता है। इसी प्रकार तप के तेज से जीवन सरस एवं तेजस्वी बनता है। आज ज्ञानशाला प्रशिक्षिका ललिता भंसाली ने मासखमण किया है। उसके साथ अर्हम आच्छा छोटे से बच्चे ने अपनी टीचर को गुरु दक्षिणा देते हुए 8 की तपस्या की। मूर्तिपुजक साध्वी

संकल्पनिधिजी कार्यक्रम में पधारी, के लिए साध्वी संयमलता जी द्वारा रचित यह प्रसन्नता का विषय है। हम सब गीतों का संगान किया गया। बेंगलौर से मिलकर जिनशासन की खूब प्रभावना करें। तप करने से अपना बाह्य व आन्तरिक सौंदर्य निखार पाता है।

साध्वी मनीषाप्रभा जी ने कहा- तपस्या से सिद्धियां, लब्धियां व उपलब्धियां प्राप्त होती हैं। वासुदेव, चक्रवर्ती एवं इन्द्र की शक्ति को भी हिलाने वाली शक्ति तप में होती है। साध्वी संकल्पनिधिजी म.सा. ने कहा जिस प्रकार चक्रवर्ती 6 खण्डों को जीतकर सम्राट बनता है। उसी प्रकार आत्मा रूपी चक्रवर्ती से 5 इन्द्रिय व मन रूपी छः खण्डों को तपस्या से जीत लेता है। दोनों तपस्वियों



तपस्या से
सिद्धियां, लब्धियां
व उपलब्धियां प्राप्त
होती है।

पधारे प्रेक्षा संगीत सुधा के गायकों के संगीत ने सभा में समा बांध दिया। आच्छा परिवार व भंसाली परिवार ने रोचक प्रस्तुतियां दी। मूर्तिपूजक संघ से फुटरमल जैन व स्थानवासी समाज से विजयराज तलेसरा ने तपस्वी की अनुमोदना की। इस विशिष्ट अवसर पर सभा में 30 तेल, 6 बेलें एवं आयंबिल की अठाई से तप अनुमोदना में अपनी सहभागिता दर्ज कराई। स्वागत भाषण तेयुप अध्यक्ष कमलेश गोखरू ने किया। साध्वी मार्दवश्रीजी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री विनोद भंसाली ने किया।

कौन बनेगा ज्ञानवान का सफल आयोजन

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में रात्रिकालीन कार्यक्रम में कौन बनेगा ज्ञानवान का सफल आयोजन प्रेक्षा विहार में तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा किया गया। कौन बनेगा ज्ञानवान कार्यक्रम का मुख्य विषय था जैन धर्म, तेरापंथ इतिहास एवं सामान्य जानकारी।

इस कार्यक्रम में 24 संभागियों ने भाग लिया जिसमें 11 चयनित संभागी आगे के कार्यक्रम में बढ़े जिसमें अंत में सभी प्रश्नों के उत्तर देकर दो संभागी ज्ञानवान बने।

संवाद क्रम की संपन्नता के

पश्चात आशीर्वचन प्रदान करते हैं हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - जीवन निर्माण में ज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान है। ज्ञान जीवन का श्रृंगार है। ज्ञान जलती हुई मशाल है, ज्ञान विश्व के समस्त पदार्थों को प्रकाशित करता है। जैसे अग्नि ईंधन को भस्म करती है उसी प्रकार ज्ञान रूपी अग्नि कर्मों का क्षय करती है।

ज्ञान के बिना जीवन अधूरा है, अधूरा जीवन खतरनाक होता है इसलिए ज्ञान की आराधना करनी चाहिए। ज्ञान के विकास के लिए प्रतियोगिताएं कराई जाती हैं। कौन बनेगा ज्ञानवान कार्यक्रम बहुत ही रोचक, सरस और ज्ञानवर्धक है।

मुनि कुणाल कुमार जी के सुमधुर गीत के संगान से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभिक संचालन संयोजक मोहित नाहटा ने किया। स्वागत भाषण तेयुप अध्यक्ष गगनदीप बैद ने दिया। आभार ज्ञापन संयोजक जय प्रकाश बांठीया ने किया। कौन बनेगा ज्ञानवान कार्यक्रम को हॉस्ट अध्यक्ष गगन दीप बैद एवं संयोजक प्रवीण बैंगानी, मोहित नाहटा ने किया। कौन बनेगा ज्ञानवान में ज्ञानवान बने दो प्रतियोगियों सुशील बाफना एवं सुकुमाल श्यामसुखा को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के प्रायोजक संदीप - जीतेन्द्र चोपड़ा परिवार का तेयुप द्वारा सम्मान किया गया।

जैन विद्या प्रमाण पत्र वितरण समारोह

सिकंदराबाद।

'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में व जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा सिकंदराबाद के तत्वाधान में डी.वी. कॉलोनी तेरापंथ भवन में जैन विद्या प्रमाण पत्र वितरण समारोह का आयोजन हुआ। स्वागत भाषण व जैन विद्या परीक्षा की विस्तृत जानकारी सीमा नाहर ने दी। अपने वक्तव्य में सभा अध्यक्ष सुशील संचेती

ने सभी केंद्र व सह केंद्र व्यवस्थापिकाओं के कार्य की सराहना की। आंध्र तेलंगाना के जैन विद्या प्रभारी पदमचंद्र दुगड़ ने भी जैन विद्या की गतिविधियों की जानकारी दी।

साध्वी शिवमालाजी ने कहा कि ज्ञान प्राप्त करने का पहला पड़ाव स्वाध्याय है व जैन विद्या परीक्षा से समाज का हर व्यक्ति जुड़ना चाहिए। साध्वी अर्हमप्रभा जी ने सभी को जैन विद्या की परीक्षा देने की प्रेरणा दी। जैन विद्या विज्ञ उपाधि

धारक, जैन विद्या नेशनल रैंकर व उपस्थित सभी जैन विद्या परीक्षार्थियों को सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों द्वारा सम्मानित किया गया।

जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा सिकंदराबाद के द्वारा सभी जैन विद्या की केंद्र व सह केंद्र व्यवस्थापिकाओं को मोमेंटो के द्वारा सम्मानित किया गया। अंत में सुमन चोरडिया ने सभी का आभार व्यापन किया। कार्यक्रम का संचालन जूली बैद ने किया।



अभातेयुप के तत्वावधान में देशभर में हुआ समता की साधना 'अभिनव सामायिक' का प्रयोग

दादर, मुंबई

'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी द्वितीय' ठाणा 5 के सान्निध्य में पर्युषण पर्व का तीसरा दिन सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया। अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद दादर द्वारा आयोजित अभिनव सामायिक के उपक्रम में सर्वप्रथम साध्वी प्रियंवदा जी ने त्रिपदी वंदना का प्रयोग कराया। तत्पश्चात् साध्वी प्रेरणाश्री जी ने जप का प्रयोग करवाया। साध्वी ऋद्धियशाजी द्वारा ध्यान का प्रयोग संपादित किया गया। पर्युषण के अंतर्गत साध्वी मृदुयशाजी ने सामायिक दिवस पर सारगर्भित विचार व्यक्त किये। साध्वी विद्यावतीजी ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा का वर्णन आगे बढ़ाया। साध्वीश्री ने सामायिक विषय को संपादित करते हुए कहा- विभाव से स्वभाव में आना सामायिक है। चंचलता से स्थिरता की ओर बढ़ना सामायिक है। विषमता से समता की श्रेणी पर आरोहण करना सामायिक है। विशिष्ट श्रावकों की सामायिक का उदाहरण देते हुए सबको अधिकाधिक सामायिक करने की प्रेरणा भी दी गई। कार्यक्रम का संचालन साध्वी प्रियंवदाजी ने किया।

मदुरै

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, मदुरै ने पर्युषण महापर्व के तीसरे दिन स्थानीय तेरापंथ भवन में अभिनव सामायिक का आयोजन किया। प्रवक्ता उपासक पदमचंद्र आँचलिया एवं सहयोगी उपासक संदीप दूगड़ की उपस्थिति में लगभग 60 सामायिक हुई। उपासक ने बताया कि जैन धर्म में सामायिक का विशेष महत्व माना जाता है। सामायिक को समता की साधना और आत्मा को निर्मल करने का महत्वपूर्ण उपक्रम बताया गया है। उपासक द्वय ने अभिनव सामायिक का बड़े ही सुंदर तरीके से प्रयोग करवाया।

गंगाशहर

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, गंगाशहर ने पर्युषण महापर्व के तीसरे दिन अभिनव सामायिक का आयोजन तेरापंथ भवन में किया। साध्वी चरिताथ्रप्रभाजी, साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में कुल 1345 सामायिक हुई। परिषद अध्यक्ष महावीर फलोदिया ने बताया कि अभातेयुप की शाखाएं पूरे देश में प्रतिवर्ष पर्युषण महापर्व के

दौरान अभिनव सामायिक का आयोजन करवाती है। साध्वी चरिताथ्रप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में बताया कि जैन धर्म में सामायिक का विशेष महत्व माना जाता है। सामायिक को समता की साधना और आत्मा को निर्मल करने का महत्वपूर्ण उपक्रम बताया गया है। सामायिक में व्यक्ति 48 मिनट के लिए सारे सांसारिक कार्यों का त्याग करके अध्यात्म साधना में लीन हो जाता है।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने बताया कि तेरापंथ युवक परिषद द्वारा आयोजित यह अभिनव सामायिक एक विशेष प्रारूप के अनुसार सामूहिक तौर पर सुनिश्चित प्रयोग के द्वारा की जाती है तथा इस सामूहिक प्रयोग और आभामंडल के प्रभाव से हमारी आत्मा और भी ज्यादा निर्मल बनती है।

साध्वी रूचिप्रभा जी ने अभिनव सामायिक के अंतर्गत त्रिपदी वंदना, त्रिगुप्ति की साधना, मंत्रों का जाप, ध्यान एवं स्वाध्याय कराया।

सरदारपुरा

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, सरदारपुरा द्वारा अभिनव सामायिक का आयोजन मेघराज तातेड भवन में साध्वी प्रमोदश्री जी ठाणा- 5 एवं तेरापंथ भवन अमर नगर में साध्वी जिनबाला जी ठाणा-4 के सान्निध्य में रखा गया। मेघराज तातेड भवन, सरदारपुरा में 200 श्रावक-श्राविकाओं ने एवं तेरापंथ भवन अमर नगर में 300 श्रावक-श्राविकाओं ने अभिनव सामायिक में भाग लिया। साध्वीश्री द्वारा त्रिपदी वंदना, जप का प्रयोग करवाया गया। स्वाध्याय योग में साध्वी श्री ने सामायिक का महत्व बताया। चौथे भाग में श्रावक-श्राविकाओं ने त्रिगुप्ति साधना का प्रयोग किया।

नालासोपारा, मुंबई

तेयुप नालासोपारा द्वारा प्रवक्ता उपासक महावीर संचेती, सहयोगी उपासक मिश्रीमल नंगावत, सहयोगी उपासक अनिल चंडालिया के निर्देशन में अभिनव सामायिक का आयोजन मारू हॉल, नालासोपारा पूर्व में किया गया। तेयुप अध्यक्ष मनोज सोलंकी ने सभी का स्वागत किया। प्रवक्ता उपासक महावीर संचेती ने तीर्थंकर स्तुति से कार्यक्रम की शुरुआत की। महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति हुई। तत्पश्चात उपासक अनिल चंडालिया ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ विधिवत

त्रिपदी वंदना करवाई। प्रवक्ता पासक महावीर संचेती ने अभिनव सामायिक का महत्व बताया। उपासक मिश्रीमल नंगावत ने बताया सामायिक वह अनुष्ठान है जिससे व्यक्ति स्वयं समता के भाव में सध जाता है और जैसे-जैसे समता का विकास होता है व्यक्ति का व्यक्तित्व अपने आप निखरने लगता है। अभिनव सामायिक में नालासोपारा श्रावक समाज ने 126 सामायिक की। आभार ज्ञापन तेयुप संगठन मंत्री अर्पित ढालावत ने किया।

भीलवाड़ा

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् संस्था भीलवाड़ा ने तेरापंथ भवन, तेरापंथ नगर में साध्वी कीर्तिलताजी ठाणा-4 के सान्निध्य में अभिनव सामायिक कार्यक्रम का आयोजन किया। साध्वीश्री जी ने सामायिक के महत्व समझाते हुए बताया कि 48 मिनट की सामायिक से हम अपने कर्मों की विपुल निर्जरा कर सकते हैं। लगभग 1000 श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक की साधना की।

विजयनगर

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर, राजाजीनगर, राजाराजेश्वरी नगर, HBST हनुमंत नगर एवं यशवंतपुर ने सामूहिक रूप में विजयनगर स्थित अर्हम भवन में साध्वी सिद्धप्रभा जी ठाणा-4 के सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण के तृतीय दिन सामायिक दिवस के अवसर पर अभिनव सामायिक कार्यक्रम का आयोजन किया। साध्वी श्री ने कहा- वर्तमान समय में हर व्यक्ति तनाव, मानसिक परेशानियों से गुजर रहा है, सामायिक के दौरान एक घंटे का समय पर से स्व की और ले जाता है। सामायिक का तात्पर्य है अपने में रमण करना, अपने साथ जीना। साध्वी श्री ने आगे कहा- उपवास में भूख सहनी होती है। आतापना में ताप सहना पड़ता है किंतु सामायिक में तो कोई कष्ट सहन नहीं करना पड़ता है। अभिनव सामायिक की शुरुआत आचार्य श्री तुलसी ने जन सामान्य में एकरूपता से समता की साधना के विकास हेतु की। साध्वी आस्थाप्रभाजी ने भगवान महावीर की भव परम्परा का वर्णन किया तथा अभिनव सामायिक के अंतर्गत त्रिपदी वंदना, जप, ध्यान, स्वाध्याय के क्रमशः प्रयोग कराए। तेयुप विजयनगर, राजाजीनगर, राजाराजेश्वरी नगर,

एचबीएसटी हनुमंतनगर, यशवंतपुर की टीम ने सामूहिक मंगलाचरण गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथ युवक परिषद् राजाराजेश्वरी नगर अध्यक्ष विकास छाजेड, हनुमंत नगर अध्यक्ष कमलेश गन्ना, राजाजीनगर अध्यक्ष कमलेश चौरडिया सबकी ओर से विजयनगर तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने उपस्थित मुख्य अतिथि युवा गौरव विमल कटारिया अभातेयुप परिवार, सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों, श्रावक-श्राविका समाज का स्वागत अभिनंदन किया। विजयनगर शाखा प्रभारी रोहित कोठारी, मैं हूँ सामायिक साधक राष्ट्रीय प्रभारी राकेश दक ने अपने विचार व्यक्त किए। अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने सामायिक द्वारा समता की साधना से जीवन में बदलाव की बात कही तथा युवाओं को सामायिक अभ्यास की प्रेरणा दी। कार्यक्रम पूर्व सामायिक हेतु नोखा निवासी बैंगलोर प्रवासी हनुमानमल, संजय, मनोज बैद परिवार के सहयोग से परिषदों द्वारा मुख वास्त्रिका एवं माला का वितरण किया गया। कार्यक्रम के संयोजक रोनाक चौरडिया, सह संयोजक मनीष शामसुखा, विकास बेगवानी का विशेष श्रम रहा। तेयुप विजयनगर मंत्री संजय भटेवरा ने कुशल मंच संचालन एवं आभार ज्ञापित किया।

पंचकूला, हरियाणा

तेरापंथ भवन के प्रांगण में अभातेयुप निर्देशानुसार तेयुप पंचकूला ने प्रवक्ता उपासक पारसमल दूगड़ एवं सहयोगी उपासक रमेश कुमार सिंघवी की उपस्थिति में अभिनव सामायिक का आयोजन किया। उपासक द्वय ने बताया कि सामायिक सामाजिक भावना से नहीं, धार्मिक और आध्यात्मिक भावना से करनी चाहिए। सामायिक जप, तप, ध्यान और स्वाध्याय से की जाए तो हमारे जीवन में क्रोध, मान, माया और लोभ पर नियंत्रण रह सकता है। अतः हमें सामायिक सदैव करनी चाहिए। लगभग 74 सामायिक का सफल आयोजन हुआ।

इरोड

अभातेयुप के निर्देशन में अभिनव सामायिक कार्यशाला का भव्य आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में किया गया। अभिनव सामायिक का आयोजन मुनि रश्मि

कुमार जी ने नमस्कार महामंत्र एवं सामायिक पाठ के साथ प्रारम्भ कर जप, ध्यान योग, त्रिगुप्ति साधना का प्रयोग करवाकर संपन्न करवाया। इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष महेन्द्र भंसाली ने सभी का स्वागत और मंत्री ऋषभ नखत द्वारा आभार प्रकट किया गया।

रायपुर

जीवन को कलापूर्ण और सफल बनाने के लिए विषमता में भी समता से जीना अर्थात् सामायिक में रमण करना जरूरी है। परिवार और समाज में नाना प्रकार के स्वभाव और संस्कार के व्यक्ति होते हैं, उस स्थिति में समता और सामंजस्य का अभ्यास बहुत जरूरी होता है। सामायिक हमें समता में रहने का अभ्यास कराती है। जिसका मन स्वस्थ और सन्तुलित होता है वह प्रतिकूल परिस्थिति को भी अनुकूल बना सकता है। परिवार और समाज के मुखिया के लिए समता और शान्ति की साधना जरूरी है, तभी वे नेतृत्व की जिम्मेदारी को सफलता से पूरा कर सकते हैं। उक्त उद्गार 'पर्युषण महापर्व' के तृतीय दिवस सामायिक दिवस पर मुनि सुधाकर जी ने कहे। मुनि नरेश कुमार जी ने गीतिका का संगान किया। तेयुप, रायपुर द्वारा आयोजित अभिनव सामायिक में सम्पूर्ण तेरापंथ समाज के साथ विशेष रूप से तेयुप, रायपुर सदस्य पंकज बैद, नवीन दुगड़, योगेश बाफना, संदीप बोथरा, निर्मल गांधी, गौरव दुगड़, वीरेंद्र डागा की सहभागिता रही। मंगलाचरण तेमम व तेयुप सदस्यों द्वारा किया गया।

इस्लामपुर

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् इस्लामपुर द्वारा पर्युषण महापर्व का तृतीय दिवस सामायिक दिवस के अंतर्गत आयोजित अभिनव सामायिक का क्रम उपासिका अंजू देवी घोड़ावत एवं उपासिका अंजू देवी सिंधी की उपस्थिति में आयोजित किया गया। उपासिका द्वय ने नमस्कार महामंत्र का सामूहिक मंत्रोच्चारण करवाया। तत्पश्चात् अभिनव सामायिक का विधि पूर्वक आयोजन किया गया।

उन्होंने कहा -समता की साधना मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर होने की लिफ्ट है। उन्होंने सामायिक पाठ के अर्थ का विश्लेषण करते हुए सामायिक की सही विधि पर प्रकाश डाला। अभातेयुप सदस्य विकास बोथरा की गरिमामय उपस्थिति रही।



अभातेयुप के तत्वावधान में देशभर में हुआ समता की साधना 'अभिनव सामायिक' का प्रयोग

हुबली

अभातेयुप के तत्वावधान में अभिनव सामायिक कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद हुबली द्वारा तेरापंथ भवन में किया गया। समणी कुसुमप्रज्ञा जी एवं समणी जिज्ञासाप्रज्ञा जी के सान्निध्य में समस्त तेरापंथ श्रावक समाज ने इस अभिनव सामायिक कार्यशाला में गणवेश में पधारकर इसे सफलतम बनाया। समणी कुसुम प्रज्ञा जी ने सुंदर तरीके से अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया। उन्होंने प्रेक्षाध्यान, जप, सामायिक के महत्व बताते हुए सबको प्रतिदिन सामायिक करने की प्रेरणा दी।

इचलकरंजी

तेरापंथ युवक परिषद इचलकरंजी द्वारा 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभाजी आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में अभिनव सामायिक का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ किया एवं अपने उद्बोधन में अभिनव सामायिक का महत्व सभी श्रावकों को बताया। साध्वी चेलनाश्रीजी ने त्रिपदी वंदना का प्रयोग और चौबीसी गीत का संगान करवाया। साध्वी निर्भयप्रभाजी ने अ.सि.आ.उ.सा. का जाप एवं साध्वी उदितप्रभाजी ने श्वास प्रेक्षा का प्रयोग करवाया। 'शासनश्री' साध्वी मंजुरेखाजी ने बताया कि जैन धर्म में सामायिक का विशेष महत्व माना जाता है। कार्यक्रम के संयोजक अक्षय खिंवरसरा एवं सहसंयोजक अंकित छाजेड़ ने सराहनीय श्रम नियोजित किया। तेयुप अध्यक्ष अनिल छाजेड़ ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में लगभग 180 सामायिक हुई।

साउथ हावड़ा

मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में पर्युषण पर्व के तीसरे दिन सामायिक दिवस पर अभिनव सामायिक कार्यक्रम का भव्य आयोजन प्रेक्षा विहार में तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में उत्तर हावड़ा, कलकत्ता मेन, दक्षिण कलकत्ता, पूर्वांचल, उत्तर कलकत्ता टोलीगंज, बेहाला, लिलुआ, हिंदमोटर की शाखा परिषदों ने अपनी सहभागिता दर्ज की। अभिनव सामायिक में 1500 से अधिक भाई-बहनों ने हिस्सा लिया। अभिनव सामायिक का प्रयोग मुनि जिनेश कुमार जी व मुनि परमानंदजी ने

कराया। अभिनव सामायिक के संदर्भ में प्रेरणा प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - प्रत्येक व्यक्ति सफलता चाहता है। सफलता का सूत्र है वर्तमान में जीना। वर्तमान में जीने का तात्पर्य हुआ समता से जीना। समता की साधना का उपाय सामायिक है। सामायिक अहं से अहंम्, मृत्यु से अमरत्व, विभाव से स्वभाव की यात्रा है। नमस्कार महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। स्वागत वक्तव्य ते.यु.प. साउथ हावड़ा के अध्यक्ष गगनदीप बैद ने दिया। अभिनव सामायिक कार्यक्रम के बंगाल संयोजक नमन जम्मड ने अपने विचार व्यक्त किये। आभार ज्ञापन सहमंत्री राहुल दुगड़ ने किया। अभिनव सामायिक प्रायोजक दीपक बोथरा थे।

पीलीबंगा

अभातेयुप निर्देशित अभिनव सामायिक का प्रयोग साध्वी पुनीतयशा जी द्वारा करवाया गया। त्रिपदी वंदना, जप प्रयोग, ध्यान कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाया गया। स्वाध्याय के क्रम में सामायिक के महत्व और उससे संबंधित प्रसंगों के बारे में बताया। कार्यक्रम में 108 सामायिक हुई। स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अंजन बोथरा ने कार्यक्रम में आए सम्पूर्ण श्रावक समाज का स्वागत किया।

बेंगलुरु

अभातेयुप निर्देशित अभिनव सामायिक का आयोजन तेयुप बेंगलुरु द्वारा साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में किया गया। विजय गीत का संगान प्रज्ञा संगीत सुधा के साथियों ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा ने किया। तेयुप अध्यक्ष विमल धारीवाल ने सभी का स्वागत किया। शाखा प्रभारी अमित दक ने संस्कृत श्लोक के माध्यम से सामायिक के महत्व को उजागर किया। साध्वी संगीतप्रभा जी ने अभिनव सामायिक के प्रयोक्ता गणाधिपति गुरुदेव तुलसी की स्मृति करते हुए चार चरणों की संपूर्ति के साथ सामायिक का सुंदर प्रयोग कराया। तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री राकेश चोरड़िया ने त्रिपदी वंदना का प्रैक्टिकल प्रयोग करके दिखाया। मुख्य प्रवचन में साध्वी उदितयशा जी ने सामायिक की व्याख्या की। साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने सामायिक दिवस पर लोगों को प्रेरणा देते हुए कहा शुद्ध सामायिक करने वाले मिश्रीमल सुराणा, विजय चंद पटवा, मोहनलाल खटेड़ आदि के उदाहरणों

के माध्यम से सभी को शुद्ध सामायिक करने की प्रेरणा दी। तेयुप बेंगलुरु की संपूर्ण प्रबंध मंडल, तेयुप सदस्यों, किशोर मंडल के सदस्यों एवं संपूर्ण बेंगलुरु समाज के द्वारा अधिकाधिक संख्या में सामायिक का प्रत्याख्यान किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथ सभा, महिला मंडल एवं सभी संघीय संस्थाओं का संपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री राकेश चोरड़िया ने किया।

भिवानी

मुनि देवेन्द्र कुमार जी के सान्निध्य में अभातेयुप के तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद भिवानी द्वारा अभिनव सामायिक का आयोजन तेरापंथ भवन भिवानी में हुआ। नवकार मंत्र द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात मुनि देवेन्द्र कुमार जी ने त्रिपदी वंदना, ध्यान, जप, स्वाध्याय द्वारा अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया। तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी ने सामायिक दिवस पर प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा समता का अर्थ है सामायिक। गुरुदेव तुलसी का एक महत्वपूर्ण अवदान है अभिनव सामायिक। स्वयं को देखने का दर्पण है सामायिक। भीतर की ओर जाने का मार्ग, सुख की अनुभूति और आत्म प्रकाश का दर्शन है सामायिक। कार्यक्रम में विभिन्न सभा संस्थाओं के पदाधिकारी एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

श्रीदुंगरगढ़

पर्युषण महापर्व के तीसरे दिन अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद श्रीदुंगरगढ़ के तत्वावधान में अभिनव सामायिक का आयोजन श्रीदुंगरगढ़ सेवा केंद्र में किया गया। तेयुप अध्यक्ष मनीष नौलखा, पूर्व अध्यक्ष प्रदीप पुगलिया, सह मंत्री विवेक भंसाली ने विजय गीत द्वारा मंगलाचरण किया। सेवा केंद्र व्यवस्थापिका 'शासनश्री' साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि सामायिक का अर्थ है समता की साधना, आत्मा में रहना और अपनी आत्मा में स्थिर होने का अभ्यास करना। सुख-दुःख में, लाभ-हानि में, जीवन-मरण में, निंदा-प्रशंसा में, अनुकूल विषम परिस्थितियों में, सम भाव से रहना, यही समता भाव सामायिक है। साधना के क्षेत्र में सर्वाधिक मूल्यवान है समता। सामायिक से भाव शुद्धि, चित्त समाधि, कषाय मंदता, मन की एकाग्रता का विकास होता है। साध्वी सुमंगलाश्रीजी ने उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन किया और

अभिनव सामायिक का सुंदर प्रयोग त्रिपदी वंदना, जप, स्वाध्याय आदि के साथ करवाया। साध्वी ऋजुप्रज्ञा जी और साध्वी सम्यक्त्वप्रभा जी ने सामायिक दिवस पर अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किये।

फरीदाबाद

अष्ट दिवसीय महापर्व के तृतीय दिवस अभातेयुप निर्देशित अभिनव सामायिक का कार्यक्रम उपासक मोतीलाल जीरावाला एवं मनोज कुमार ओस्तवाल के उपस्थिति में तेरापंथ भवन फरीदाबाद के प्रांगण में आयोजित हुआ। इस अवसर पर उपासकद्वय ने सामायिक की महत्ता एवं उससे प्राप्त होने वाले लाभ से सभी को अवगत कराया। इस अवसर पर कुल 93 सामायिक की गई।

उदयपुर

अभातेयुप द्वारा निर्देशित और तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर द्वारा आयोजित अभिनव सामायिक के कार्यक्रम में 500 से अधिक लोगों ने सामायिक की। सामायिक अनमोल है, सम्पूर्ण राज्य, समूची सृष्टि की दौलत भी भेंट कर दी जाए तो भी 48 मिनट की एक सामायिक को खरीदा नहीं जा सकता। यह विचार 'शासनश्री' मुनि सुरेशकुमारजी ने पर्युषण पर्व के तीसरे दिन सामायिक दिवस पर विशाल धर्मसमा को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा- समता का भाव ही सामायिक है। दो घड़ी सावद्य योग का त्याग निर्जरा का महान उपक्रम है। मुनि सम्बोध कुमार जी 'मेधांश' ने कहा- आज की दिनचर्या तनाव परोस रही है। सामायिक तनाव के दौर में साम्यभाव को जन्म देता है। मुनि सिद्धप्रज्ञजी ने अहिंसा का प्रतीक पर्युषण पर्व पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा- पर्युषण पर्व के आठ दिनों का आधार है अहिंसा। संसार हिंसा से और अध्यात्म अहिंसा की बुनियाद पर चलता है। साध्वी डॉ. परमयशाजी ने अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा आयोजित अभिनव सामायिक के विविध प्रयोग करवाते हुए भगवान महावीर के 27 भवों के अनुक्रम में मरीचि कुमार के रोचक प्रसंग पर उद्बोधन दिया। साध्वी विनम्रयशाजी, साध्वी मुक्ताप्रभाजी, साध्वी कुमुदप्रभाजी ने त्रिगुप्ति साधना, ध्यान, मंत्र के साथ स्वाध्याय योग का प्रयोग करवाया। तेरापंथ महिला मंडल ने समूह गीत की प्रस्तुति दी। तेयुप पदाधिकारी एवं सदस्यों ने परमेष्ठि वंदना का संगान किया। तेयुप अध्यक्ष

भूपेश खमेसरा ने अभिनव सामायिक की जानकारी देते हुए सभी को नित्य सामायिक करने के लिए प्रेरित करते हुए सभी का स्वागत किया एवं अर्थ प्रदाताओं और पधारें हुए सभी श्रावक समाज के प्रति आभार व्यक्त किया। मंच संचालन तेरापंथ सभा मंत्री अभिषेक पोखरणा व तेयुप मंत्री साजन मांडोत ने किया।

बड़ौदा

सामायिक दिवस पर अभातेयुप के निर्देशन में अभिनव सामायिक का भव्य आयोजन साध्वी पंकजश्रीजी के सान्निध्य में किया गया। साध्वी शारदाप्रभाजी द्वारा सभी को अभिनव सामायिक का प्रयोग कराया गया। सामायिक में त्रिपदी वंदना, ध्यान, स्वाध्याय एवं जप द्वारा सामायिक का प्रयोग किया गया। साध्वी पंकजश्रीजी द्वारा सामायिक का महत्व समझाया गया। तेरापंथ युवक परिषद द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

सिकंदराबाद

'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में अभिनव सामायिक का कार्यक्रम राजा राजेश्वरी गार्डन, सिकंदराबाद में मनाया गया। साध्वीश्री ने सामायिक की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए सभी को सामायिक करने की प्रेरणा दी। सभी श्रावक-श्राविकाओं को आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा प्रदत्त 'शनिवार की सामायिक' की ओर विशेष प्रयत्न करने की प्रेरणा दी। तेयुप अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने अभिनव सामायिक के अवसर पर सभी को इस प्रयोग को जीवन में उतारने का आव्हान किया। साध्वी अमितरेखा जी एवं साध्वी अहमप्रभा जी ने अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया। खुशाल भंसाली ने सीपीएस एवं जिज्ञासा समाधान की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन लक्ष्मीपत बैद ने किया।

दक्षिण मुंबई

महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल में मुनि कुलदीप कुमार जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व का तीसरा दिन सामायिक दिवस के रूप में मनाया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। मुनि मुकुल कुमार जी सामायिक का सामूहिक प्रत्याख्यान करवाया। त्रिपदी वंदना, नवकार मंत्र का सामूहिक जप कराया गया। सामायिक में करणीय और अकरणीय कार्य, सामायिक की विधि एवं दोषों की के बारे में जानकारी दी गई।



अभातेममं के तत्वावधान में चित्त समाधि शिविर के विभिन्न कार्यक्रम

तनाव से दूर रहकर आत्म शांति और आनंद की अनुभूति ही है चित्त समाधि

पाली

तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ महिला मंडल, पाली द्वारा मुनि सुमति कुमार जी ठाणा -3 के सान्निध्य में चित्त समाधि शिविर एवं तप अभिनंदन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनि सुमति कुमार जी ने कहा कि चित्त समाधि का अर्थ है कि हमारे मन में समाधि बनी रहे अर्थात् मन में शांति बनी रहे। मुनिश्री ने कहा कि हमें सहिष्णुता और विनम्रता की साधना करनी चाहिए। हमारे भीतर सामंजस्य की भावना हो, एक दूसरे के विचारों को समझने का प्रयास करें। मुनिश्री ने आगे बताया कि जिसका मनोबल मजबूत होता है वही तप कर सकता है। तप से अशुभ कर्म कट जाते हैं, आत्मा हल्की बन जाती है। तपस्या की कोई उम्र नहीं होती है तपस्या तो भावना से जुड़ी होती है। मुनि देवार्य कुमार जी ने कहा- अतीत की जितनी भी नकारात्मक स्मृतियां हैं, उनको अपने दिमाग रूपी सूटकेस से खाली कर दें और सकारात्मक स्मृतियों को स्थान दें। जैसे सफर में अत्यधिक सामान नहीं रखते वैसे ही भव-भव की यात्रा में हमें स्मृतियां बहुत कम रखनी चाहिए। मन को शांत करने के लिए नियमित श्वास प्रेक्षा का अभ्यास करें। रेखा बांठिया के मासखमण की तप अनुमोदना में तेरापंथ महिला मंडल ने गीतिका प्रस्तुत की। तेरापंथ सभा के मंत्री प्रकाश काकलिया ने साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन किया। रोशन नाहर, सीमा मरलेचा, मधु बांठिया ने अपने विचार व्यक्त किए। पारिवारिक सदस्यों ने सुमधुर गीत के माध्यम से तपस्वी बहन का अनुमोदन किया।

गुवाहाटी

मुनि प्रशांतकुमार जी के सान्निध्य में अभातेममं द्वारा निर्देशित चित्त समाधि शिविर कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल द्वारा तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया। अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा ने सभी बहनों का स्वागत करते हुए स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। मुनि प्रशांतकुमार जी ने मंगल भावना के महत्व को बताते हुए उसका संगान करवाया। मुनि कुमुदकुमार जी ने कहा कि मन को शांत रखने का प्रयास करें, तनाव से दूर रहें व सदा सकारात्मक सोच से आगे बढ़ें। कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ. ओ.पी. गुप्ता ने जीवन को

खुशहाल व स्वस्थ रखने के कई टिप्स बताएं। वक्ता कविता बेड़िया ने जीवन का उत्तराद्ध बने खुशहाल इसके बारे में जानकारी दी। उपासिका कांता बच्छावत ने 13 केंद्रों की विस्तृत जानकारी दी। शांति गुलगुलिया ने योग आसन व इंदु डागा ने प्रेक्षा ध्यान के प्रयोग करवाए। 25 बहनों ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार रखे। लगभग 225 बहनों ने शिविर में भाग लिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुनीता गुजरानी ने किया। कार्यक्रम संयोजिका सुनीता गुजरानी, कांता बच्छावत, गुलाब दुगड, बबीता लुणावत व मीनू दूधोड़िया का विशेष सहयोग रहा। प्रथम चरण का आभार ज्ञापन मंत्री ममता दुगड व द्वितीय चरण का आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष राजश्री दुगड ने किया।

कांदिवली, मुंबई

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार कांदिवली-मलाड महिला मंडल ने साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में चित्त समाधि शिविर का आयोजन किया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा चित्त समाधि हर व्यक्ति चाहता है। तनाव से दूर रहकर आत्म शांति और आनन्द की अनुभूति ही चित्त समाधि है। चित्त समाधि व्यक्ति के ही हाथ में है। जीवन में अनेक परिस्थियां आती हैं उतार-चढ़ाव आते हैं, उन स्थितियों में असंतुलित नहीं होना चाहिए। मन की प्रसन्नता हर कार्य को निर्बाध संपन्न कर देती है। जितना-जितना व्यक्ति बहिर्मुखता से अन्तर्मुखी बनता है, वह चित्त समाधिस्थ रह सकता है। साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी द्वारा महामंत्रोच्चार के पश्चात कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। साध्वी चैतन्यप्रभाजी एवं साध्वी शौर्यप्रभाजी ने 'चित्त समाधि मय हो' गीत का संगान किया। साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने जीवन में मुद्राओं के महत्व पर वक्तव्य दिया एवं वैज्ञानिक दृष्टि से मुद्राओं का महत्व समझाया। साध्वी शौर्यप्रभा जी ने वर्णमाला के माध्यम से चित्त समाधि के टिप्स बताए। तेरापंथ महिला मंडल कांदिवली अध्यक्ष विभा श्रीश्रीमाल ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए। तेरापंथ महिला मंडल मलाड अध्यक्ष कुसुम कोठारी ने आभार जताया। शिविर में संभागी शिविरार्थियों को प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षक पारस दुगड ने प्रेक्षाध्यान के विविध प्रयोग करवाए। प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका विमला

दुगड और मलाड से प्रशिक्षिका भावना कोठारी ने योग से चित्त समाधि के बारे में प्रायोगिक जानकारियां दी।

चेम्बूर, मुंबई

अ.भा.ते.म.म. के निर्देशानुसार साध्वी राकेशकुमारीजी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में चेम्बूर में ते.म.म. द्वारा चित्त समाधि शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें महिला मंडल के 9 क्षेत्र जुड़े। ते.म.म. घाटकोपर ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साध्वी राकेशकुमारी जी ने विशाल महिला समाज को सम्बोधित करते हुए कहा - खुशनुमा परिवार के लिए चित्तसमाधि सबसे बड़ा उपहार होता है। चित्त समाधि बनी रहे इसके लिए हंसते-मुस्कराते रहना एक दैवीय गुण है। परिवार में परस्पर प्रेम, वात्सल्य, स्नेह, सामंजस्य, पारगामी सोच, निस्वार्थ भावना, श्रमशीलता, सेवा, नम्रता, मृदुता, विनम्रता आदि सद्गुणों की ज्योति जलती रहने से ही चित्त समाधि बनी रहेगी। साध्वी मलयविभा जी ने 9 मंगल भावनाओं को परिभाषित करते हुए कहा- भावनाओं का प्रेक्टिकल प्रयोग करने से चित्त समाधिस्थ रहता है। अ.भा. ते. म. म. पूर्व अध्यक्ष कुमुद कच्छारा ने चित्त समाधि शब्द की व्याख्या की। चेंबूर अध्यक्ष मनीषा कोठारी ने स्वागत भाषण दिया। 9 क्षेत्र की बहनों ने मिलकर प्रेरणागीत की प्रस्तुति दी। चेम्बूर व गोवंडी की बहनों ने 'व्हाट्सएप का जमाना' विषय पर सुन्दर प्रस्तुति दी। साध्वी चेतस्वीप्रभाजी ने मैत्री अनुप्रेक्षा का प्रयोग करवाया। अ.भा.ते.म.म. से महाराष्ट्र प्रभारी निर्मला चंडालिया की गरिमामय उपस्थिति रही। कविता शाह ने PPT के माध्यम से योगासन प्रयोग कराया। ते. म. म. भाण्डुप अध्यक्ष रेणु बोथरा ने आभार ज्ञापन किया। मंच संचालन साध्वी विपुलयशाजी ने कुशलता से किया। लगभग 300 बहनों की सराहनीय उपस्थिति रही।

पीतमपुरा, दिल्ली

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में खिलौनी देवी धर्मशाला में तेरापंथ महिला मंडल उत्तर दिल्ली के तत्वावधान में चित्त समाधि शिविर 'वाह जिंदगी' का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा- हमें कुदरत से जिंदगी रूपी नायाब तोहफा मिला है। इस तोहफे का मूल्य बढ़ाना भी हमारे हाथ में है तो इसे कूड़ेदान में फेंकना भी हमारे हाथ में है। अगर हमारे

मन में प्रसन्नता है, तन में आनंद हिलोरे ले रहा है और चित्त में समाधि है तो मानना चाहिए जिंदगी रूपी तोहफे का हमने मूल्य बढ़ा दिया है। हमें अपने जीवन के उत्तरार्ध को ही खुशहाल नहीं बनाना है बल्कि पूरी जिंदगी को खुशहाल बनाना है। जो व्यक्ति छोटी-छोटी बातों में नहीं उलझता, इग्नोर करना जानता है, वह अपने चित्त में प्रसन्नता का अनुभव कर सकता है। साध्वी कर्णिकाश्रीजी ने मंगल भावना का प्रयोग करवाते हुए उनका विश्लेषण किया। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने कहा जिस प्रकार कोई इमारत पिलर पर टिकी रहती है, वैसे ही जिंदगी रूपी इमारत के पिलर समता, धैर्य, सकारात्मक सोच एवं संतोष हो जाएं तो जीवन आनंदमय बन सकता है। मुख्य वक्ता वास्तु शास्त्र विशेषज्ञ उम्मेद दुगड ने वास्तु विज्ञान के माध्यम से जिंदगी को वाह जिंदगी बनाने के नुस्खे बताए। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की उपाध्यक्ष सुमन नाहटा, चीफ ट्रस्टी पुष्पा बैंगानी, उत्तर दिल्ली महिला मंडल की अध्यक्ष मधु सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

उत्तर दिल्ली की बहनों ने मंगल संगान किया। उम्मेद दुगड एवं प्रायोजक परिवार अशोक अरुण संचेती का सम्मान किया गया। कार्यक्रम संयोजिका राज सिंधी व अमिता पटावरी का सराहनीय श्रम रहा। मंत्री इंद्रा सुराणा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने किया।

रायपुर

श्री लाल गंगा पटवा भवन में मुनि सुधाकर जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'कैसे करें चित्त समाधि का विकास?' विषय पर विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुनिश्री ने बताया कि आत्मा और परमात्मा के बीच में जो अवरोध है उन्हें समाप्त करना ही चित्त समाधि है। मुनिश्री ने कहा कि हमारे जीवन में जो असंयम और परिग्रह की भावना है वही हमारे दुःखों का प्रमुख कारण है। जीवन शैली तो संयम प्रधान होनी चाहिए अर्थात् चलने में संयम, बोलने में संयम, खाने में संयम, आवेश और आवेग में संयम। मुनिश्री ने आगे बताया कि जहा क्रिया होगी वहां प्रतिक्रिया अपेक्षित है परंतु हमें उस क्रिया की प्रतिक्रिया में उलझना नहीं है क्योंकि प्रतिक्रिया वेदना देती है फिर चाहे वह शरीर की हो या मन की।

मुनिश्री ने चित्त समाधि के विषय में तीन प्रयोग बताए - पहला प्रतिक्रिया नहीं समीक्षा होनी चाहिए। दूसरा प्रतिक्रिया नहीं प्रेरणा होनी चाहिए और तीसरा पदार्थ की प्रतिबद्धता नहीं अप्रतिबद्धता होनी चाहिए। मुनि नरेशकुमार जी ने कहा कि धर्म हमें असमाधि से समाधि की ओर ले जाने वाला होता है। मंगलाचरण तेममं व आभार मधुर बच्छावत द्वारा किया गया।

सरदारशहर

डॉ. साध्वी शुभप्रभाजी के सान्निध्य में 'चित्त समाधि शिविर' का आयोजन किया गया। साध्वी श्री ने कहा- आचारांग के अनुसार तीन अवस्थाएं होती हैं - बचपन, यौवन, बुढ़ापा। बचपन हो तो श्रीकृष्ण जैसा नटखट, यौवन श्री राम की तरह मर्यादावान, बुढ़ापा हो महादेव की तरह वैराग्यपूर्ण। अगर ऐसा जीवनयापन करेंगे तो सदा सुखी रहेंगे। यह पुरुष अनेक चित्तवाला होता है। कोई प्रसन्न, कोई खिन्न, कोई विक्षिप्त आदि आदि। घरों में वृद्ध माता-पिता असमाधि महसूस कर रहे हैं तब चिन्तनीय प्रश्न होता है कि कैसे वे शांति, समाधि सुख का अनुभव कर सकें ताकि जीवन यात्रा सफलता से व्यतीत हो। बुजुर्ग घर की रौनक एवं छांह होते हैं। वृद्ध वृक्ष से फल-फूल नहीं भी मिले पर छांह तो मिलती ही है। वैसे ही बुजुर्ग घर में हो तो आप निश्चिन्ता से जीवन यापन कर पाएंगे। हमें कुछ उसूलों को अपनाना होगा - १. उठते ही मां पिता के प्रणाम कर आशीर्वाद पाएं। २. बुजुर्गों के लिए कुछ समय निकालें यानी उनके साथ बैठ बातचीत करें। ३. सोने से पहले उनके हालचाल पूछले। हो सके तो एक टाइम यानी शाम का भोजन एक साथ बैठ करें। मां, बाप आपसे कुछ नहीं चाहते, मात्र आत्मीयतापूर्ण व्यवहार की अपेक्षा करते हैं। उनको जितना बन सके आध्यात्मिक सहयोग दे। साध्वी कान्तयशाजी ने रबुद्धापा कोई लेवै तो तनै बेच दूर गीत का संगान किया। साध्वी अनन्यप्रभाजी ने सहिष्णुता की अनुप्रेक्षा करवाई। सभाध्यक्ष राजेश बुच्चा, ज्ञानशाला आंचलिक प्रभारी कान्ता चिण्डालिया ने अपने अनुभव साझा किए। म.म. अध्यक्ष सुषमा पींचा ने स्वागत भाषण एवं म.म. की बहनों एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने सुन्दर 'ऐक्ट' की प्रस्तुति से सबको रोमांचित बना दिया। जयश्री सेठिया ने मंगलाचरण किया। सोमलता दुगड ने कुशलता से कार्यक्रम का संचालन किया।



ज्ञानशाला दिवस पर विविध आयोजन

श्रीडूंगरगढ़

ज्ञानशाला दिवस का आयोजन सेवा केंद्र मालू भवन में सेवा केंद्र व्यवस्थापिका 'शासनश्री' साध्वी कुंथुश्रीजी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ गीतांश मालू द्वारा मंगलाचरण से किया गया। ज्ञानशाला संयोजक के. एल. जैन ने उपस्थित सभी का स्वागत किया। ज्ञानशाला ज्ञानार्थी मोहित गंग और युवराज चोपड़ा ने नमस्कार महामंत्र मुद्रा की प्रस्तुति दी। साध्वी सुमंगलाश्री जी ने ज्ञानशाला दिवस पर ज्ञानवर्धक वक्तव्य दिया। ख्वाइश झाबक, कार्तिक मालू, जैनिशा बोथरा ने अपने भाषण से भावों की अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के नन्हें ज्ञानार्थियों ने 'अतिमुक्तक मुनि' और 'सपनों को सच करती संस्कारशाला' के माध्यम से बहुत ही सुंदर और मनमोहक प्रस्तुतियां दी।

साध्वी कुंथुश्री जी ने ज्ञानशाला दिवस पर उद्बोधन देते हुए कहा कि बाल्यावस्था में बच्चों में जो ज्ञान के संस्कारों का बीजारोपण होता है, बच्चे उसी प्रकार ढल जाते हैं। बच्चों में सर्वप्रथम अपनी मां से संस्कार प्राप्त होते हैं जिनकी उनके जीवन में अमिट छाप होती है। उसके बाद प्रशिक्षिकाओं के संस्कार बच्चों के जीवन में गहरा प्रभाव छोड़ते हैं। बच्चों में संस्कारों की सभ्यता वो संपदा है जो धनार्जन से भी अधिक मूल्यवान होती है। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के मंत्री प्रदीप पुगलिया ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों, अभिभावकों, संयोजक, व्यवस्थापिका, मुख्य प्रशिक्षिका और सभी प्रशिक्षिकाओं का आभार प्रकट किया। ज्ञानशाला दिवस कार्यक्रम का कुशल संचालन मंजू झाबक ने किया।

टिटिलागढ़

नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ ज्ञानशाला दिवस कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। ज्ञानशाला संयोजिका कृष्णा जैन ने सभी का स्वागत किया। सर्वप्रथम सुभद्रा जैन एवं स्नेहा जैन के निर्देशन में लोग्सस पाठ एवं नमस्कार महामंत्र उच्चारण के साथ रक्षाबंधन मनाया गया। अक्षांश जैन ने ज्ञानशाला पर अपना बहुत ही सुंदर वक्तव्य दिया। सभा अध्यक्ष गौतम जैन द्वारा ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा 2023 के प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले बच्चों को मोमेंटो देकर

सम्मानित किया गया। बच्चों ने विभिन्न विषयों पर अपनी रोचक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुख्य प्रशिक्षिका मीनू जैन ने किया।

सिकंदराबाद

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या शासन श्री साध्वी शिवमाला जी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के तत्वावधान में डीवी कॉलोनी तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला दिवस का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रशिक्षिकाओं के मंगलाचरण के साथ हुआ। 'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी ने ज्ञानशाला दिवस पर प्रसंगों के माध्यम से अपना वक्तव्य प्रदान किया। तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुशील संचेती ने धर्मपरिषद् का स्वागत करते हुए इस प्रवृत्ति को गुरु तुलसी की समाज को महान देन बताया व अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। ज्ञानशाला परामर्शक अंजू बैद ने ज्ञानशाला के रूप में तेरापंथ संघ की उदीयमान पीढ़ी को हाई-टेक बनाने के लिए, संस्कारित बनाने के लिए अभिभावकों व प्रशिक्षिकाओं की भूमिका की महत्ता बताई। नन्हें-मुन्ने ज्ञानार्थियों की संगीतमय मंचीय प्रस्तुति ने परिषद् का मन मोह लिया। तेलंगाना की क्षेत्रीय संयोजक संगीता गोलछा, वीनू नाहटा व सुरभि सिंधी ने ज्ञानशाला में संपादित कार्यों की रिपोर्ट डीडि न्यूज की साइन लैंग्वेज एक्ट के साथ अनोखे अंदाज में पेश की। महासभा सदस्य एवं प्रबुद्ध श्रावक लक्ष्मीपत बैद ने अपने विचार रखे। वार्षिकोत्सव के समकक्ष ज्ञानशाला दिवस के इस अवसर पर अखिल भारतीय स्तर पर चयनित हैदराबाद ज्ञानशाला की वरिष्ठ प्रशिक्षिका पुष्पा बरडिया, श्रेष्ठ प्रशिक्षिका रेखा संकलेचा, श्रेष्ठ ज्ञानार्थी जैनव दुगड़, विशारद 2021 परीक्षा में क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त श्वेता घोषल व मीनू संचेती, ज्ञानकुंज सूरत में अखिल भारतीय स्तर पर चित्रकारी प्रतियोगिता में चयनित हैदराबाद ज्ञानशाला के गर्वित दुगड़, शाश्वत सिंधी को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। ज्ञानशाला में उपस्थिति आदि अन्य गतिविधियों के सुव्यवस्थित संचालन के लिए डिजिटल ज्ञानशाला एप्प एक कदम को लॉन्च किया गया। इसे तैयार करने में विशेष सहयोगी रहे

रितेश सेठिया को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कला प्रोत्साहन मुहिम के तहत सूरत में हैदराबाद ज्ञानशाला से चयनित श्रावक पुण्यभद्र मूवी की स्क्रीनिंग की गई। ज्ञानशाला दिवस के अवसर पर प्रशिक्षिकाओं व ज्ञानार्थियों द्वारा 25 बोल आधारित चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन उषा सुराणा ने किया। सभा के ज्ञानशाला विभाग संयोजक वीरेन्द्र घोषल के आभार ज्ञापन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अररिया कोर्ट, बिहार

मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' एवं सहवर्ती मुनि विकास कुमार जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री के नवकार महामंत्र के साथ हुआ। तत्पश्चात ज्ञानशाला अररिया कोर्ट के ज्ञानार्थियों ने ज्ञानशाला गीत के संगान के साथ आकर्षक प्रस्तुति दी। प्रशिक्षिकाओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में बिहार अंचल से पहुँचे हुए श्रावकों का स्थानीय सभा अध्यक्ष धर्मचंद चोरडिया ने अपने वक्तव्य से अभिनन्दन किया। कार्यक्रम में बिहार अंचल के कटिहार, किशनगंज, गुलाबबाग, फारबिसगंज, निर्मली, अररिया, भद्रा मधुबनी, पूर्णिया, खुशकिबाग, विशनपुर एवं अररिया कोर्ट ज्ञानशालाओं ने प्रेरणादायक प्रस्तुति से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

मुनि आनंदकुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि पूज्य आचार्य तुलसी के अवदान ज्ञानशाला से बच्चों में संस्कार का निर्माण होता है। आज के भौतिक युग में संस्कार एवं नैतिकता का हास हो रहा है जिसे ज्ञानशाला में जाकर ही विकसित कर सकते हैं। मुनि विकासकुमार जी ने कविता पाठ किया। नेपाल बिहार तेरापंथी सभा के अध्यक्ष चैनरूप दुगड़ ने ज्ञानशाला के इतिहास पर प्रकाश डाला। बिहार आंचलिक संयोजक सचिन दुगड़, फॉरबिसगंज सभा मंत्री मनोज भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किए। किशनगंज महिला मंडल अध्यक्ष संतोष दुगड़, अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष प्रदीप चोरडिया ने अपना वक्तव्य दिया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री राजू दूधोड़िया ने दिया। कार्यक्रम का सफल संचालन प्रशिक्षिका ब्यूटी बेंगवानी ने किया।

पाली

मुनि सुमति कुमार जी आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस कार्यक्रम की शुरुआत बच्चों के मंगलाचरण के साथ हुई। मुनि देवार्य कुमार जी द्वारा बच्चों को प्रेरणात्मक कहानी द्वारा ज्ञान में वृद्धि करने के उपाय और नियमित ज्ञानशाला में आने के बारे में प्रेरणा दी गयी। मारवाड़ आंचलिक संयोजक सुरेंद्र कुमार सालेचा द्वारा बच्चों को ज्ञानशाला में संस्कारों का निर्माण के साथ-साथ अपने जीवन को आध्यात्मिक ऊंचाइयों पर ले जाने व पाली ज्ञानशाला से दीक्षार्थी तैयार करने की प्रशिक्षकों को प्रेरणा दी। मुनि सुमति कुमार जी ने अभिभावकों को प्रेरणा दी कि बच्चों को ज्यादा से ज्यादा ज्ञानशाला में भेजें। तेरापंथ भवन में बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ। प्रशिक्षिकाओं द्वारा 'ज्ञानशाला लगती हमको प्यारी मनहारी' गीत की सुंदर प्रस्तुति दी गई। समता की साधना, तेरापंथ की आचार्य परम्परा, निर्जरा के बारह भेद आदि पर गीतिका और नाटक के द्वारा प्रस्तुति दी गई। सभा अध्यक्ष भूरचंद तातेड़ द्वारा ज्ञानशाला में कार्यरत सभी प्रशिक्षिकाओं, व्यवस्थापकों, सहयोगी संस्थाओं तथा ज्ञानशाला के लिए प्रतिवर्ष आर्थिक सहयोग देने वाले अनुदान दाताओं का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में पाली श्री संघ सभा अध्यक्ष रमेश मरलेचा भी उपस्थित रहे। शिशु संस्कार बोध की परीक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले बच्चों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन पाली ज्ञानशाला संयोजक उषा मरलेचा द्वारा किया गया। अंत में ललित मंडोत द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

पेटलावद

भारतीय संस्कृति ऋषि प्रधान और कृषि प्रधान संस्कृति रही है। आहार-विहार और खानपान की शुद्धि के अभाव में चेतना विकृत बन रही है। वर्तमान युग में फास्ट फूड और नशे का बढ़ता चलन विभिन्न प्रकार की शारीरिक बीमारी और मानसिक विकृति पैदा कर रहा है। नशा अपराधी मनोवृत्ति की जड़ है। ज्ञानशाला वह नर्सरी है जहां बचपन रूपी पौधों को सिंचन प्रदान कर विकास की दिशा प्रदान की जाती है। ज्ञानशाला बच्चों के संस्कारों की निर्माणशाला है। संस्कृति

संरक्षण व संवर्धन का महत्वपूर्ण कार्य करते हुए आचार्यश्री तुलसी ने समाज को ज्ञानशाला रूपी महत्वपूर्ण अवदान प्रदान किया। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने इसे निरंतर संरक्षण प्रदान किया और वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन मार्गदर्शन में यह निरंतर गतिमान है। उक्त आशय के उद्गार साध्वी उर्मिलाकुमारी जी ने ज्ञानशाला दिवस के आयोजन पर तेरापंथ भवन में उपस्थित बच्चों और श्रावक-श्रविकाओं के समक्ष व्यक्त किया। आपने कहा कि आजकल अभिभावक बच्चों को अच्छे स्कूल-कॉलेज में भेजने की जितनी चिंता करते हैं, दूरस्थ क्षेत्रों में पढ़ने भेजते हैं। उतनी चिंता उनके संस्कारों के सुरक्षा के लिए नहीं करते हैं। आपने महामात्य चाणक्य के शब्दों को उद्धरण करते हुए कहा कि जहां बरसात नहीं होती वहां फसले खराब होती है, और जहां संस्कार नहीं दिए जाते, वहां नस्ले खराब होती है। साध्वी मृदुलयशाजी ने कहा कि मां बच्चों के जीवन की सबसे बड़ी निर्माता है। बचपन से छोटे बच्चों में सदाचार का विकास, रात्रि भोजन त्याग, जमीकंद त्याग, नियमित संत दर्शन और नियमित ज्ञानशाला जाने के धार्मिक संस्कारों का निर्माण करना चाहिए। ज्ञानशाला दिवस के अवसर पर बच्चों ने विभिन्न कंठस्थ ज्ञान गीत आदि विधाओं में सुंदर प्रस्तुति देते हुए ज्ञानशाला के महत्व को समझाया तथा बच्चों ने सुंदर संवाद की भी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन ज्ञानशाला व्यवस्थापिका पुष्पा पालरेचा ने किया। इस अवसर पर ज्ञानशाला परिवार व ज्ञानशाला के गत वर्ष के प्रायोजक हरकचंद केसरीमल भंडारी परिवार द्वारा बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया।

दक्षिण, मुंबई

मुनि कुलदीपकुमार जी के नवकार मंत्र के पश्चात कार्यक्रम का प्रारंभ प्रशिक्षिकाओं के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष सुरेश डागलिया ने दिया। ज्ञानार्थियों ने नौ तत्व एवं मोबाइल डिटॉक्स पर सुंदर कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। मुनिद्वय ने ज्ञानशाला के बच्चों एवं प्रशिक्षिकाओं की सराहना की। आभार सुमन नाहर एवं कुशल संचालन रेखा एम बरलोटा ने किया।



‘कर्मों की मार यमराज का दरबार’ नाटिका का आयोजन

विजयनगर।

साध्वी सिद्धप्रभा जी ठाणा-4 के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद्, विजयनगर के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल और कन्या मंडल विजयनगर ने ‘कर्मों की मार यमराज का दरबार’ का रोचक मंचन किया। साध्वी सिद्धप्रभा जी ने मोक्ष मार्ग में प्रशस्त होने के लिए कर्मों की निर्जरा का महत्व बताया।

साध्वी आस्थाप्रभा जी ने कर्मों पर आधारित गीत का संगान किया। तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने उपस्थित सभी का स्वागत किया। यमराज, चित्रगुप्त और सामान्य युवक की असमय मृत्यु पर घटित अतीत, वर्तमान और भविष्य में घटित होने

वाली घटनाओं को बहुत ही रोचक तरीके से किशोर मंडल और कन्या मंडल ने प्रस्तुत किया। शुभ कर्म, अशुभ कर्म, असात वेदनीय कर्म, अंतराय कर्म, मोहनीय कर्म एवं अन्य कर्म बंधन के कारण और मोक्ष मार्ग को अनुसरण करने का मार्ग रोचक तरीके से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में अभातेयुप उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने किशोर मंडल एवं कन्यामंडल को बधाई प्रेषित की। सभा अध्यक्ष मंगल कोचर, महिला मंडल अध्यक्ष मंजू गादिया, किशोर मंडल प्रभारी अमित दक ने शुभकामना प्रेषित की। किशोर मंडल संयोजक हर्ष मांडोत और टीकेएम टीम, कन्या मंडल संयोजिका ध्वनि गन्ना और टीम का विशेष श्रम रहा। कार्यक्रम का संचालन मंत्री संजय भटेवरा ने किया।

संक्षिप्त खबर

जयाचार्य निर्वाण दिवस संपन्न

पाली। मुनि सुमतिकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में जयाचार्य निर्वाण दिवस का आयोजन किया गया। मुनि सुमतिकुमार जी ने जयाचार्य निर्वाण दिवस पर गीत का संगान कर उनके इतिहास की जानकारी प्रदान करते हुए कहा- मात्र 9 वर्ष की उम्र में ही जयाचार्य ने दीक्षा ली थी। दीक्षित होने के बाद शिक्षा के लिए जयाचार्य मुनि हेमराज जी को सौंप गए। आचार्यश्री रायचंद जी ने विक्रम संवत् 1894 को जयाचार्य को युवाचार्य पद पर नियुक्त किया। तेरापंथ धर्म संघ में सबसे पहले जयाचार्य ही दिल्ली पधारे। संघ को समृद्ध और सुसंगठित रखने के लिए उन्होंने नई व्यवस्थाओं का निर्माण भी किया। उन्होंने अपने शासनकाल में आचार्य भिक्षु की परंपरा को सजाया, संवर्धित किया और संगठन को सुदृढ़ आधार दिया। मुनि देवार्थ कुमार जी ने कहा कि चतुर्थ आचार्य जीतमल जी जैन परंपरा में एक महान प्रतिभाशाली आचार्य हुए। उनका उपनाम जय रखा गया इसलिए वह जयाचार्य के नाम से ही अधिक विख्यात हैं। मुनिश्री ने बताया जयाचार्य की दीक्षा, चातुर्मास और निर्वाण स्थल जयपुर है।

निःशुल्क मधुमेह एवं रक्त चाप शिविर

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम के द्वारा निःशुल्क मधुमेह एवं रक्तचाप शिविर का समायोजन स्थानीय गायत्री नगर स्थित मरियापन पालिया पार्क में आयोजित किया गया। शिविर में कुल 81 लोग लाभान्वित हुए। तेयुप एवं किशोर मण्डल सदस्यों ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

अभिन्नव सामायिक कार्यक्रम आयोजित

लिलुआ। तेरापंथ युवक परिषद्, लिलुआ द्वारा तेरापंथ सभा भवन, लिलुआ में पर्युषण पर्व के तीसरे दिन अभिनव सामायिक का कार्यक्रम आयोजित हुआ। तेयुप अध्यक्ष अमित बांठिया ने सभी का अभिवादन किया। आयोजन के दौरान अच्छी संख्या में सामायिक हुईं। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा, महिला मंडल, युवक परिषद् और लिलुआ श्रावक समाज की सहभागिता रही।

मासखमण तप अभिनंदन

पश्चिम नवरंगपुरा। साध्वी मधुस्मिताजी की प्रेरणा से ममता धर्मपत्नी किशोर पालगोता मूल निवासी टापरा ने ३३ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। साध्वी श्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि तपस्या करना वीरों का काम है। गणधर गौतम ने भगवान महावीर से पूछा- भंते! जंबू द्वीप के चारों ओर लवण समुद्र है, द्वीप पानी से गिरा हुआ है, लेकिन इस समुद्र के पानी से यह जंबू द्वीप डूबता क्यों नहीं है? तब भगवान ने कहा हे गौतम! जब तक यहां पर तीर्थंकर, गणधर, तपस्वी लोगों का विचरण रहेगा, पानी अपनी सीमा का उल्लंघन नहीं करेगा, जंबू द्वीप सुरक्षित रहेगा। साध्वी श्री ने तप अनुमोदना में स्वरचित सुन्दर गीतिका का संगान किया। साध्वीप्रमुखाश्री का संदेश वाचन साध्वी सहजयशा जी ने किया गया। सभा अध्यक्ष सुरेश दक ने सभा की ओर से तपस्वी ममता के प्रति मंगल भावना व्यक्त की। साध्वी काव्यलताजी के सन्देश का वाचन सुरेश दक ने किया। धनराज तातेड, राजेंद्र बोथरा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। अणुव्रत विश्व भारती अध्यक्ष अविनाश नाहर एवं संचय जैन ने अणुव्रत की विश्व व्यापकता बढ़ाने की रुपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सहजयशाजी ने किया।

नेपाल के उप-राष्ट्रपति से आध्यात्मिक वार्ता

काठमाण्डू, नेपाल।

युगप्रधान महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि रमेशकुमार जी एवं मुनि रत्नकुमार जी समाज के शिष्ट मंडल के साथ नेपाल के उपराष्ट्रपति रामसहाय प्रसाद यादव से भेंट हेतु को उपराष्ट्रपति भवन पहुंचे। उपराष्ट्रपति महोदय ने मुनिद्वय का भावभरा स्वागत करते हुए कहा - आप का धर्म मानवता की सेवा कर रहा है। आज अहिंसा, सद्भावना की आज जरूरत है।

इस अवसर पर मुनि रमेश कुमार जी ने अणुव्रत आन्दोलन के बारे में बताते हुए आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी, वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमण जी के अवदानों के बारे में बताया।

मुनिश्री ने उपराष्ट्रपति को आचार्य श्री महाश्रमण के सूरत में दर्शन करने के लिए प्रेरित किया। जैन परिषद् के पूर्व अध्यक्ष फूलचंद ललवानी ने उपराष्ट्रपति से मुनिद्वय का परिचय कराते हुए जैन धर्म के बारे में जानकारी प्रदान की।

नेपाल स्तरीय जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष दिनेश नौलखा ने मुनि चर्चा, तेरापंथ धर्मसंघ, आचार्य श्री महाश्रमण जी की नेपाल यात्रा के बारे में बताया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुभागमल जम्मड, पूर्व अध्यक्ष महावीर संचेती, मंत्री प्रकाश दुगड, अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के सदस्य ज्योति कुमार बैंगानी, राजेश रामपुरिया, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष निशा जैन आदि उपस्थित थे।

पृष्ठ 1 का शेष

इन्द्र की तरह शोभायमान...

आचार्य भिक्षु के ग्रन्थों को हम देखें तो उनका श्रुतज्ञान अच्छा था। ज्ञान-श्रुत के आधार पर बुद्धि का योग चाहिए। श्रुत आधेय है, बुद्धि आधार है। जिसकी खुद की बुद्धि नहीं है, शास्त्र उसको क्या ज्ञान देगा? बुद्धि का प्रकाश होने से ज्ञान विकसित होता है, बात को ग्रहण कर सकता है। आचार्य भिक्षु की श्रुत की पृष्ठ भूमि में प्रतिभा थी, वे बुद्धिमान व्यक्तित्व के धनी थे। आचार्य में बुद्धि अच्छी हो तो निर्णय भी अच्छा कर सकता है। आचार्य के आस पास कुछ साधु-साध्वियां भी बुद्धिमान हो तो आचार्य का कार्य कुछ हल्का हो सकता है। आचार्य में शील संपन्नता और आचार निष्ठा भी हो। सन्त में भक्ति के साथ शक्ति भी हो। मौके पर कुछ कड़ा कहने वाला भी हो।

आचार्यश्री भिक्षु स्वामी के पास भी हेमराज जी, खेतसीजी, भारीमालजी व वेणीरामजी जैसे बुद्धिन्त संत थे। आचार्यत्व तो क्षयोपशम भाव है, पर सम्पदा पुण्य के योग से मिलती है। आचार्य भिक्षु के जीवन में संघर्ष भी आये पर वे आगे बढ़ते रहे। राजनगर, बगड़ी, केलवा एवं सिरियारी उनसे सम्बन्धित स्थान हैं। उनकी क्रान्ति का एक बिन्दु आचार भी रहा था। आचार्य भिक्षु हमारे जनक थे। उनका अंतिम चतुर्मास सिरियारी में सात ठाणों से हुआ। उस समय सिरियारी में

781 घर श्रद्धा के थे। अंत समय में कुछ अस्वस्थ हुए तो भाद्रवा शुक्ला द्वादशी को अनशन स्वीकार कर लिया और त्रयोदशी को महाप्रयाण हो गया।

अतीत में आचार्यों का एक दशक पूरा हो गया। आचार्य भिक्षु पर कितने गीत रचे गये हैं। सिरियारी में भी आज के दिन धम्म जागरण होती है। हमारे यहां भी धम्म जागरण होती है। आचार्य प्रवर ने महामना भिक्षु की स्मृति में रचित जीत का संगान किया। साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने बताया कि आचार्य भिक्षु के नाम में ही शक्ति है, जो हमें ऊर्जा सम्पन्न बनाती है, और हम सारे कार्यों को सम्पादित कर देती है। मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आचार्य भिक्षु एक ऐसे महान संत थे कि जिनका विराट व्यक्तित्व था। उनके जीवन के पहलुओं को देखते हैं तो उनके अनेक रूप सामने आते हैं। उन्होंने अपनी साधना और अपने व्यक्तित्व-कर्तृत्व के द्वारा ऐसा विराट रूप दिखाया कि हर कोई मन्त्र मुग्ध बन गया। मुनिवृन्द एवं साध्वी वृंद ने पृथक-पृथक रूप से सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। जैन विश्व भारती द्वारा दो पुस्तकें आचार्य भिक्षु तत्व साहित्य-3 व आचार्य भिक्षु आख्यान साहित्य-5 पूज्यवर को समर्पित की गईं। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पृष्ठ 20 का शेष

नोखा में जैन...

भोग से योग की ओर जाना, साधनामय जीवन जीना दीक्षा है। 'शासनश्री' साध्वी शशिरेखाजी ने नव दीक्षित साध्वी को संयम साधना के प्रति जागरूक हो संयम की सांगोपांग साधना करने की प्रेरणा दी। समणी कुसुमप्रज्ञा जी ने लोहे के चने मोम के दांतों से चबाने जैसा संयम पथ बताते हुए सिंह वृत्ति से साधुत्व पालने की प्रेरणा दी। कुशल संचालन करते हुए मुमुक्षु शांता जैन ने दीक्षा क्या? क्यों? कैसे? व तेरापंथ की विलक्षण दीक्षा के बारे में विस्तार से बताया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष शुभकरण चौरडिया, मंत्री मनोज घीया, उपाध्यक्ष लाभचंद छाजेड, नगर पालिका उपाध्यक्ष निर्मल भूरा ने यह पावन अवसर प्रदान करने पर आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति कृतज्ञता के भाव व्यक्त किए। इस अवसर पर महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, अमृतवाणी संयोजक रूपचंद दुगड, विकास परिषद् के सदस्य पदमचंद पटावरी, दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया, कमलचंद ललवानी, आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। भागवत आचार्य प्रदीप महाराज, धर्मेश महाराज, नोखा विधायक सुशीला डूडी, पूर्व संसदीय सचिव कन्हैयालाल झंवर, आसकरण भट्ट आदि अनेक गणमान्य जन एवं विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि सहित अनेकों लोग जैन भागवती दीक्षा के साक्षी बने।

वित्त के साथ वृत्त की भी करें सुरक्षा : आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की त्रि-दिवसीय नेशनल कांफ्रेंस का पूज्य सन्निधि में हुआ शुभारंभ

सूत्र।

14 सितम्बर, 2024

अध्यात्म के श्लाकापुरुष आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आयारो आगम की अमृत वर्षा कराते हुए फरमाया कि जिससे होता है, उससे नहीं भी होता है। आदमी पदार्थों के प्रति आसक्त बनता है, इसलिए कि मुझे इसके भोग से सुख मिलेगा। इसलिए पदार्थों को संग्रहित करता है। जिन पदार्थों के भोग से मनुष्य सुख पाना चाहता है वह सुख न भी मिले। कर्मों का योग होता है जिससे भोग नहीं किया जा सकता। इस प्रकार जरूरी नहीं कि अमुक पदार्थ हमारे काम आयेगा।

अनेक कारण हैं जिनसे सुख मिल सकता है, नहीं भी मिले। पैसा हमेशा रहेगा, शायद न भी रहे। मोह को जान कर भी अनासक्ति का भाव नहीं लाया जा सकता है। अनेक स्थितियां संसार में होती हैं कि ये पदार्थ दुःख के कारण बन सकते हैं, मानसिक अशान्ति हो सकती है।

अध्यात्म का संदेश है कि ज्यादा संग्रह मत करो। अनैतिक तरीकों से अर्थार्जन मत करो। इससे पाप का बन्ध होता है। वह अर्थ संताप का कारण बन



सकता है। अशुद्ध पैसे से बचने का प्रयास करें। नैतिकता-अनैतिकता के विषय में जागरूकता रहे।

चरित्र की सुरक्षा करें, चरित्रहीन होने से कितने जन्मों तक कठिनाई भोगनी पड़ सकती है। वित्त के साथ वृत्त की भी सुरक्षा करनी चाहिये। जीविका कमाने में भी धर्म रखने का प्रयास करें। गृहस्थ

का सम्बन्ध घर से जुड़ा है, पर धनार्जन में भी नैतिकता रहे। ईमानदारी रखना एक निधि है। पैसा होने पर भी संयम-सादगी रखना बड़ी बात है। ज्ञान, शिक्षा पर हम ध्यान दें, सद्गुण रूपी आभुषण जीवन में रहें। चेहरा सुंदर है, उसका महत्व कम है, पर स्वस्थता शरीर में होना महत्वपूर्ण है। शरीर की सक्षमता

और स्वस्थता का महत्व है। बुद्धिमता, जानकारी का महत्व है।

पदार्थों की जितनी आवश्यकता है, उतना उपयोग तो आवश्यक है, पर पदार्थों के प्रति असक्ति ना हो। स्वाद विजय पर ध्यान दें। अन्यथा सुख देने वाली, सुख की अपेक्षा दुःख देने वाली हो सकती है। भगवान महावीर ने कितनी

साधना की थी। कुछ उनका अनुसरण करने का प्रयास करें। हम आसक्ति का छोड़ अनासक्ति की साधना करें।

पूज्य प्रवर की सन्निधि में होने जा रही तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की त्रि-दिवसीय नेशनल कांफ्रेंस के संदर्भ में टीपीएफ के आध्यत्मिक पर्यवेक्षक मुनि रजनीशकुमार जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने अपने दो वर्षीय कार्यकाल में किए गए कार्यों की जानकारी दी। टीपीएफ के चीफ ट्रस्टी चन्देश बाफणा ने आर्थिक प्रगति की जानकारी दी। परम पूज्यवर ने आशीर्वचन फरमाया कि एकता अपने आप में एक शक्ति होती है। टीपीएफ एक ऐसा संगठन है, जो बहुत महत्वपूर्ण है। टीपीएफ का बीज आज वट वृक्ष की तरह सामने आ रहा है।

समाज के योग्य धारकों की इस संगठन में पहचान हुई है। टीपीएफ विकासशील संगठन लग रहा है जो तेरापंथ धर्म संघ से जुड़ा हुआ है। धार्मिक प्रवृत्तियां भी चल रही हैं। समाज के बिखरे हुए मोती माला के रूप में आए हैं, और भी बिखरे मोती हो सकते हैं, उन्हें भी जोड़ने का प्रयास हो।

कर्म निर्जरा कर मोक्ष की ओर आगे बढ़ना है जीवन का लक्ष्य : आचार्यश्री महाश्रमण

सूत्र।

13 सितम्बर, 2024

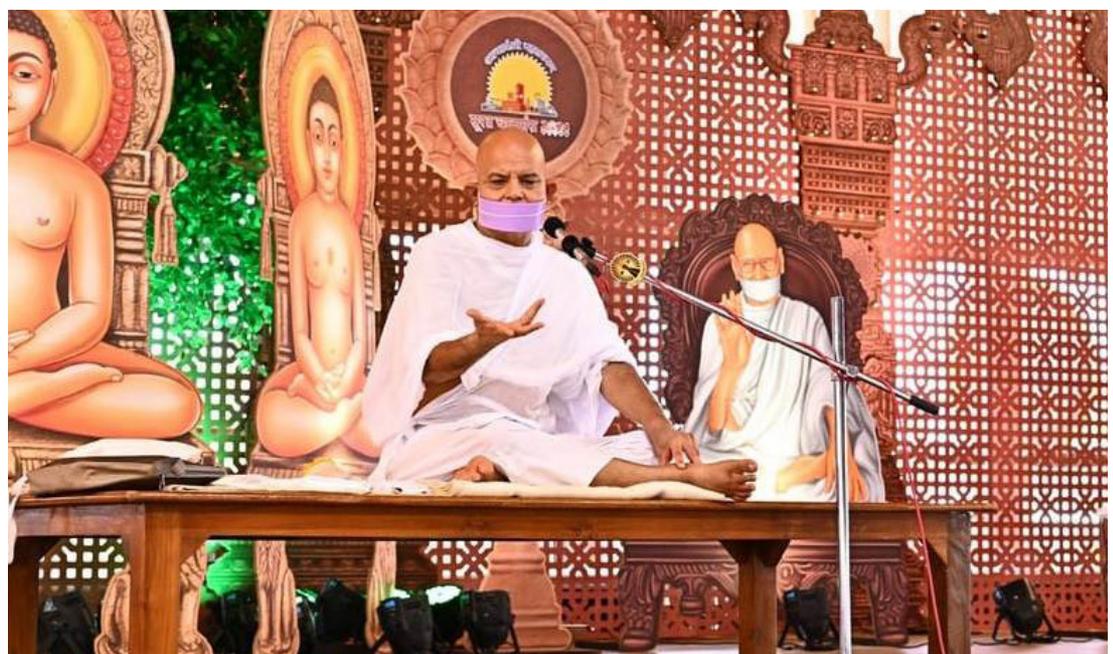
तेरापंथ धर्म संघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी से मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि आयारो आगम में कहा गया है- आदमी के भीतर आशा, लोभ, तृष्णा की वृत्ति होती है। इन्द्रिय सुखों में वर्तन करने की मनोवृत्ति भी हो सकती है। हमारे भीतर अनादि काल से मोहनीय कर्म हैं। मोहनीय कर्म के भीतर राग-द्वेष व लोभ वृत्ति की चेतना रहती है। जो वीतराग बन जाते हैं, उनमें मोहनीय कर्म की वह लोभ की वृत्ति नहीं रहती।

आदमी संतोष की ओर बढ़ता है, तो लोभ और लालच कम भी हो सकता है। लोभ होता है तो आदमी पदार्थ पाने की इच्छा करता है। इच्छित वस्तु नहीं मिलती है, कामना की पूर्ति नहीं होती है तो फिर आदमी में गुस्सा-दुःख भी हो सकता है। दुःख का एक बड़ा कारण कामना-लालसा

है। हमारी दुनिया में दुःख है, दुख के कारण भी हैं, तो दुःख मुक्ति भी है, दुःख मुक्ति के कारण भी हैं। आश्रव-आसक्ति ये दुःख का कारण है। दुःख मुक्ति या मोक्ष के कारण है- संवर और निर्जरा। कर्म मुक्ति से सर्व दुःख मुक्ति हो सकती है। भोगों की अभिलाषा आशा है और इन्द्रिय सुखों की वृत्ति छंद है। आशा और छन्द को जो छोड़ देता है, वह परम सुख को प्राप्त होता है। लालसा, कामना को छोड़ने के लिए आदमी संतोष का अभ्यास, अनुप्रेक्षा करे। अलोभ की चेतना को पुष्ट करने के लिए अलोभ की अनुप्रेक्षा करे।

जो मूढ़ लोग होते हैं वे असंतोष में परायण होते हैं, पंडित-साधक लोग सन्तोष को धारण करते हैं। भौतिक दुनिया में पैसा ईश्वर की तरह होता है। आवश्यकता पूर्ति पैसे से हो जाती है। पैसा तो जीवन चलाने का साधन है पर जीवन का लक्ष्य तो कर्म निर्जरा कर मोक्ष की ओर आगे बढ़ना है।

हम अच्छे लक्ष्य के साथ जीवन चलाएं। अच्छा लक्ष्य है- कर्मों का क्षय



करना। धर्म की साधना मुख्यतया मोक्ष प्राप्ति के लिये ही है। वृद्ध होने पर भी आदमी लालसा-आशा को नहीं छोड़ता पर वृद्ध आदमी को संतोष धारण करना चाहिये। इन्द्रिय सुख को छोड़ने का प्रयास

होना चाहिये। अपने लिए जो आवश्यक है उनको रखें, बाकि का संग्रह नहीं करें।

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने इस वर्ष के पुरस्कारों की घोषणा की। TPF की 13वीं राष्ट्रीय वार्षिक सभा के

संदर्भ में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नवीन चोरडिया ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए TPF गौरव पुरस्कार विजय कोठारी, अहमदाबाद को देने की घोषणा की। विजय कोठारी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

भोग पर नियंत्रण और योग का चिंतन करें : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

11 सितम्बर, 2024

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए, फरमाया कि आयारो आगम में कहा गया है- आदमी जान लेता है कि जीवन में रोग उत्पन्न हो जाते हैं। काम-भोगों से रोगों की उत्पत्ति हो सकती है। आसक्ति से भी रोग हो सकता है। इन बातों का बोध हो जाने पर कुछ व्यक्ति धर्म के मार्ग पर आगे बढ़ जाते हैं, तो कई भोगों में लिप्त रहते हैं, धर्म के मार्ग पर कदम नहीं रख पाते।

एक है योग, एक है भोग और एक है रोग। योग धर्म की साधना है। इससे आत्मा के रोग व शारीरिक रोग दूर हो जाते हैं। हमारा योग में कितना समय लगता है और पदार्थों के भोग में कितना समय लगता है? जीवन को चलाने में पदार्थों की अपेक्षा भी होती है। आदमी को यह विचार करना चाहिए कि आदमी को अपने जीवन में किसी पदार्थ की आवश्यकता कितनी है और अपेक्षा और लालसा कितनी है। भूख लगे तो भोजन, प्यास लगे तो पानी, शरीर के लिए कपड़ा, आश्रय के लिए मकान की आवश्यकता होती है। पढ़ने-लिखने के लिए संबंधित पदार्थ चाहिए। सोने के लिए कुर्सी और पलंग की आवश्यकता होती है। ये सारी चीजें तो आवश्यक हैं, किन्तु इन संदर्भों में इच्छा कितनी है, इसे ध्यान में रखने का प्रयास करना चाहिए।



आदमी साधारण कपड़े से भी शरीर को ढंक सकता है, कोई महंगे कपड़े पहनने की कोई आवश्यकता नहीं होती। जीवन के लिए किसी चीज की आवश्यकता तो हो सकती है और उसे पूरा करने का प्रयास भी किया जा सकता है, किन्तु लालसा के वशीभूत होकर उसीमें रम जाना अच्छा नहीं होता।

मनुष्य जीवन सीमित है। इसमें यह चिंतन रहे कि मेरा जीवन बीत रहा है, मैं धर्म-मोक्ष की साधना के लिए कुछ कर रहा हूँ या नहीं? उम्र बीतने पर वृद्धावस्था, रोग उत्पत्ति हो सकती है। धर्म की साधना काल प्रतिबद्ध और कालातीत

बद्ध साधना होती है। युवावस्था में किया जाने वाला धर्म काल प्रतिबद्ध होता है। कालातीत धर्म वृद्धावस्था में किया जाने वाला धर्म होता है।

जीवन में ईमानदारी, क्षमा, अक्रोध का भाव रहे। कुछ लोग भोगों के विषय में सोचते रहते हैं। दृष्टिकोण यह रहे कि मैं आत्मा के बारे में भी सोचूँ। आत्मा शाश्वत है, आगे जाने वाली है। धन-संपत्ति, शरीर अशाश्वत है, आत्मा निर्मल बने, ऐसा चिन्तन रहे। आवश्यकता व लालच का विवेक करें। पदार्थों के प्रति आसक्ति न रहे, आवश्यकता अलग है। गृहस्थों के जीवन में धर्म रहे, बारह व्रतों को अपनाएं,

छोटे-छोटे त्याग करें, भोगों पर नियंत्रण करें और योगों के बारे में चिंतन करें।

आगमों की वाणी कल्याणी वाणी है, प्रेक्षाध्यान आदि भी हैं। ये हमारे आत्मा के हितावह हो सकते हैं। साहित्य के स्वाध्याय से अच्छे प्रेरणा मिल सकती है। पहले आदमी भोग भोगता है फिर भोग आदमी को भोगने लग जाता है। भोगों को क्या भोगा, हम भोग लिए गये। आदमी बुढ़ा हो गया पर तृष्णा नहीं गई। हम योगी बनें, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र योग की साधना है। मोक्ष से जोड़ने वाली धर्म की प्रवृत्ति अपने आप में योग है।

मंगल प्रवचन के उपरान्त होसपेट के अशोक जैन ने अपनी अभिव्यक्ति दी। सायर बोथरा ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए पूज्यप्रवर के समक्ष 'चैतन्य केन्द्र एवं अन्य योग चक्रों का तुलनात्मक अध्ययन' शोध ग्रन्थ को आचार्यश्री के समक्ष लोकार्पित किया।

आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में जैन विश्व भारती द्वारा संघ सेवा पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया। नेमचंद जेसराज सेखानी चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पानादेवी सेखानी संघ सेवा पुरस्कार-वर्ष 2024 बुधमल दुगड़ (कोलकाता) को प्रदान किया गया।

इस संदर्भ में सरिता सेखानी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। सम्मान पत्र का वाचन जैन विश्व भारती के मंत्री सलिल लोढ़ा ने किया। मधु दुगड़, सुरेन्द्र दुगड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्ति की। विकास परिषद के सदस्य बनेचंद मालू ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने इस संदर्भ में आशीर्वचन फरमाया कि मनुष्य जन्म दुर्लभ है। इसमें संयम-त्याग की साधना करना महत्वपूर्ण है।

बुधमलजी दुगड़ को यह पुरस्कार दिया गया है। वृद्ध अवस्था में परिणाम धारा अच्छी बनी रहे। जेसराजजी सेखानी भी 101वें वर्ष में हैं, दोनों अपनी साधना आगे बढ़ाते रहें।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पदार्थों के आसेवन में न हो आसक्ति का भाव : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

10 सितम्बर, 2024

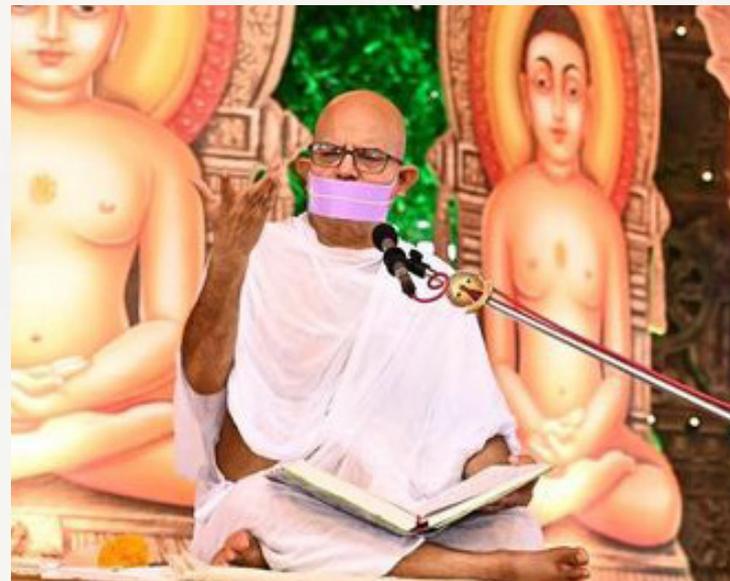
आर्हत वांगमय के व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम वाणी की देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि सुख और दुःख प्रत्येक होता है, अपना-अपना होता है। कर्मवाद का सिद्धांत सुख-दुःख की प्राप्ति के संदर्भ में ध्यान में लाने के लिए प्रतीत हो रहा है। दुनिया में प्राणी दुःख भोगता है, तो सुख भी भोगता है। दुःख-सुख के लिए हमारी आत्मा ही जिम्मेदार है।

जैन दर्शन में आठ कर्म बताये गये हैं, उन कर्मों के आलोक में हम जीवन की व्याख्या कर सकते हैं। किसी में ज्ञान की मन्दता है तो ज्ञानावरणीय कर्म का उदय होता है। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से ज्ञान का विकास होता है। असात वेदनीय कर्म के उदय से शरीर में वेदना

हो सकती है। शरीर सक्षम और मनोज्ञ है तो मानना चाहिये कि सात वेदनीय कर्म का उदय है।

मोहनीय कर्म के उदय से चारों कषाय बढ़ सकते हैं। कई व्यक्ति शांत स्वभाव के होते हैं, संतोष और सरलता का जीवन जीते हैं तो लगता है उनके मोहनीय कर्म का अभाव या क्षयोपशम है। आयुष्य कर्म की शुभता-अशुभता से आयुष्य ज्यादा या कम हो सकता है। शुभ नाम कर्म के उदय से प्रतिष्ठता मिल सकती है। शरीर सुन्दर हो सकता है। अशुभ नाम कर्म के उदय से इससे विपरीत स्थिति हो सकती है। शुभ गौत्र कर्म के उदय से उच्च कुल व अशुभ गौत्र कर्म के उदय से नीच कुल प्राप्त हो सकता है। अन्तराय कर्म के उदय से बाधाएं और क्षयोपशम से अनुकूलताएं प्राप्त हो सकती हैं।

पूज्यप्रवर ने आगे फरमाया - आयारो



में कहा गया है कि सुख और दुःख को जानकर समझा जाता है, कि सबका कर्म अपना-अपना होता है। आत्मा ही कर्मों की कर्ता और भोक्ता है। कर्म का फल अपना-अपना होता है। कई जन्मों पहले

बन्धे कर्म भी फल देने वाले हो सकते हैं। बड़े-बड़े महापुरुषों को भी अपने किये कर्म भोगने होते हैं। भगवान महावीर के जीवन में तो कितने उपसर्ग आये, तीर्थकर बनने के बाद भी प्रतिकूलता की

स्थिति आ गयी। कर्म बड़ा बलवान होता है। कर्म से बड़ा निष्पक्ष कोई नहीं होता। कर्म पक्षपात नहीं करता। पूर्व कृत कर्म से निरपराध को भी सजा मिल सकती है। धन, दौलत, पदार्थों के सेवन में आसक्ति न हो, अनासक्ति हो तो हम कर्मों के बन्ध से बच सकते हैं। कर्म छोटे-बड़े किसी को नहीं देखता। अनुकूलता और प्रतिकूलता में समता भाव रहे। आसक्ति का आसेवन नहीं करना चाहिए।

सामायिक साधना ग्रुप सूरत ने पूज्यवर के समक्ष डायरेक्टरी लोकार्पित की। अनेकों तपस्वियों ने आचार्य प्रवर से तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। किशोर मंडल व कन्यामंडल ने चौबीसी के गीतों की प्रस्तुति दी। कमल रामपुरिया, सरोज बांठिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

नोखा में जैन भागवती दीक्षा का भव्य आयोजन

■ मुमुक्षु मानवी बनी साध्वी मनोज्ञप्रभा ■ संयम जीवन में रमण करते हुए पर कल्याण की पायी प्रेरणा

नोखा।

तेरापंथ धर्म संघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी की आज्ञा से 'शासन गौरव' साध्वी राजीमतीजी के सान्निध्य में नोखा में जैन भागवती दीक्षा का भव्य आयोजन किया गया। साध्वी राजीमतीजी ने नमस्कार महामंत्र के मंगल स्वरो के साथ दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तेरापंथ महिला मंडल नोखा ने समवेत स्वरो में मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। साध्वी वृन्द द्वारा सामूहिक गीतिका के माध्यम से आचार्य भिक्षु चरमोत्सव व मुमुक्षु मानवी की दीक्षा पर भावना व्यक्त की गई। 'शासनश्री' साध्वी समताश्री जी ने युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के एवं साध्वी कुसुमप्रभाजी ने साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन किया।

'शासन गौरव' साध्वी राजीमतीजी ने खड़े होकर परम पूज्य युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी को वंदन करते हुए कहा कि गुरुदेव ने जो दायित्व दिया है, उसे उनके आशीर्वाद के साथ शुरू कर रही हूँ। एक घटना का उल्लेख करते हुए



साध्वीश्री ने यह भावना प्रकट की कि जब तक मैं मंजिल तक नहीं पहुंचूँ, मानवी मंजिल तक नहीं पहुंचे, गुरुदेव ! आप हमारा हाथ पकड़े रखें। साध्वीश्री ने पुनः आंचलिया परिवार की मौखिक आज्ञा ली व बहन मानवी से उसकी दीक्षा तैयारी के बारे में पूछा। तत्पश्चात णमोत्थुण पाठ कर आचार्य श्री भिक्षु, आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं आचार्य श्री महाश्रमण जी को वंदन कर सामायिक पाठ के साथ दीक्षा संस्कार प्रारंभ किया। आर्ष वाणी का उच्चारण करते हुए सभी सावद्य कार्यों का त्याग कराया। सामायिक चारित्र ग्रहण करने के बाद अतीत की आलोचना करवाई गयी।

तत्पश्चात साध्वीश्री ने केश लोच संस्कार की रस्म पूरी कर रजोहरण प्रदान करते हुए कहा - 'किसी दिन आचार्य श्री ने यह रजोहरण मुझे प्रदान किया था आज उनके नाम का रजोहरण मैं तुम्हें प्रदान कर रही हूँ। तुम ज्ञान, दर्शन, चरित्र के साथ क्षमा, मुक्ति व अनासक्ति का अभ्यास करो।' नामकरण संस्कार के अंतर्गत पूज्य प्रवर के इंगित अनुसार साध्वीश्री ने नवदीक्षित साध्वी का नाम साध्वी मनोज्ञप्रभा घोषित किया। नव दीक्षित साध्वी को प्रेरणा देते हुए साध्वीश्री ने कहा कि मनोज्ञ का अर्थ है मन को जानने वाला। तुम्हें मन को जानने की यात्रा शुरू करनी है, वीतरागता



की भूमिका तक पहुंचना है। नवदीक्षित साध्वीजी को आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार साध्वी राजीमती जी के सिंघाड़े में उनकी सहवर्तिनी, सहयोगी साध्वी के रूप में नियोजित किया गया।

इससे पूर्व मुमुक्षु भाविका ने दीक्षाश्री बहन मानवी का परिचय प्रस्तुत किया। पारमार्थिक शिक्षण संस्था से मोतीलाल जीरावाला ने आज्ञा पत्र का वाचन किया तथा मुमुक्षु मानवी के माता-पिता सुनीता अरुण कुमार आंचलिया ने साध्वी को श्री आज्ञा पत्र निवेदित किया। दीक्षा के लिए उत्सुक मुमुक्षु मानवी ने अपने विचारों की भाव भरी प्रस्तुति दी।

साध्वीश्री ने धर्म परिषद को प्रेरणा

देते हुए कहा कि स्वयं को नहीं जानना सबसे बड़ा पाप है। आत्मा सबसे निकट भी है और सबसे दूर भी है। उसे पाने का एक ही उपाय है दीक्षा। दीक्षा लेने का अर्थ है- स्वयं के निकट रहना, आत्मा के निकट रहना। जीवन की दो धाराएं हैं- भोग एवं त्याग। भोग अति परिचित पथ है, त्याग नया पथ है। त्याग सुख छुड़ाने के लिए नहीं अपितु दुःख से बचाने के लिए है। साध्वी श्री ने आगे कहा कि शरीर और आत्मा सभी के पास है। इन दोनों का हित संयम के द्वारा किया जा सकता है। सांसारिक कार्यों से मुक्त होकर संयम की ओर प्रस्थान करना दीक्षा है।

(शेष पेज 17 पर)

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

